नवीन पुस्तकें ।

वर्ण और जातिभेद ।

यह अभी नई छपी है । उपर्युक्त विषय की बहुत ही उत्तम और मनन करने योग्य पुस्तक है । कीमत ≠) आना ।

श्रीपालचरित्र की समालोचना ।

यह पुस्तक अभी हाल ही में छपकर तैयार हुई है । लेखक—श्रीयुत वाडीलाल मोतीलाल शाह द्वारा सम्पादित 'जैन हितेच्छु' के गुजराती लेख से अनुवादित कर छपाई है इस पुस्तक को एकवार अवश्य पढ़ना चाहिये । की० ≠) आना ।

आदिपुराण समीक्षा प्रथम भाग ।

लेखक—बा० सूरजभानु वकील । इसमें आदिपुराण की संक्षिप्त कथा लिखकर फिर उसकी समालोचना की गई है जो अवश्य द्रष्टव्य है । इसमें जिनसेनाचार्य्य की लेख शैली का नमूना है । कीमत ।) आना ।

आदिपुराण समीक्षा द्वितीय भाग ।

इसमें गुणभद्राचार्य्य की लेख शैली का नमूना है । की० ।≠) आना ।

हरिवंशपुराण समीक्षा ।

यह पुस्तक अभी हाल ही में छपकर तैयार हुई है । लेखक-बा० सूरजभानुजी वकील, इस पुस्तक में प्रथम हरिवंशपुराण की संक्षिप्त कथा लिखकर फिर उसकी समालोचना कीगई है । सर्व धर्म प्रेमियों को एकवार अवश्य पढ़ना चाहिये । कीमत ।) आना ।

ब्राह्मणों की उत्पत्ति ।

आदिपुराण में जो ब्राह्मणों की उत्पत्ति लिखी है उसपर इस पुस्तक में विचार किया गया है तथा वर्णव्यवस्था पर विचार है । मनन करने योग्य बहुत उत्तम पुस्तक है । कीमत ≠) आना ।

ग्रन्थ समीक्षा प्रथम भाग ।

लेखक—पं० जुगलकिशोर मुख्तार । इसमे उमास्वामि श्रावकाचार, कुन्दकुन्द श्रावकाचार और जिनसेन त्रिवर्णाचार के परीक्षा लेखों का संग्रह है । की० ।≠) आ०

ग्रन्थ परीक्षा द्वितीय भाग ।

लेखक—पं० जुगलकिशोर मुख्तार । इसमें भद्रबाहु संहिता नामक ग्रन्थ की समालोचना है । की० ।) आना ।

पता:—चन्द्रसेन जैन वैद्य, चन्द्राश्रम-इटावह ।

भूमिका
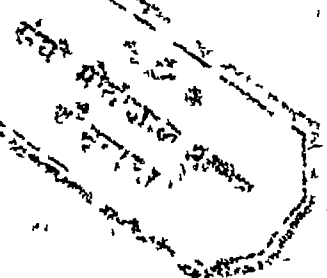
राम रावण की कथा इस भारतवर्ष में रामायण के नाम से घर घर प्रसिद्ध है और संस्कृत मे वाल्मीक और हिन्दी मे तुलसीकृत अति प्रसिद्ध है, यह कथा तीन दिगम्बर जैन ग्रन्थों में भी हमारे देखने में आई है, (१) श्रीरविषेणाचार्य कृत पद्मपुराण (२) भगवत् जिनसेनाचार्य और उनके शिष्य श्रीगुणभद्राचार्य कृत महापुराण जिसके प्रथम भाग का नाम आदिपुराण और अन्तिम भाग का नाम उत्तरपुराण है यह उत्तरपुराण भगवत् जिनसेन के देहान्त होजाने के कारण श्रीगुणभद्राचार्य्य ने ही लिखा है और इस ही मे राम रावण की कथा है (३) श्रीसोमसेन मुनि कृत रामपुराण, भगवत् जिनसेन का अस्तित्त्व विक्रम की नवीं शताब्दी में कहा जाता है और श्रीरविषेणाचार्य्य का होना भी कुछ इस ही समय के लगभग समझा जाता है और रामपुराण के कर्त्ता श्रीसोमसेन मुनि की बाबत हमको कुछ मालूम नहीं हुआ है कि वह कब हुए हैं, परन्तु स्वयम् रामपुराणमें ही यह लिखा हुआ है कि यह ग्रन्थ वास्तव में पद्मपुराण का ही सार है और कोई कोई कथन महापुराण से भी ले लिया गया है इस प्रकार श्रीसोमसेन इन दोनों आचार्यों के बाद ही हुए हैं, हिन्दूग्रन्थों में संस्कृत वाल्मीक रामायण बहुत ही अधिक पुराने समय की और तुलसीकृत रामायण बहुत नवीन मानी जाती है।

राम रावण का कथन पद्मपुराण में बहुत ही विस्तार के साथ दिया गया है और कुछ कथन भेद के साथ पद्मपुराण और वाल्मीक रामायण के प्रायः सब ही विषय मिलते हैं, परन्तु महापुराण में बहुत से विषय नहीं है और जो कुछ कथन महापुराण में है उसमें और पद्मपुराण के कथन में धरती आकाश का अन्तर है, परन्तु इन दोनो ग्रन्थों मे इतना भारी अन्तर होने पर भी इनमें से किसी एक का कथन बहुत कुछ अंशोंमें वाल्मीक रामायणसे जरूर मिल जाता है, जिसका कुछ नमूना नीचे दिखाया जाता है

(१) महापुराण के कथनानुसार दशरथ की रानी सुबाला से राम कैकई से लक्ष्मण और अन्य दो रानियों से भरत और शत्रुघ्न हुए और रामायण के अनुसार कौशिल्या से राम, सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न और केकई से भरत हुआ पद्मपुराण और रामायण के अनुसार राम लक्ष्मण का जन्म अयोध्या में ही हुआ जब कि

दशरथ अयोध्या में ही राज्य करता था परन्तु महापुराण के अनुसार उनका जन्म बनारस में हुआ जब कि दशरथ बनारस में ही राज्य करता था ।

(२) पद्मपुराण के अनुसार सीता का जन्म जनक की रानी के गर्भ से हुआ और साथ ही भामण्डल भी पैदा हुआ जिसको एक देव उठा ले गया और तब वह राजा चन्द्रगति के यहां पला, महापुराण के अनुसार सीता का जन्म रावण की रानी मन्दोदरी के गर्भ से हुआ जिसको पैदा होते ही मिथिलानगर के खेत में गाड़ दी गई फिर वह राजा जनक को मिली और उसने पाली, महापुराण में भामण्डल का कोई भी कथन किसी प्रकार का नहीं है अर्थात् महापुराण के अनुसार वह कोई व्यक्ति ही नहीं था, रामपुराण जो पद्मपुराण का ही सार है उसका कथन है कि सीता तो रावण की स्त्री मन्दोदरी के गर्भ से पैदा हुई और मिथिलानगरी के खेत में गाड़ी गई, उस ही दिन जनक की रानी से भामण्डल पैदा हुआ, भामण्डल को तो देव उठा ले गया और जनकको सीता मिल गई, रामायणका कथन है कि सीता किसी के भी गर्भ से पैदा नही हुई बल्कि मिथिलानगरी के खेतमें से ही निकली और जनक ने पाली ।

(३) पद्मपुराण के कथनानुसार तो म्लेक्ष लोग जनक की नगरी उजाडते थे राम ने उसकी सहायता करके म्लेक्षों को भगाया, जिससे उसने अपनी सीता उसको देनी करी, परन्तु नारद ने भामण्डल को सीता पर आशक्त करा दिया, जनक ने उसके साथ सीता को व्याह देने से इनकार किया और कहा कि मैं राम को देनी कर चुका हूं इस पर चन्द्रगतिने जनकको दो महाभयङ्कर धनुष दिये कि अगर राम इनको चढ़ा दे तो सीता उसको व्याह दो नही तो हम सीता को जबरदस्ती ले आवेंगे, राम ने धनुष चढ़ाया और सीता उससे व्याही गई, महापुराण में लिखा है कि जनक ने हिंसामय यज्ञ किया, रावणकी तरफ़से उपद्रवका भय हुआ राम यज्ञकी रक्षाके वास्ते बुलाया गया और यज्ञ की समाप्ति पर सीता उसको व्याही गई, रामायण का कथन है कि विश्वामित्र ऋषि अपने यज्ञ की रक्षा के वास्ते राम को ले गया क्योंकि उसको रावण की तरफ़ से यज्ञ में उपद्रव होने का भय था, यज्ञ समाप्त होने पर वह राम को जनक के यज्ञ में ले गया वहां जनक के पास उसके पूर्वजों के समय से दो भयङ्कर धनुष रखे थे जनक की प्रतिज्ञा थी कि जो कोई यह धनुष चढ़ावे उस ही को सीता व्याही जावे, राम ने वह धनुष चढ़ाकर सीता व्याही ।

(४) महापुराण का कथन है कि दशरथ ने राम को बनारस का राजा और लक्ष्मण को युवराज बनाकर भेजा और वह वहां जाकर राज्य करने लगे अर्थात् न तो भरतको कभी अयोध्या का राज्य दिया गया और न राम वन २ फिरे बल्कि दश-

रथ ही बराबर अयोध्याका राज्य करते रहे और राम लक्ष्मण बनारस में राज्य करने लगे, पद्मपुराण का कथन है कि दशरथ को वैराग्य आया, राम को राज्य देना चाहा भरत को भी वैराग्य आया, कैकई ने उसका वैराग्य हटाने के वास्ते दशरथ से अपने दो वर मागे और कहा कि राज्य भरत को दो, राम ने भी यह बात पसन्द की और भरत को समझा बुझाकर राज्य दिया और स्वय लक्ष्मण और सीता को साथ लेकर दक्षिण देश में रहने के वास्ते चल दिया, फिर कैकई के कहने से भरत उसको वापस लाने के वास्ते वन में गया परन्तु वह वापिस नही आये, रामायण का कथन है कि दशरथ ने राम को राज्य देना चाहा, कैकई ने अपने दो वर मागे कि भरत को राज्य मिले और राम को १४ वर्ष का बनोवास इस पर राम बनोवास गये, लक्ष्मण और सीता साथ गई, भरतने राज्य लेना स्वीकार नही किया बल्कि राम को वापिस लाने के वास्ते वन में गया परन्तु वह नही आये तब भरत राम की खडाऊ रखकर राम की तरफ से राज्य करने लगा।

(५) पद्मपुराण के अनुसार जब राम दण्डक वन में पहुंचे तो वहा खरदूषण का बेटा खड्ग सिद्ध कर रहा था, वह खड्ग सिद्ध होकर बांस के बीड़े पर आरहा, लक्ष्मण ने उस खड्गको उठा लिया और परीक्षाके वास्ते उससे बांसका बीडा काटा जिससे वह खड्ग सिद्ध करने वाला भी कट गया, रावणकी बहिन चन्द्रनखा उसकी माता थी जो खाना लेकर आया करती थी, अपने पुत्र को मरा देखकर वह बड़े क्रोध में घूमती फिरने लगी परन्तु राम लक्ष्मण को देखकर उन पर आशक्त होगई, इन्होंने उसको नामजूर करी तब उसने अपने पति के पास जाकर पुत्र को मार डालने और उसके साथ अत्याचार करने की शिकायत की वह १४ हजार राजाओं के साथ युद्ध को आया, लक्ष्मण ने उससे युद्ध किया, राम डेरे पर रहा, रावण भी खरदूषण की सहायता को आया, परन्तु सीता को देखकर उस पर आशक्त होगया और छल से लक्ष्मण की तरफ़ से नाद बजाया जिससे राम तो लक्ष्मण की सहायता को गया और जटायु नाम के गृद्ध पक्षी को सीता की रक्षा करने को कह गया, रावण सीता को हर लेगया।

-महापुराण का कथन है कि नारद ने रावण से जाकर कहा कि जनक ने गुप्त-रीते से यज्ञ करके अपनी सीता राम को व्याह दी है अब राम बनारस में सीता के साथ मौज कर रहा है, परन्तु वह सीता तुम्हारे ही लायक़ है, इस पर रावण को काम उपजा और उसने सूर्पनखा नाम की एक चतुर स्त्री को सीता के पास भेजा कि वह उसको फुसला कर यहा ले आवे, सूर्पनखा एक बूढी स्त्री का रूप बनाकर

सीताके पास गई परन्तु सीता पर उसकी बातका कुछ भी असर न हुआ, तब रावण मारीच को साथ लेकर बनारस गया, उस समय राम लक्ष्मण अपनी अपनी स्त्रियों सहित बनारस के जङ्गल में क्रीडा करने को आये हुए थे वहां मारीच ने रत्नजड़ित सोने के हरिण का रूप बनाया, सीता के कहने से राम उसके पकड़ने को गया, इधर रावण ने राम का रूप बनाकर सीता से कहा कि हरिण तो पकड़ कर शहर में भेज दिया है अब तुम भी चलो, वह साथ हो ली, परन्तु वह उसको लङ्का ले आया।

रामायण का कथन है कि रावण की बहिन सूर्पनखा दण्डक बन में रहती थी जब राम लक्ष्मण वन वन फिरते हुए वहां पहुंचे तो सुर्पनखा उन पर आशक्त होगई, और उनके शिर होने लगी लक्ष्मण ने उसके नाक कान काट डाले, उसने खर और दूषण से शिकायत की वह १४ हजार योद्धाओं को लेकर लडने को आये, राम मुक़ाबिले को गया, लक्ष्मण को सीता की रक्षा के वास्ते छोडा, राम ने खर, दूषण और उनके १४ हज़ार योद्धा मारडाले, सूर्पनखा ने रावण से शिकायत की, रावण के मन्त्री ने सलाह दी कि राम युद्ध में नही जीता जा सकेगा इस वास्ते उसकी सीता हर लो जिससे वह तड़प कर मर जावेगा, रावण मारीच को साथ लेकर वहां गया मारीच रत्नजड़ित सोने का हरिण बना, राम सीता के कहने से उसके पकड़ने को गया, मारीच ने रामकी बोली बनाकर लक्ष्मण को सहायता के वास्ते पुकारा, लक्ष्मण राम की सहायता को गया और जटायु गृद्ध सीता की रक्षा के वास्ते रहा, इधर रावण फक़ीर का भेष बनाकर सीता के पास आया और हर ले गया।

(६) महापुराण के कथनानुसार दशरथ अबतक अयोध्या में राज्य कर रहा था उसको सुपना आया जिसका फल पूछने पर उसको मालूम हुआ कि रावण सीता को हर ले गया है, इस वास्ते दशरथ ने अयोध्या से राम के पास बनारस इस बात की ख़बर भेजी और धीरज बंधाया, वही बनारस में राम के पास सुग्रीव आया और कहा कि बाली मेरा भाई राजा है, मैं युवराज हूं परन्तु उसने मुझे निकाल दिया है, मुझे नारद ने कहा है कि तू राम की सहायता कर वह तेरी सहायता करेंगे, हनुमान भी साथ था, वह लङ्का भेजा गया, जो लङ्का जाकर सीता से मिला, लङ्का में रावण की रानी मन्दोदरी ने सीता को देखकर पहिचान लिया और कहा कि तू तो मेरी बेटी है मन्दोदरी की छातियों में दूध भी भर आया उसने सीता की बहुत तसल्ली की, विभीषण ने रावण को समझाया कि यह तेरी बेटी है परन्तु रावण ने एक न सुनी, जब राम ने रावण पर चढ़ाई करी तो बाली ने कहला कर भेजा कि सुग्रीव और हनुमान को अपने से अलग कर दो, मैं अकेला ही रावण को जीतकर

सीता को ला दूंगा, राम ने कहा कि तुम भी साथ चलो, बाली ने यह बात न माना बल्कि बड़ा क्रोध किया, तब राम ने पहिले उस ही पर चढ़ाई कर दी, लक्ष्मण ने बाली को मारा, सुग्रीव को राज्य मिला, फिर लङ्का पर चढाई करी वहा पहुंचने पर हनुमान ने राम की आज्ञा से लङ्का में जाकर उपद्रव किया, बाग़ उजाडा और लङ्का में आग लगाई।

पद्मपुराण का कथन है कि सीताहरण के बाद राम पाताल लङ्का में चला गया, वहा सुग्रीव उनके पास गया और कहा कि बाली मेरा भाई था वह मुनि होगया और मैं राजा हुआ, परन्तु साहसगति जो मेरी स्त्री पर आशक्त था मेरा रूप बनाकर मेरे नगर में घुस गया है और कोई यह नही पहिचान सकता है कि असली सुग्रीव कौन है, तब राम और सुग्रीव में प्रतिज्ञा हुई कि राम तो साहसगति को मारकर सुग्रीव को उसका राज्य और स्त्री दिला दे और फिर सुग्रीव सीता की खोज लगा दे, राम लक्ष्मण सुग्रीव के साथ उसके नगर में आये, सुग्रीव राम के कहने से साहसगति से लडा परन्तु दोनों का एक जैसा रूप देखकर राम सुग्रीव को न पहिचान सका और न उसकी सहायता कर सका सुग्रीव हारकर भाग आया, तब सुग्रीव को तो लक्ष्मण ने अपने पास रखा और राम ने साहसगति को मारा, सुग्रीव को राज्य भी मिल गया और उसकी स्त्री भी परन्तु सुग्रीव अपनी स्त्रीके साथ भोगों में ऐसा फँस गया कि उसको सीता की खोज का कुछ भी खयाल न रहा, इस पर राम को बहुत चिन्ता हुई, लक्ष्मण क्रोध करके सुग्रीव के महल मे घुस गया और उसके मारने को चढ़ गया, उसकी रानियों ने लक्ष्मण का क्रोध ठण्डा किया, तब सुग्रीव सीता की तलाश में निकला और बडी खोज के बाद मालूम हुआ कि रावण सीता को हरकर लङ्का ले गया है, इस पर हनुमान लङ्का भेजा गया, वह सीता से मिला, वहां रावण की स्त्री मन्दोदरी रावण की अन्य १८ हजार रानियों सहित रावण की आज्ञा से सीता के पास गई और उसको समझाने लगीं कि तू रावण के साथ भोग करने पर राजी होजा परन्तु उसने एक न मानी, हनुमान ने सीता की बहुत तसल्ली की और लङ्का का विध्वंस करके चला आया।

रामायण का कथन है कि राम सुग्रीव के पास गया, वह एक पहाड पर मिला और कहा कि मेरा भाई बाली राजा है, मैं युवराज था, उसने नाराज होकर मुझको निकाल दिया और मेरी स्त्री भी ले ली है, इस पर राम और सुग्रीव में प्रतिज्ञा हुई कि राम तो बाली को मारकर सुग्रीव को राज्य दिला दे और सुग्रीव सीता का पता लगा दे, राम के कहने से सुग्रीव बाली से लडने को गया परन्तु बाली और सुग्रीव

की एक शकल होने के कारण सुग्रीव की सहायता न होसकी, सुग्रीव हारकर भाग आया, तब राम ने पहिचान के वास्ते सुग्रीव के गले में फूलों की माला डालकर उस को लड़ने के वास्ते भेजा और तब रामने वालीको मारा और सुग्रीवको राज्य और उसकी स्त्री मिली, परन्तु सुग्रीव अपनी स्त्री के साथ भोगों में ऐसा आशक्त हुआ कि सीता की खोज का कुछ भी ख़याल न रहा, राम को बड़ी सोच हुई, लक्ष्मण क्रोध करके सुग्रीवके महलमें घुस गया और सुग्रीवको मारनेको चढ़ा उसकी स्त्रीने लक्ष्मण का क्रोध ठण्डा किया और सुग्रीव सीता की खोज मे लगा, पता लगने पर हनुमान लङ्का गया और सीता से मिला, फिर बाग़ उजाड़ और अपनी पूंछ में आग लगवा कर उससे लङ्का को जलाकर भाग आया।

(७) महापुराण के अनुसार तो सुग्रीव के कहने से राम लक्ष्मण ने बाली पर चढ़ाई करी और लक्ष्मण के हाथ से बाली मारा गया परन्तु पद्मपुराण के अनुसार रावण ने बाली से उसकी बहिन मांगी थी, उसने देने से इनकार किया रावण ने उस पर चढ़ाई कर दी जिस पर बाली ने सुग्रीव को राज देकर मुनि दीक्षा ले ली और सुग्रीव ने रावण को अपनी बहिन देकर उसको राजी कर लिया था, बाली मुनि होकर कैलाश पर्वत पर तपस्या कर रहा था कि वहां उसके प्रभाव से रावण का विमान आकाश में जाता हुआ अटक गया, रावण यह जानकर कि किसी मुनि के प्रभाव से विमान अटका है मुनि बन्दना को नीचे उतरा परन्तु बाली को देखते ही उसको क्रोध आया, उसने मुनि को अनेक दुर्वचन कहे और कैलाश पर्वत समेत मुनि महाराज को समुद्र में फेंक देने के वास्ते कैलाश पर्वत को उठाना शुरू किया, पर्वत हिला, मुनि महाराज ने अपने अंगूठे से पर्वत को दबाया रावण दबा और बहुत रोया, तब ही से उसका नाम रावण प्रसिद्ध हुआ, मुनि ने अपना अंगूठा हटाया रावण पहाड के नीचे से निकल कर आया और जिनेन्द्र भगवान की बहुत स्तुति की जिससे धरणेंद्र का आसन कांपा और वह आकर रावण को शक्ती नाम का एक दिव्य अस्त्र दे गया।

रामायण का कथन है कि कैलाश पर्वत के ऊपर को रावण विमान में बैठा जारहा था, महादेवजी के अनुचरों ने रोका कि इधरसे विमान लौटा लेजावो, रावण ने क्रोध करके कैलाश पर्वत को ही उठाकर फेंक देने का इरादा किया, पर्वत हिला, महादेवजी ने अपने पैर के अँगूठे से पर्वत को दबाया, रावण दबा और बहुत रोया, तब ही से रावण उसका नाम हुआ, महादेवजीने अँगूठा हटाया, रावण निकला और महादेवजीकी बहुत स्तुति करी और उनको प्रसन्न करके उनसे एक दिव्य शस्त्र लिया।

इस प्रकार महापुराण और पद्मपुराण इन दोनों दिगम्बर जैनग्रन्थों की प्रत्येक बात में धरती आकाश का अन्तर है जिससे यह ही मालूम होता है कि यह दोनों ही कथन किसी तरह भी सर्वज्ञ भाषित नहीं है, परन्तु इनमें इतना भारी कथन भेद होने पर भी इन दोनों ग्रन्थों में से कोई कथन एक ग्रन्थ का और कोई कथन दूसरे ग्रन्थ का बहुत अंशों में वाल्मीक रामायण के ही अनुसार होने से यह विचार उत्पन्न होता है कि इन दोनों ही ग्रन्थों के कथन कुछ अदल बदल कर रामायण से ही लिये गये हैं अर्थात् वाल्मीक रामायण की कोई बात तो पद्मपुराण में बदली गई है और कोई महापुराण में परन्तु शेष कथन दोनों ग्रन्थों में रामायण से ही लिया गया है।

वाल्मीक रामायण हिन्दुओं का बहुत ही पुराना ग्रन्थ है और पद्मपुराण तो यहां तक कहता है कि श्रीमहावीर स्वामी के समोसरण में राजा श्रेणिक के प्रश्न पर गौतम स्वामी द्वारा राम रावण की कथा कही जाने से पहिले भी राम रावण की कथा के ऐसे लौकिक ग्रन्थ मौजूद थे जिनमें ऐसा ही कथन था जैसा कि वाल्मीक रामायण में है अर्थात् वाल्मीक रामायण उस समय से भी पहिले की है, पद्मपुराण का वह कथन इस प्रकार है।

"राजा श्रेणिक मन में विचार करता भया कि भगवान की दिव्यध्वनी में तीर्थंकर चक्रवर्त्यादिक के जो चरित्र कहे गये वह मैंने सावधान होकर सुने अब श्रीरामचन्द्र के चरित्र सुनने में मेरी अभिलाषा है क्योंकि लौकिक ग्रन्थों में रावणादिक को मांस भक्षी राक्षस कहा है परन्तु वे विद्याधर महाकुलवन्त कैसे मद्यमांस रुधिरादिक का भक्षण करें और रावण के भाई कुम्भकरण को कहें हैं कि वह ६ महीने की निद्रा लेता था और उसके ऊपर हाथी फेरते और ताते तैल से कान पूरते तो भी ६ महीने से पहिले नहीं जागता था और जब जागता था तब ऐसी भूख प्यास लगती थी कि अनेक हस्ती महिषी आदि तिर्यंच और मनुष्यों को भक्षण कर जाता था और राध रुधिर का पान करता था तो भी तृप्ति नहीं होती थी और सुग्रीव हनुमानादिक को वानर कहे हैं परन्तु वे तो बड़े राजा विद्याधर थे ...... और लोक ऐसा कहैं है कि देवों के स्वामी इन्द्र को रावण ने जीता परन्तु यह बात नहीं बनती, कहां वह देवों का इन्द्र और कहां यह मनुष्य जो इन्द्र के कोपमात्र से ही भस्म होजायँ जिसके ऐरावत हस्ती, वज्र सा आयुध, जिसकी ऐसी सामर्थ कि सर्व पृथिवी को वश कर ले, सो ऐसे स्वर्ग के स्वामी इन्द्र को यह अल्प शक्ति का धनी मनुष्य विद्याधर कैसे लाकर बन्दी में डारे...... और लोक कहैं हैं कि श्रीरामचन्द्र मृगादिक की हिंसा करते थे परन्तु यह बात न बने, वे व्रती विवेकी

दयावान महापुरुष कैसे जीवों की हिंसा करैं और कैसे अभक्ष का भक्षण करें और सुग्रीव के बडे भाई वाली को कहे हैं कि उसने सुग्रीव की स्त्री अङ्गीकार करी परन्तु वडा भाई जो वाप समान है कैसे छोटे भाई की स्त्री अङ्गीकार करै, सो यह सर्व बात सम्भव नहीं इसलिये गणधरदेव को पूछ कर श्रीरामचन्द्र की यथार्थ कथा श्रवण करूंगा, ऐसा विचार श्रेणिक महाराज ने किया .... राजा श्रेणिक ने श्रीगणधर देवको नमोस्तुते कहकर समाधान पूछ प्रश्न किया कि भगवान मेरे को रामचरित्र सुनने की इच्छा है यह कथा जगत मे लोगों ने और भांति प्ररूपी हैं इसलिये हे प्रभो! कृपाकर सन्देह रूप कीचड़ से बहुत जीवों को काढ़ो" ।

पद्मपुराण के इस कथन मे जिस लौकिक ग्रन्थ का जिकर हैं वह अति प्राचीन बाल्मीक रामायण ही हो सकता हैं और उस ही मे वह सब कथन है जिन पर राजा श्रेणिक ने शङ्का करके गौतम स्वामी से राम रावण की यह कथा सुननी चाही थी, पद्मपुराण के इस कथन मे इस रामायण के वास्ते लौकिक ग्रन्थ का शब्द आया है और कहा है कि लोक में ऐसा प्रसिद्ध है जिसका यह ही अर्थ होता है कि उस समय पृथिवी पर हिन्दू रामायण ही प्रचलित और प्रसिद्ध थी और सब लोग उसको ही मानते थे, परन्तु राम रावण की यह कथा जगत के लोगों को मालूम कैसे हुई जिसको कहीं २ बदल कर उन्होंने अन्यथा कथन बना लिया हो, निश्चय है कि यदि राम रावण कोई व्यक्ति हुए हैं तो श्रीपार्श्वनाथ भगवान की दिव्यध्वनी के सिवाय और कोई मार्ग जगत के लोगों को इस कथा के जानने का उस समय नहीं था, परन्तु श्रीपार्श्वनाथ स्वामी और श्रीमहावीर स्वामी को केवल ढाईसौ वर्ष का अन्तर हैं, श्रीपार्श्वनाथ स्वामी की दिव्यध्वनी के द्वारा इस कथा का वखान होते पर श्रीगणधर देवों ने इसको द्वादशांगरूप जिनवाणी में भी जरूर ही गूथा होगा और उसके अनुसार आचार्यो ने ग्रन्थ भी जरूर बनाये होंगे परन्तु क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि महावीर स्वामी से पहिले हिन्दू आचार्यो ने श्रीऋषभदेव के कथन को कुछ बदल कर जो यह रामायण बनाई थी जिसका कथन राजा श्रेणिक ने किया था वह तो अबतक मौजूद है परन्तु श्रीमहावीर स्वामी की दिव्यध्वनी में भी राम-रावण की सही कथा का वखान होने पर और राजा श्रेणिक के प्रश्न पर गौतम स्वामी द्वारा भी सही कथा कही जाने पर यह बाल्मीक रामायण तो ज्यों की त्यों वैसी ही बनी रही जैसी कि पहिले थी परन्तु श्रीपार्श्वनाथ भगवान की कही हुई सही कथा की कोई भी पुस्तक विद्यमान नहीं है और श्रीमहावीर स्वामी की दिव्यध्वनी के अनुसार जो सही कथा बताई जाती है वह पद्मपुराण और महापुराण इन दो ग्रन्थों मे मौजूद

है जिनमें धरती आकाश का अन्तर है और इनमें से यदि एक जैन ग्रन्थ में कोई बात रामायण से विलक्षण है तो वह ही कथन दूसरे जैन ग्रन्थ में बिलकुल रामायण के ही अनुसार है, इससे यह ही ख़याल पैदा होता है कि न तो राजा श्रेणिक ने राम रावणकी कथाके सुनाने की प्रार्थना की और न श्रीगौतम स्वामीने वह कथा कही बल्कि पद्मपुराण और महापुराण आदि जैनग्रन्थों के बनाते समय ही वाल्मीक रामायण जगत में प्रसिद्ध थी और इस ही की जगत में मान्यता होरही थी उस ही कथा को लेकर और उसमें से कोई २ कथन बदल कर अलग २ ग्रन्थकारों ने इसको जैन कथा बनाने की कोशिश की है, इस ही कारण इन जैनग्रन्थों के कथन में इतना भारी कथन भेद होगया है और इस ही कारण जो बात एक जैनग्रन्थ में रामायण से भिन्न है वह दूसरे जैनग्रन्थ में रामायण के ही अनुसार है।

रही यह बात कि इन जैनग्रन्थों में यह क्यों लिखा है कि राजा श्रेणिक के पूछने पर राम रावण की यह कथा गौतम स्वामीने कही इसका उत्तर यह है कि हिन्दी रामपुराण में हनुमान की उत्पत्ति और रावण के अर्धचक्री होजाने का कथन करने के बाद नवमी सन्धी पूर्ण होजाने पर यह लिखा है—

चौपाई—श्रेणिक से गौतम गुरु कह्यो । इह तो कथन इहां अब रह्यो ॥
मुनि सुव्रत जिनको सुकथान । सुणि कल्याणक पञ्च प्रवान ॥

यह चौपाई लिखकर रामपुराण में श्रीमुनि सुव्रतनाथ भगवान की एक विस्तृत कथा लिखनी शुरू करदी गई है, इस ही रामपुराण के आदिमें यह भी लिखा है

चौपाई—जो रविषेण कह्यो वरणाव । सो सकोच कहूं करि चाव ॥
गुणभद्राचारज जे भया । तिनका फुनि कुछ इक वच लिया ॥

हिन्दी रामपुराण की इस चौपाई से साफ जाहिर है कि यह ग्रन्थ पद्मपुराण का ही सक्षेप रूप है और कहीं कुछ बात महापुराण से भी ले ली गई है परन्तु पद्मपुराण में तो श्रीमुनि सुव्रतनाथ की यह विस्तृत कथा बिल्कुल भी नहीं है जो इस स्थान पर रामपुराण में वर्णन की गई है बेशक महापुराण मे यह कथा जरूर है और वहीं से लेकर रामपुराण में कुछ अधिक विस्तार के साथ वर्णन की गई हैं परन्तु महापुराण में भी यह कथा इस स्थान पर वर्णन नहीं की गई है जिस स्थान पर कि रामपुराण में वर्णन की गई है बल्कि महापुराण में तो अव्वल श्रीमुनि सुव्रतनाथ के चरित्र का वर्णन करके फिर हरिषेण चक्रवर्ती का वर्णन किया गया है और फिर उसके बाद राम रावण की कथा कही गई है इससे स्पष्ट सिद्ध है कि रामपुराण में नवीसन्धी के बाद जो यह लिखा गया है कि गौतम स्वामी ने राजा श्रेणिक से कहा

कि यह कथा तो यहीं रही अब तुम श्रीमुनि सुव्रतनाथ की कथा सुनो, रामपुराण के यह वचन बिल्कुल ही कल्पित हैं और किसी भी आधार पर नहीं है, इस ही प्रकार अन्य भी अनेक दृष्टान्त और हेतु इस बात के मिलते हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि कथा ग्रन्थों में जगह जगह जो यह उत्थान किया है कि राजा श्रेणिक ने ऐसा प्रश्न किया और उसके उत्तर में गौतम स्वामी ने कथन किया, यह प्रश्न करना आदिक वास्तविक नही है अर्थात् यह बात नही है कि जिस जिस मौके पर राजा श्रेणिक ने वास्तव में प्रश्न किया हो आजकल के ग्रन्थों में ठीक उस ही २ मौके पर प्रश्न करना लिखा हो बल्कि कथा ग्रन्थों की यह एक कथन शैली ही मालूम होती है कि ज़हां कोई नवीन कथन शुरू करते हैं वहां उत्थान के वास्ते राजा श्रेणिक का प्रश्न करना लिख देते हैं वा यह लिख देते है कि श्रीगौतम स्वामी ने राजा श्रेणिक से कहा कि अब यह कथन सुनो जैसा कि रामपुराण में श्रीसोमसेन मुनि ने नवींसन्धी के बाद श्रीमुनि सुव्रतनाथ की कथा के उत्थान में लिख दिया है।

जैनग्रन्थों में राम रावण का होना श्रीमुनि सुव्रतनाथ के धर्म शासन मे वर्णन किया जाता है, श्रीमुनि सुव्रतनाथ से ६ लाख वर्ष बाद श्रीनमिनाथ और नमिनाथ से पाच लाख वर्ष बाद श्रीनेमिनाथ और श्रीनेमिनाथ से ८३७५० वर्ष बाद श्रीपार्श्वनाथ भगवान हुए हैं इस प्रकार राम रावण का होना अब से लाखों वर्ष पहिले कहा जाता है परन्तु यह नहीं बताया जाता कि किस तरह और कब से हिन्दूलोग राम को विष्णु का अवतार मानकर पूजने लगे और कब से वह लौकिक ग्रन्थ बना और कब से उसकी कथा लोक में प्रसिद्ध हुई जिसकी शिकायत राजा श्रेणिक ने गौतम स्वामी से की है, श्रीकृष्ण की पूजा लोक में प्रचलित होने का कारण तो प्रसिद्ध दिगम्बर जैनग्रन्थ हरिवंशपुराण में यह लिखा है कि मरने के बाद कृष्ण तो तीसरे नरक गया और उसका भाई बलदेव स्वर्ग गया, स्वर्ग से बलदेव अपने भाई कृष्ण के पास मिलने के वास्ते नरक गया, वहां कृष्ण ने कहा कि द्वारिका के जलने और बन्धुओं के क्षय होजाने से लोक में हमारा अपवाद हुआ है सो आप भरत क्षेत्र में जावें और वहां आप ऐसी माया रचें जिससे हम अपने पुत्र और पिता आदि से युक्त और महा विभूती से मण्डित दिखाई दें और सब लोग हमारी तरफ़ बड़ी आश्चर्यकी दृष्टि से देखें और शङ्ख चक्र गदा से युक्त मेरी प्रतिमाओं से मण्डित समस्त भरतक्षेत्र की पृथिवी व्याप्त कर दें जिससे संसार में सब जगह मेरी कीर्ति फैल जावे, इसपर बलदेव का जीव स्वर्ग से भरतक्षेत्र में आया और जैसा कृष्ण ने कहा था वैसा ही किया, और नगर और ग्रामों में कृष्ण के मन्दिर बना बना उनमे उनकी प्रतिमा पधरा कर समस्त लोक कृष्णमय कर दिया।

इस प्रकार हरिवंशपुराण से कृष्ण की पूजा के प्रचार होने का कारण तो जैन कथा में साफ़ २ मिलता है परन्तु राम वा लक्ष्मण के पूजे जाने का कारण तो किसी भी जैनग्रन्थ में नहीं मिलता है और यदि नारायण पद की ही पूजा लोक में चल पडी होती तो जहां राजा श्रेणिक ने राम रावण की प्रचलित कथा में अनेक शङ्कायें उठाई थीं वहां ये भी पूछना जरूरी होता कि क्यों जगत में लक्ष्मण की जगह राम की पूजा होने लगी क्योंकि जैन कथनानुसार तो लक्ष्मण ही नारायण था और राम बलभद्र, इसके अलावा हरिवशपुराण के कथनानुसार जब कृष्ण ने नरकमें अपने भाई को कहा कि भरतक्षेत्र में जाकर इस इस प्रकार मेरी पूजा का प्रचार करो वहां यह नही कहा कि जिस प्रकार राम वा लक्ष्मण की पुजा का प्रचार जगत में होरहा है ऐसे ही मेरी पूजाका भी प्रचार करो, इससे सिद्ध है कि उस समय तक भी श्रीराम चन्द्र वा लक्ष्मण की पूजा का प्रचार जगत में नहीं हुआ था, इस प्रकार लौकिक में राम की पूजा प्रचलित होजाने का कोई विशेष कारण जैनग्रन्थों में न लिखा जाने से यह ही विचार पैदा होता है कि राम की पूजा न तो उनके बलभद्र होने की वजह से प्रचलित हुई और न उनकी पूजा प्रचलित होने का कोई ऐसा बनावटी कारण ही था जैसा कि कृष्णकी बाबत हरिवशपुराण में लिखा गया है अर्थात् यह कोई जैन व्यक्ति नही थे जिनके लोक में पूजे जाने का कोई विशेष कारण जैनग्रन्थों में वर्णन किया जाना बल्कि या तो यह वास्तव मे कोई हिन्दू देवता ही हैं वा लौकिक ग्रन्थ अर्थात् बाल्मीक रामायण ही इनकी पूजा के प्रचलित होने का कारण है जैसा कि आगे दिखाया जावेगा और इस बाल्मीक रामायण से ही राम रावण की यह कथा जैनग्रन्थों में ली गई है।

बाल्मीक रामायण से ही पद्मपुराण बनाये जाने के सिर्फ यह ही मोटे मोटे अनुमान नही हैं बल्कि जब बाल्मीक रामायण के कथनों को पद्मपुराण से मिलाया जाता है तो एक दृढ विचार इस बात का पैदा होता है कि यह पद्मपुराण रामायण से ही बनाया गया है और यह बात इन दोनों ग्रन्थों के कथनों के मिल जाने से ही पैदा नही होती है बल्कि पद्मपुराण के अनेक कथन जो रामायण के कथन से मिलते हों या जिनमें रामायण के कथन से कुछ भेद किया गया हो ऐसे हैं जो जैनग्रन्थ में किसी प्रकार भी शोभा नही देते हैं और बिल्कुल ओपरे और अनोखे मालूम होते हैं बल्कि कोई कोई कथन तो जैनधर्म के बिल्कुल ही खिलाफ़ पडते हैं जैसे श्रीनारद और शिद्धार्थ दो छुल्लक महाराजो के कृत्य, राजा सहस्ररश्मि के पिता का जो जंघा चारी ऋद्धिधारी मुनि थे युद्धमें अपने बेटे के पकडे जाने पर उसको छुडाने के वास्ते

आना और रावण के युद्ध की प्रशंसा करके अपने बेटे को छुड़वाना आदि इस ही प्रकार महापुराण में नारद को ब्रह्मचारी बताते हुए भी उसके बहुत ही खोटे कृत्य वर्णन करना और फिर भी उसको ऋषि नारद वा मुनि नारद कहना तो साफ़ ही सिद्ध कर रहा है कि हिन्दू ग्रन्थों के ऋषि वा मुनि नारद को ही जैनग्रन्थों में जैन क्षुल्लक वा जैन ब्रह्मचारी बनाया है परन्तु उसके कृत्य वह ही रहने दिये हैं और उसका भेष भी वह ही बताया है जो हिन्दू ग्रन्थों मे वर्णन किया गया है इस ही कारण हिन्दू ग्रन्थों के समान जैनग्रन्थों में भी वह ऋषि वा मुनि ही लिखा गया है।

वाल्मीक रामायण को ग़ौर के साथ पढने से एक अद्भुत् बात यह मालूम होती है कि वह एक बिल्कुल ही कल्पित महाकाव्य ग्रन्थ है और इस ग्रन्थ में रामको विष्णु भगवान का अवतार वर्णन किये जाने के कारण ही अर्थात् इस ग्रन्थ के रचे जाने के बाद ही राम विष्णु भगवान का अवतार माने और पूजे जाने लगे हैं, क्योंकि स्वयं वाल्मीकजी ही की उन्थानिका मे लिखते हैं कि उन्होंने (वाल्मीकजी ने) नारदजी से पूछा कि सर्वगुण सम्पन्न कौन है, तब नारदजी ने राम के जन्म से लेकर उनके ब्रह्मलोक जाने तक का अर्थात् देहान्त होजाने तक का वर्णन बहुत ही संक्षेप के साथ वाल्मीकजी को बताया जो रामायण में सौ पचास श्लोकों मे लिखा हुआ है, वाल्मीकजी का कथन हैं कि इसके बाद ब्रह्माजीने हमारे आश्रम मे आकर कहा कि जो रामचरित्र तुमने नारद से सुना हैं उसको छन्दों में लिखो, ब्रह्माजी ने यह भी कहा कि राम लक्ष्मण और सीता के गुप्त और प्रगट वृत्तान्त भी तुम को पूर्णरूप से ज्ञान हो जावेंगे, वाल्मीकजी लिखते हैं कि नारद के मुख से जितना चरित्र राम का सुना था उससे भी अधिक चरित्र जानने के वास्ते हमने गुरु का ध्यान लगाया और राम चरित्र का चिन्तवन करने लगे, तब हमने उनका सब चरित्र साक्षात् जान लिया और तब उसको श्लोकबद्ध करना शुरू कर दिया और (सातवें काण्ड के अलावा) सिर्फ छै काण्ड के ही २४ हजार श्लोक बनाये।

आगे चलकर वाल्मीकजी लिखते हैं कि जब रामचन्द्रजी लङ्का जीतकर अयोध्या का राज्य करने लगे तब ही हमने यह चरित्र बनाया, रामायण के कथनानुसार जब लोकापवाद के कारण राम ने सीता को घर से निकाल दिया था तो वह वाल्मीकजी के ही आश्रम में रही थी और वही लव और अंकुश उसके दो पुत्र पैदा हुए थे और वही वह पले थे, इस वास्ते वाल्मीकजी यह भी लिखते हैं कि हमने रामायण के सब श्लोक लव और कुश को याद कराये और अन्त में इन बालकों ने राम के दर्बार मे जाकर यह सारी रामायण रामचन्द्रजी को सुनाई तब ही राम को यह मालूम हुआ कि यह तो हमारे ही पुत्र हैं।

रामायण के इन पूर्वापर विरोधी वचनों से और वाल्मीकजीके इन स्पष्ट शब्दों से कि हमने राम का विस्तृत चरित्र जानने के लिये अपने मन में ध्यान किया और मनमें ध्यान करने से ही हम उनका सब चरित्र जान गये, साफ़ यह नतीजा निकलता है कि यह रामायण वाल्मीकजी ने बिल्कुल कल्पित अर्थात् अपने मन से ही कथा जोड जोडकर बनाई है और साथ ही इसके यह भी मालूम होता है कि पिछले समय में इस हिन्दुस्थान में कल्पित काव्य ग्रन्थ भी धर्मग्रन्थ के ही रूप में लिखे जाते थे और धर्मग्रन्थ होजाने के कारण ही उनका खूब प्रचार होजाता था, इस ही प्रकार यह रामायण भी धर्मग्रन्थ के ही रूप में लिखी जाने के कारण इसका बहुत ज्यादा प्रचार हुआ और इस ग्रन्थ के अन्त में यह लिखा रहने से कि इस ग्रन्थ का एक पाद वा एक श्लोक भी पढने सुनने से महापातक दूर होजाते हैं और इस लोक और परलोक में सुख मिलता है और सर्व कार्य सिद्ध होते हैं, लोग इस ग्रन्थ का बडी श्रद्धा से पढने और सुनने लगे और यह ग्रन्थ जगत में मान्य होगया, इस ही मान्यता के कारण फिर यह कथा जैनकथा के रूप में भी परिणत होगई और जैन पद्मपुराण के अन्त में यहां तक लिख दिया गया कि इस कथा के पढने सुनने से स्त्री के अर्थी को सुन्दर स्त्री की प्राप्ति होजाती हैं, राहु केतु और मङ्गल शनिश्चर आदि क्रूर ग्रह शान्त होजाते हैं और जल थल और आकाश के सब देवता राजी होजाते हैं।

बेशक यह बात इतिहास सम्बन्धी बात है जो बडी भारी खोज से ही निश्चय की जा सकती है कि वाल्मीक रामायणकी कथा कल्पित है वा असली और जैनकथा ग्रन्थों मे यह कथायें वाल्मीक रामायण से लीगई हैं वा श्रीसर्वज्ञ भाषित जिनवाणी हैं और इतिहास की इस खोज को पूरा करने के वास्ते विद्वानों को बहुत २ बातों के तलाश करने और जाचने की जरूरत है, इस ही ज़रूरत को प्रगट करने और ऐसी खोज का उत्साह पैदा कराने के वास्ते ही हमने अपना यह विचार इस पुस्तक द्वारा प्रगट किया है, आशा है कि विद्वान् लोग इस पर खूब वादानुवाद करके और नई २ खोज साथ में मिलाकर बात की असलियत को निकालेंगे और जगत मे सचाई का प्रकाश करेंगे, परन्तु एक बात जो सब से पहिले और सब से ज्यादा विचार के योग्य है और जो बहुत ही शोक के साथ कहनी पडती हैं वह यह है कि वाल्मीक रामायण की अपेक्षा पद्मपुराण में काम कथाओं की अधिक भरमार है और यह काम कथायें रामायण में अधिक हैं वा पद्मपुराण में इस बहस को बिल्कुल छोडकर भी पद्मपुराण में यह कथायें इतनी हैं कि इन कथाओं को पढकर किसी प्रकार भी विश्वास

नहीं होता है कि सतयुग का समय काम विकार का ऐसा समय हो कि उस समय की कोई भी बात बिना काम कथा के न कही जा सकती हो और यदि वास्तवमें सतयुग का ऐसा ही समय था और यह सब कथायें बिल्कुल सत्य और सर्वज्ञ भाषित हैं तब भी सब से ज्यादा विचार करने की बात यह है कि इस निकृष्ट कलिकालमें ऐसी कथाओं के पढ़ने सुनने से जिनमें स्त्री पुरुषों के भिन्न २ प्रकार की काम आशक्तता और कुशील और व्यभिचार के अनेक दृश्य दिखाये गये हों सब लोगों को और विशेष कर बालक बालकाओं और जवान जवान स्त्री पुरुषों को कुछ फायदा होता है या हानि और जब यह कथा ग्रन्थ धर्म ग्रन्थ माने जाकर छोटे बडे सर्व प्रकार के स्त्री पुरुषों की सभा में शास्त्र की गद्दी पर पढ़े जाते हैं तो उस कथा ग्रन्थ के अन्तरगत जो काम कथायें आती हैं उनका पढना और सुनाना उस समय कुछ शोभा देता है वा नही और उन काम कथाओं को उस समय सतयुग की कथायें बताना कुछ लाभदायक होता है वा हानिकारक, हमारी छोटी सी बुद्धि में तो इनसे कुछ फ़ायदा नजर आता नही बल्कि हानि ही दिखाई पडती है, आशा है कि जाति के शुभचिन्तक और बुद्धिमान लोग सब से पहिले इस बात पर अवश्य विचार करेंगे और बिना किसी संकोच के बिल्कुल खुले दिल से हेतु सहित अपनी अपनी सम्मति प्रकाश करके जाति का वडा भारी उपकार करेंगे।

अन्त में हम अपने पाठकों से प्रार्थना करते हैं कि ग्रन्थों से कथन उद्धृत करने में वा उनका आशय समझने आदि में भूल रह गई हो वा कथन शैली में कोई खराबी हो और मुझ जैसे अल्पबुद्धि से तो भूल होजाना बहुत ही सम्भव है इस कारण जिस जिस भाई को मेरी जो जो भूल मालूम होती रहै वह मुझे अल्पबुद्धि जानकर क्षमा करते रहैं और कृपा करके मुझे मेरी भूल भी सूचित करते रहैं भाइयों की इस कृपा का मैं बहुत आभारी रहूँगा।

देवबन्द
५।८।१९१८

मनुष्यमात्र का दास—
सूरजभानु

पद्मपुराण समीक्षा ।

पहिला अध्याय ।

रावण के पूर्वज ।
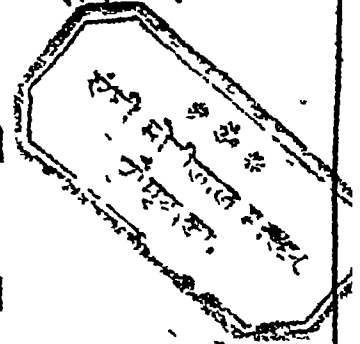
पद्मपुराण के अनुसार रावण के सब से पहिले पुरुषा का नाम मेघवाहन था जिसके वंश मे एक राजा रक्ष हुआ जिसके बेटे का नाम राक्षस हुआ, उस ही से राक्षस वंश चला, इस वंश में एक राजा विद्युतकेश हुआ जिसका बेटा सुकेश हुआ, सुकेश के तीन बेटे माली, सुमाली और माल्यवान हुए, सुमाली के बेटे रत्नश्रवा को व्योमविन्दु की कन्या केकसी व्याही गई उस से रावण, कुम्भकरण और विभीषण यह तीन पुत्र और चन्द्रनखा एक बेटी पैदा हुई, व्योमविन्दु की दूसरी बेटी कौशिकी थी जो विश्रवा को व्याही गई जिससे वैश्रवण हुआ और लंका का लोकपाल होकर कुबेर कहलाया ।

बालमीक रामायण में यह कथन इस प्रकार है कि ब्रह्मा ने राक्षस बनाये, इस राक्षस वंश में विद्युनकेश हुआ, जिसका पुत्र सुकेश हुआ और सुकेशके तीन पुत्र माली सुमाली और माल्यवान हुए, सुमाली की कन्या केकशी तृणविन्दु की कन्या के बेटे विश्रवा से व्याही गई, जिससे रावण आदि तीन पुत्र और सूर्पनखा एक पुत्री हुई, इस ही विश्रवा को भारद्वाज ऋषि की कन्या भी व्याही गई थी जिससे वैश्रवण पुत्र हुआ जो लङ्का का लोकपाल और कुबेर हुआ ।

जैन महापुराण में इन दोनों ग्रन्थों के विरुद्ध यह लिखा है कि रावण का पुरुषा सहस्रग्रीव था जिसका बेटा सतग्रीव हुआ, सतग्रीव का बेटा पचासग्रीव और उसका बेटा पुलस्त्य और उस पुलस्त्य का बेटा रावण हुआ (दो जैनग्रन्थों में इतने भारी कथन भेद का आश्चर्य है) ।

रावणके पिता विश्रवासे केकसीके व्याहकी बाबत पद्मपुराण में तो यह लिखा है कि सुमाली का पुत्र रत्नश्रवा एक वन में विद्या सिद्ध कर रहा था, केकसी के पिता ने केकसी को वहीं वन में भेज दिया कि तू वन में जाकर रत्नश्रवा की सेवा कर और उसको अपना पति बना, रत्नश्रवा ध्यान में बैठा था, केकसी हाथ जोड़ कर उसके सामने जा खड़ी हुई, ध्यान समाप्त होने पर उसने केकसी से पूछा कि तू कौन है ? केकसी ने अपने आने का कारण बताया; तब उसने वही केकसी को व्याही ।

रामायण का कथन है कि विश्रवा तपस्वी था, केकसी के पिता ने केकसी को उसके पास भेजा कि तू जाकर उस तपस्वी को अपना पति बना, जब केकसी वहां गई तो वह ध्यान लगाये तप कर रहा था, इस वास्ते केकसी उसके सामने जाकर खड़ी हो गई, ध्यान खुलने पर विश्रवा ने उससे पूछा कि तू कौन है, और फिर उस को अपनी स्त्री बनाई ।

नोट ।

जैन ग्रन्थों के कथनानुसार विद्याधर लोग विद्या सिद्ध करने के वास्ते एकान्त स्थान में जाते हैं और कुछ दिनों में विद्या सिद्ध करके अपने घर चले आते हैं, इस वास्ते केकसी के पिता का केकसी को रत्नश्रवा के पास उस समय भेजना जब वह वन मे विद्या सिद्ध कर रहा था बिल्कुल बेजोड़ है, किन्तु हिन्दुओं के यहां तापसी लोग सारी उमर वन में ही रहते हैं और वही उनको स्त्री भी मिल जाती है जो वहीं उनके साथ रहने लगती है चुनाचि रामायण के अनुस्सार विश्रवा का पिता पुलस्त्य भी तापसी ही था जिसको तृणविन्दु ऋषि की कन्या ने वरा था, इस से सिद्ध है कि पद्मपुराण में यह कथन रामायण से ही लिया गया है और कुछ अदल बदल कर देने के कारण बेजोड़ होगया है ।

लङ्का की प्राप्ति ।

रामायण का कथन है कि सुकेश की माता अपने पुत्र को छोड़कर कही चली गई, सुकेश रोरहा था, इधर से महादेव पार्वती आ निकले जिन्होंने सुकेश पर दया करके उसको अमर कर दिया, फिर एक विमान दिया जिसमे बैठकर वह संसार में घूमा करता था, फिर उसके पुत्रों ने तपस्या करी जिस पर ब्रह्माजी ने उनको वर दिया कि उनको कोई न मार सके, इस पर वह देवताओं को दिक करने लगे और उन्होंने विश्वकर्मा को एक नगर बनाने को कहा विश्वकर्मा ने उनको लङ्का नगरी बता दी जो उसने इन्द्र के वास्ते इन्द्रपुरी के समान बनाई थी, और वह वहा जारहे ।

पद्मपुराण का कथन है कि चक्रवाल नगर के राजा पूर्णघन ने राजा सुलोचन की कन्या विवाह के वास्ते मांगी, उसने कन्या देने से इनकार किया, इस पर पूर्णघन ने सुलोचन पर चढ़ाई कर दी, सुलोचन युद्ध में मारा गया, उसका बेटा सहस्रनयन अपनी बहिन सहित वन को भाग गया, उस ही वन में एक मायामय घोड़ा सगर चक्रवर्त्ती को उठा लाया था, वहां वह कन्या सगर को व्याही गई, फिर सगर की सहायता से सहस्रनयन ने पूर्णघन पर चढ़ाई करी और उसको मारकर उसका राज्य लिया, पूर्णघन का बेटा मेघवाहन भागा और हसों के साथ आकाश में

कहता हुआ, श्रीअजितनाथ तीर्थंकर के समोसरण में जा पहुंचा, राक्षस देवों के इन्द्र भीम और सुभीम भी वहां आये हुए थे, उन्होंने मेघवाहन पर प्रसन्न होकर उसको राक्षस द्वीप की लङ्का नगरी दी जिसके महल रत्न और सोने के बने हुए थे और पाताल लङ्का भी दी और कहा कि यदि कभी कोई भय हो तो पाताल लङ्का में जा बसना, उन्होंने उसको राक्षस विद्या भी दी और एक हार भी दिया जिसकी हजार देव सेवा करते थे, इस पर मेघवाहन लङ्का में जा बसा, इसके विपरीत महापुराण में लिखा है कि रावण का बड़ा पुरुषा सहस्त्रग्रीव मेघकूटपुर का राजा था जिसको उसके भतीजों ने निकाल दिया था, वहां से निकाला जाने पर वह लङ्का में जा बसा था।

नोट ।

जैनग्रन्थों में ही आपस में इतना भारी कथन भेद होने के सिवाय पद्मपुराण के इस कथन पर भी अनेक शङ्कायें उत्पन्न होती हैं जैसा कि सतयुग की ऐसी भयानक अशान्ति की दशा नहीं हो सकती है कि यदि कोई पुरुष अपनी कन्या किसी को देनी मञ्जूर न करे तो उस पर चढ़ाई कर दी जावे परन्तु शोक के साथ लिखना पड़ता है कि जिस प्रकार हिन्दुओं के वेदों और पुराणों में देवताओं और असुरों के युद्ध की कथायें भरी हुई हैं इस ही प्रकार जैनकथा ग्रन्थ कन्याओं के ऊपर युद्ध होने और खून की नदियां बहने के कथन से भरे पड़े हैं, पद्मपुराण के इस कथन में यह नहीं बताया गया है कि राक्षस देवों के इन्द्र को लङ्का नगरी से क्या वास्ता था और यह नगरी किसी को दे देने का उनको क्या अधिकार था, यह सोने की लङ्का किसने बनाई थी, कौन इसमें रहता था, जब यह लङ्का मेघवाहन को दी गई उस वक्त यह लङ्का बस्ती थी या उजाड़ पड़ी थी और यदि बसती थी तो कौन लोग इसमे रहते थे, कौन उनका राजा था और मेघवाहन उनको निकाल कर उसमें बसा या किस तरह और यदि उजाड़ पड़ी थी तो क्यों और कबसे, गरज जिस प्रकार रामायण में इन बातों को नही खोला है उस ही प्रकार पद्मपुराण में भी यह सब बातें खटकती हुई छोड़ दी गई हैं बल्कि जिस प्रकार हिन्दू कहानियों में घूमते फिरते महादेव पार्वती बिना कारण जिस किसी पर प्रसन्न होते हैं उसको निहाल कर देते हैं इस ही प्रकार पद्मपुराण में राक्षसों के इन्द्रने मेघवाहन को लङ्का नगरी दे दी है, इन सब बातों में यह बात सब से ज्यादा खटकती है कि क्यों यह द्वीप पहिले से ही राक्षस द्वीप कहलाता था और यह राक्षसी विद्या क्या थी जो राक्षसों के इन्द्र ने मेघवाहन को दी और जब उसको राक्षसी विद्या मिल गई तो उसके राक्षस होजाने या राक्षसों जैसे कृत्य करने या कर सकने में क्या बाकी रह गया।

रावण के पुरुषाओं का लङ्का छोड़कर पाताल लङ्का में जाना।

आगे चलकर रामायण में लिखा है कि माली सुमाली और माल्यवान, यह तीनों भाई सब देवताओं और ऋषियों को क्लेश पहुंचाने लगे और जगह जगह यज्ञ का नाश करने लगे, वरदान प्राप्त करने के कारण यह लोग दुर्जय थे इस वास्ते सब देवता आदि इकट्ठे होकर महादेवजी के पास शिकायती गये, महादेवजी ने कहा हम उनको नही मारेंगे तुम विष्णु भगवान के पास जाओ वह इनको मार डालेंगे, तब वह सब विष्णु के पास गये, विष्णु ने कहा कि हम उनको मार डालेंगे, माल्यवान को यह सब हाल मालूम होगया उसने राक्षसोंसे कहा कि हम ही इन्द्र और सब देवताओं को मार डालेंगे, यह विचार कर वह सब राक्षस हाथी, घोड़े, गधे, बैल, ऊंट, सर्प, मछली, कछवा, पक्षी, सिंह, व्याघ्र और शूकर आदि पर सवार होकर चले, विष्णु भगवान से युद्ध हुआ, हज़ारों राक्षस मारे गये, खून की नदिया बह गई, राक्षस लोग लङ्का की तरफ भाग गये, सुमाली बराबर लडता रहा, विष्णु ने उसके सारथीका शिर काट डाला, रथ काट डाला, तब सुमाली पैदल ही विष्णु पर दौडा, हजारों बाण छोड़े, विष्णु ने चक्र चलाया और माली का शिर काट डाला, माल्यवान और सुमाली लङ्का को भाग गये, विष्णु पीछे भागा, फिर लडाई हुई, आखिर राक्षस लोग हारकर पाताल लङ्का में चले गये, इस युद्धको देव यक्ष नाग आदि देवता देखते थे और विष्णु भगवान की जीत पर हर्ष प्रगट करते थे।

पद्मपुराण का कथन है कि आदित्यपुर के राजा ने अपनी कन्या श्रीमाला का स्वयम्वर किया जिसमें किहकूपुर का राजा किहकन्ध और रत्नपुर के राजा अशनिवेग का पुत्र विजयसिंह भी गया, कन्या ने वरमाला किहकन्ध के गले में डाली जिस पर विजयसिंह को बड़ा क्रोध आया इस कारण उसने किहकन्ध से युद्ध किया, ऐसा युद्ध हुआ कि देव भी आकाश में तमाशा देखने लगे, लङ्का का राजा सुकेश किहकन्ध की सहायता को आया, किहकन्ध के भाई ने विजयसिंह का शिर काट डाला, इस पर अशनिवेग स्वयम् लड़ने को आया, बडा युद्ध हुआ, आखिर किहकन्ध और सुकेश किहकूपुर और लङ्का को छोडकर पाताल लङ्का मे जा रहे।

नोट।

पद्मपुराण के इस कथन मे यह बात बडी खटकती है कि इस युद्ध का तमाशा आकाश में बैठकर देव लोग क्यों देख रहे थे, उनका इस युद्ध से क्या वास्ता था,

रामायण में तो विष्णु महाराज ने देवों के ही कहने से युद्ध किया था इस वास्ते वहां तो देवों का युद्ध देखना ठीक ही था परन्तु पद्मपुराण की कथामें तो यह बात किसी तरह भी ठीक नहीं बैठती है। इसके सिवाय सतयुग में स्वयम्वर में भी युद्ध होना और कन्या अपनी राजी से जिसके गले में बरमाला डाल दे उससे युद्ध करना तो किसी तरह भी विश्वास नहीं किया जा सकता है, परन्तु यहां भी शोक के साथ यह ही बताना पड रहा है कि जैनकथा ग्रन्थों में तो सतयुग के अधिक स्वयम्वरों में युद्ध होने का ही कथन किया गया है, जिससे यह ही कहना पड़ता है कि वह सत-युग का कथन नहीं है।

बानर वंश की उत्पत्ति।

रामायण के अनुसार जब विष्णु महाराज ने अवतार धारण करके राक्षसों के नाश करने का इरादा किया तब ब्रह्मा ने देवताओं को आज्ञा दी कि तुम विष्णु की सहायता के वास्ते रीछ और बन्दरों का रूप धारण करो और मुख्य २ अप्सरायें, गन्धर्वणी, सर्पणी आदि अपने अपने पराक्रम के अनुसार बानर देहधारी पुत्र उत्पन्न करें, चुनांचि ब्रह्मा ने पहिले ही अपने अंश से जाम्बवान को जम्भु द्वारा उत्पन्न किया, इस ही प्रकार इन्द्र ने बाली को और सूर्य ने सुग्रीव को, बृहस्पति ने तार को कुबेर ने गन्धमादन को, विश्वकर्मा ने नल को, अग्नि ने नील को, अश्वनीकुमार ने द्विविद और मयन्द को, वरुण ने सुषैण को, मेघ ने शरभ को और वायु ने हनुमान को उत्पन्न किया और बाली इन सब का राजा हुआ।

पद्मपुराण में इनको बानर नहीं बल्कि वानरवंशी बताया है और उत्पत्ति इनकी इस प्रकार लिखी है कि मेघपुर के राजा अतीन्द्र की एक सुन्दर कन्या थी जिसको रत्नपुर के राजा पुष्पोत्तर ने अपने बेटे के वास्ते मांगी, परन्तु वह कन्या लङ्का के राजा को ब्याही गई, इस पर राजा पुष्पोत्तर को बडा क्रोध हुआ, इसके पश्चात् एक दिन उस कन्या का भाई श्रीकंठ सुमेरु पर्वत के चैत्यालयों की वन्दना करके आ रहा था कि मार्ग में वह पुष्पोत्तर की कन्या पद्माभा को देखकर उस पर आशक्त होगया और वह भी उस पर मोहित होगई जिससे श्रीकंठ उसको उडा ले गया, राजा पुष्पोत्तर यह बात सुनकर और भी ज्यादा भडका और भारी सेना लेकर लडाई को चढा, श्रीकंठ भागकर अपने बहनोई के पास लङ्का पहुंचा और पुष्पोत्तर भी उसके पीछे २ वहीं गया, लङ्काका राजा भी अपने साले की तरफ से लडने को तय्यार हुआ परन्तु पुष्पोत्तर की कन्या पद्माभा ने अपने पिता को कहला भेजा कि तुम फजूल

लड़ते हो क्योंकि मैं तो श्रीकंठ से ही राज़ी हूं वह मेरा पति है इस पर पुष्पोत्तर ला-चार होगया और वापस लौट गया, लका के राजा ने श्रीकठ को वानर द्वीपमें बसा-कर उसको वहा का राजा बनाया, जहां उसने कहकू नगर बसाया, वहां बन्दर ब-हुत रहते थे जिनको राजा ने बड़े चाव से पाला, कई पीढ़ी बाद उस ही वश में राजा अमरप्रभु हुआ, जिसने लंका के राजा की बेटी गुणवती व्याही, वह महल में वानरों की तसवीरें देखकर बहुत डरी, राजा तसवीर बनाने वालों पर बहुत नाराज़ हुआ, लोगों ने कहा कि आपके पूर्वज राजा श्रीकठ वानरों से बहुत प्रीति रखते थे उन्होंने ही जगह जगह बानरों की तस्वीर बनवाई थी. तब से इस वंश में जो राजा हुए उ-न्होंने मङ्गल कार्यों में वानरों की तस्वीर बनवाई, इस ही प्रकार यह चित्राम बनाये गये हैं, यह बात सुनकर राजाने उन तस्वीरोंकी बहुत कदर करी और ध्वजा आदिमे भी उनके चित्र बनवाये, तब से यह लोग वानरवंशी कहलाये।

—नोट।

पद्मपुराण में यह भी बताना जरूरी था कि लंकाके राजाने श्रीकंठ से उसका असली राज्य छुडाकर क्यों उसको बानर द्वीप में बसाया और वह द्वीप क्यों वा-नर द्वीप कहलाता था।

रावण के पूर्वजों का दोबारा लङ्का प्राप्त करना।

पद्मपुराण के कथनानुसार लङ्का के राजा सुकेश और बानर वंश राजा कह-कन्ध के पाताल लङ्का में चले जाने के बाद रत्नपुर का राजा अशनिवेग अपने बेटे सहस्रारि को राज्य देकर मुनि होगया जिसने अपनी तरफ़ से निर्घात को लङ्का में सूबा मुक़र्रिर किया, इधर कहकन्ध ने पाताल लङ्का से निकल कर समुद्र के कि-नारे कहकन्धपुर बसाया, सुकेश के पुत्र माली को जवान होने पर जब यह मालूम हुआ कि लका असल में हमारी है तो उसने निर्घात पर चढ़ाई कर दी, निर्घात के कुटुम्बी दैत्य कहलाते थे, दैत्यों और राक्षसों की खूब लड़ाई हुई, माली ने निर्घात को मारा, और अपने भाइयों समेत लका में आ बसा।

———

एक राजा का इन्द्र बनना और रावण के बड़ों का लङ्का छोड़कर फिर पाताल लङ्कामें जाना ।

पद्मपुराण के अनुसार रथनुपुर में राजा सहस्रारि के यहां एक बड़ा प्रतापी पुत्र पैदा हुआ जिसका नाम इन्द्र हुआ, उसने अपने यहां सब रचना इन्द्र के समान करी, ४८ हजार रानियां व्याहीं, पटरानी का नाम सची रखा, इन्द्र के अखाड़े बनाये जिसमें २६ हजार नट सदा नृत्य करते रहें, आठ दांतों वाला ऐरावत हाथी रखा, सोम, वरुण, यम और कुवेर यह चार लोकपाल बनाये, रम्भा, मैनका, उर्वशी आदि हजारों नृत्यकारिणी रखी जिनका नाम अप्सरा रखा, आठ वसु बनाये, अपनी प्रजा के लोगों का नाम देव रखा, उनकी वह ही किस्में करी जैसी कि स्वर्गमें देवोंकी हैं।

इन दिनों माली लंका का राजा था, वह बड़ा मानी था, मनोहर कन्या आदि जो सुन्दर वस्तु किसी राजा के यहां होती थी वह ही वह मँगा लेता था, परन्तु जब रत्नपुर मे इन्द्र का जोर बढ़ा तो माली की आज्ञा भङ्ग होने लगी, माली ने इनपर चढ़ाई कर दी, हाथी, घोड़े, ऊंट, बैल, शेर, चीता, भैंसा, हस, गीदड आदि पर चढ़ चढ कर चले, इधर राजा इन्द्र भी युद्ध को निकला और उसकी सेना भी हाथी, घोड़े, सिंह, व्याघ्र, स्याल, मृग, हंस, मोर, बकरी, मेढ़ा आदि पर सवार होकर चली, महायुद्ध हुआ, वानरवंशियों ने माली की सहायता करी, इन्द्र ने चक्र से माली का शिर काटा, सुमाली परिवार सहित भागा इन्द्र उसके पीछे हुआ, आख़िर राक्षस और वानरवंशी भागकर पाताल लंका को चले गये।

नोट।

इस कथन से साफ जाहिर है कि माली सुमाली आदि से विष्णु भगवान के युद्ध की जो कथा रामायण में लिखी है उस ही के स्थान में यह कथा लिखी गई है और हरएक बात में उस ही का अनुकरण किया गया है, कैसे तमाशे की बात है कि जिस प्रकार रामायण में सुमाली आदि राक्षसों का अनेक प्रकार के पशु पक्षियों पर चढ़कर युद्ध में आना लिखा है इस ही प्रकार पद्मपुराण में भी दोनों तरफ की सेना का पशु पक्षियों पर चढ़कर आना वर्णन किया है और साथ ही इसके इस बात का भी यकीन दिलाना चाहा है कि वह देव वा राक्षस नहीं थे बल्कि मनुष्य ही थे।

रावण का जन्म और लङ्का की प्राप्ति के वास्ते रावण आदि का विद्या सिद्ध करना।

रामायण का कथन है कि विश्रवा के बेटे वैश्रवण ने तप किया जिससे प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने उसको कुबेर नाम का लोकपाल बनाया और अपना पुष्पक विमान दिया और जब विष्णु भगवान के साथ लड़कर सुमाली आदि लंका छोड़कर पाताल लंका में भाग गये तो विश्रवा ने अपने बेटे वैश्रवण को लंका मे बसा दिया और वह लोकपाल बनकर वहां रहने लगा, इधर विश्रवा के यहां केकसी रावण आदि पुत्र हुए रावण के दश शिर और बीस भुजा थी एक दिन वैश्रवण पुष्पक विमान पर बैठकर यहां आया, केकशी उसको देखकर रावण से बोली कि देख तेरा सौतेला भाई कैसा प्रतापी है, तब रावण ने वैसा ही होने की प्रतिज्ञा करी और इस बात की सिद्धी के वास्ते रावण अपने भाइयों सहित घोर तप करने लगा, इस पर ब्रह्माजी आये और तीनों भाइयों को वर दे गये, रावण ने वर लिया कि कोई देवी देवता उसको न मार सके, विभीषणने वर लिया कि उसकी बुद्धि सदा धर्ममे ही लगी रहे परन्तु जब कुम्भकरण वर मांगने लगा तो देवताओं ने हाथ जोड़कर कि इस दुष्ट को वर मत दो, ब्रह्मा ने सरस्वती को कुम्भकरण की जीभ पर बिठा कर कुम्भकरण से कहा कि वर माग, तब उसने वर मांगा कि मैं बरसो तक सोता ही रहूं।

जब सुमाली को मालूम हुआ कि केकसी के बेटों को ब्रह्माजी से बड़े बड़े वर मिले हैं तो वह इनके पास आया और रावण से कहा कि हम विष्णु के भय से लंका छोडकर पातालमें जारहे हैं, अब तुम राक्षस वंश का उद्धार करो और लंकाको वैश्रवण से छीनो, इस पर रावण ने वैश्रवण के पास दूत भेजा कि लंका छोड़ दो, वैश्रवण के पिता ने वैश्रवण को समझाया कि ब्रह्मा से वर पाकर रावण किसी की नहीं सुनता है इस वास्ते तुम लंका छोडकर कैलाश पर आ जाओ, वैश्रवण ने ऐसा ही किया और रावण लंका में जा बसा।

पद्मपुराण में यह कथा इस प्रकार लिखी है कि राजा इन्द्र ने विश्रवा के पुत्र वैश्रवण को पांचवां लोकपाल अर्थात् कुवेर बनाकर लंका में रक्खा, पाताल लंका में रावण पैदा हुआ जन्म दिन ही नह हार जिसकी हज़ार देव रक्षा करते थे अपनी तरफ खैंच लिया, उस ही हार में रावण के दश शिर और बीस भुजा दिखाई दी इस

वास्ते उसका नाम दशानन रक्खा गया, एक दिन वैश्रवण बडी विभूती के साथ जा-रहा था, रावण के पूछने पर केकसी ने कहा कि यह तेरी मावसी का बेटा है और लङ्का का लोकपाल है, फिर केकसी ने लङ्का छिन जाने का सारा हाल सुनाकर कहा कि तुम्हारा पिता लका के वास्ते बहुत तडपता है इस पर रावण ने लका को फिर प्राप्त कर लेने की प्रतिज्ञा की और इस कार्य्य की सिद्धि के वास्ते अपने भाइयों को साथ लेकर विद्या सिद्ध करने के वास्ते वन मे गया, वहा यह तीनों भाई घोर तपस्या कर रहे थे कि जम्बूद्वीप का अधिपति एक यक्ष अपनी स्त्रियों के साथ क्रीडा करता हुआ उस वन मे आ निकला, यक्ष की स्त्री इनका तप डिगाने लगी, यक्ष ने भी इनका तप डिगाना चाहा, परन्तु यह न डिगे, तब यक्ष को क्रोध आया कि जम्बूद्वीप का अधिपति तो मैं हूं मुझको छोडकर यह किसकी आराधना कर रहे हैं, यक्ष ने अपने नौकरोंके द्वारा बहुत उपद्रव किया, मायामय भीलोंकी सेना बनाई और ऐसी माया दिखाई कि रावण का पिता माता बहिन सब बाध लिये गये हैं, रावणके पिता का शिर काट दिया है, फिर रावण को उसके भाइयों के शिर कटे हुए और उसके भाइयों को रावण का शिर कटा हुआ दिखाया परन्तु यह लोग ध्यान से न डिगे, रावण को हज़ारों विद्या सिद्ध हुई, कुम्भकरण को पांच जिसमें निद्रा लाने वाली विद्या भी थी और विभीषण को चार, इस पर जम्बूद्वीप के स्वामी यक्ष ने इनकी बडी स्तुति करी, दिव्य आभूषण पहिनाये और रावण से कहा कि मैं तुझ से बहुत प्रसन्न हुआ तू वैरियों को जीतता हुआ सब जगह विहार कर मैं तेरे स्मरण मात्र से तेरे पास आऊगा तब तुझे कोई भी न जीत सकेगा।

नोट।

एक ही दिन के बालक का ऐसे हार को खींच लेना जिसकी हजार देव रक्षा करते हों बिलकुल असम्भव है, यदि यह कहा जावे कि उन देवों ने रावण को हारका मालिक समझ कर नही रोका तो उस हार के खीच लेने से सब ने यह कैसे समझ लिया कि यह कोई महान् शक्तिशाली पुरुष है इसके अलावा हार में एक रावण के दश शिर और बीस भुजा दिखाई नहीं दे सकती हैं हा अलग अलग दश रावण अवश्य दिखाई दे सकते हैं, इस कथन में जम्बूद्वीप के स्वामी यक्ष देव के वृत्तान्त पर बहुत अधिक शका उठती हैं, क्योंकि अव्वल तो यह ही समझ में नही आता कि वह किस प्रकार से जम्बूद्वीप का स्वामी था, फिर उसकी स्त्री ने और उसने क्यों इनके तप डिगाने की कोशिश करी, क्या वह इतनी सी बात भी नही जानते थे कि लाखों

करोड़ों विद्याधर सदा वनों में विद्या सिद्ध करते ही रहा करते हैं, इस यक्ष को इस बात पर क्रोध आना तो बहुत ही आश्चर्य की बात है कि मुझ जम्बूद्वीप के स्वामी को छोड़कर यह किस की आराधना कर रहे हैं, क्या कोई यह विश्वास कर सकता है कि ऐसी अटकलपच्चू बातें करने वाला और ख्वामख्वा क्रोध करके लोगों का तप डिगाने वाला जम्बूद्वीप का स्वामी होसकता है यदि वह जम्बूद्वीप का स्वामी होता तो उसका तो उलटा यह काम था कि वह उनकी रक्षा करता, फिर विद्या सिद्धि होजाने पर वह इनसे इतना राजी क्यों होगया कि दिव्य आभूषण भी दे गया और आगामी को सहायता का वादा भी कर गया, रामायण में रावण की तपस्या के विषय में लिखा है कि उसने ब्रह्माजी को प्रसन्न करने के वास्ते अपने शिर काट २ कर हवन कर दिये तब ब्रह्माजी ने उस पर प्रसन्न होकर उसको अनेक वर दिये और उसके शिर भी जोड़ दिये, मालूम होता है कि पद्मपुराण में ब्रह्मा के स्थान में जम्बूद्वीप के स्वामी यक्ष का कथन करके और रावण के आप ही शिर काटकर चढ़ाने के बदले में यक्ष के द्वारा रावण का कटा हुआ शिर उसके भाइयों को दिखाये जाने का कथन करके और ब्रह्मा से वर पाने के स्थान में इस यक्ष से वर मिलने का और अनेक विद्यायें सिद्ध होजाने का कथन कर दिया है परन्तु यक्ष देव के सम्बन्ध के इस कथन का जोड़ बिलकुल भी नही मिल सका है जिससे वह स्पष्ट बनावटी दिखाई देता है ।

रावण से मन्दोदरी का विवाह ।

रामायण मे लिखा है कि एक दिन रावण ने जङ्गल में मयदैत्य को देखा जिसके साथ मन्दोदरी उसकी कन्या भी थी जो हेमा नाम की अप्सरा से पैदा हुई थी मय उस कन्या के वास्ते वर ढूंढता फिर रहा था, इस कारण उसने वहीं पर रावण से उस कन्या का विवाह कर दिया, मय ने रावण को एक शक्ती भी दी जो उसने बड़ी तपस्या से प्राप्त की थी, पद्मपुराण मे यह कथा इस प्रकार लिखी है कि राजा मय दैत्य कहलाता था उसकी रानी हेमवती से मन्दोदरी पैदा हुई, राजा मय इस कन्या को लेकर रावण के पास गया, उन दिनों रावणने वन मे सूर्यहास खड्ग सिद्ध किया था इस वास्ते राजा मय उस ही वन मे गया और वहीं अपनी कन्या रावण को व्याह दी रावण ने हजारों रानी व्याहीं, एक रावण अनेक रूप धर कर अनेक स्त्रियों के महलोंमे कौतूहल करता था, कभी वह घोडा बन जाता था और कभी कुछ इस प्रकार वह अपनी रानियों को अनेक लीला दिखलाता था ।

नोट ।

रामायण के दैत्य और अप्सरा की कथा को पद्मपुराण में मनुष्यों की कथा तो बना दिया है परन्तु शोक है कि रावण के अद्भुत कृत्य दिखाकर उसको रामायण से भी अधिक अप्राकृतिक बना दिया है ।

रावण का एक साथ ६ हज़ार कन्याओं से गन्धर्व विवाह करना ।

पद्मपुराण में लिखा है कि एक दिन रावण मेघवर पर्वत पर गया वहा एक बावडी में छै हजार राजकन्या क्रीड़ा कर रही थी, रावण भी उनके बीच में जाकर क्रीडा करने लगा, यह सब कन्यायें रावण को देखकर कामबाण से बिंध गई, रावण ने उस ही वक्त उन सब से गन्धर्व विवाह कर लिया, कन्याओं के नौकरों ने उनके माता पिताओं को इस बात की खबर दी, उन्होंने रावण के मारने को फौज भेजी, रावण ने सारी सेना को जीत लिया, तब राजा सुरेन्द्र भारी सेना लेकर युद्ध को आया, खूब युद्ध हुआ, रावण ने उन सब को बांध लिया और कन्याओं ने विनती करके उनको छुडवाया फिर राजाओं ने अपनी इन कन्याओं को रावण से ही व्याह दिया ।

नोट ।

यह कामकथा रामायण में नही है, इस कथन पर हम इतना ही लिखना काफ़ी समझते हैं कि यह कथन सतयुग का नही होसकता है और यदि हो भी तो युवा पुरुषों और कन्याओं को यह कथन अत्यन्त ही हानिकारक है ।

हरिषेण चक्रवर्त्ती की कथा और रावण का हाथी पकड़ना ।

पद्मपुराण का कथन है कि रावण ने एक पर्वत पर हरिषेण चक्रवर्त्ती के बनाये हुए पद्मरागमणि के चैत्यालय देखे, रावण ने वहां जाकर जिनमन्दिरों को नमस्कार किया और सम्मेद शिखर पर डेरे डाले, यह हरिषेण राजा सिंहध्वज का बेटा था, जिसकी रानी विप्रा बडी धर्मात्मा थी और अष्टाह्निकाके दिनोंमें भगवानका रथ निकलवाया करती थी, राजा की दूसरी रानी लक्ष्मी राजा के मन चढी हुई थी

और मिथ्यामती थी, उसने कहा कि पहिले हमारा ब्रह्मरथ निकलेगा पीछे विप्रा का, विप्रा को इस बात से बड़ा दुःख हुआ, उसने प्रतिज्ञा करी कि यदि श्रीजिनेन्द्र का रथ पहिले न निकला तो मैं आहार न करूंगी, हरिषेण को अपनी माता का यह दुःख मालूम करके बडी शोच हुई परन्तु पिता के सामने कुछ न कर सका, इस वास्ते उदास होकर वन को निकल गया, घूमता २ वह शतमन्यू तापसी के आश्रम मे गया, उसी आश्रम में किसी राजा की रानी अपनी पुत्री मदनावली सहित ठहरी हुई थी, मदनावली हरिषेण को देखकर काम के बाणों से बींधी गई, हरिषेण भी उस पर आशक्त होगया, तापसियों को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने हरिषेण को निकाल दिया, एक नगर मे हरिषेण ने एक मस्त हाथी को वश किया जिससे वहां के राजा ने अपनी सौ कन्या उसको व्याह दी, फिर एक विद्याधर राजा की कन्या जयचन्द्रा हरिषेण पर आशक्त होगई और अपनी सखी के द्वारा उसको रात को सोते को ही अपने महल में उठवा मँगवाया, कन्या के पिता ने भी हरिषेण से उसका विवाह कर दिया, इस कन्या के मामा का पुत्र भी इस पर आशक्त था इस कारण उसने आकर हरिषेण से युद्ध किया परन्तु हारकर भाग गया, वहीं हरिषेण के चक्र आदि रत्न पैदा हुए और वह चक्रवर्ती होगया, तब वह बडी भारी फौज लेकर शतमन्यू तापस के आश्रम में गया और मदनावली को व्याह कर लाया, फिर ३२ हज़ार राजाओं को जीतकर अपनी माता के पास गया और अष्टाह्निका मे उसका रथ बड़े उत्सव के साथ निकलवाया और पृथिवी पर सब जगह जिनमन्दिर बनवाये, इधर रावण जब सम्मेद शिखर पर डेरा किये हुए था तो एक हाथी फ़ौज में आ घुसा जिससे सब घबरा गये, रावण के मन्त्री ने घबरा कर यहां तक कहा कि यह हाथी तो इन्द्र के भी वश में नहीं हो सकता है, परन्तु रावण ने उसको वश कर लिया, जिस पर देवों ने आकाश में जय जय शब्द किया और फूलों की वर्षा करी, रावण ने उस हाथी का नाम त्रैलोक्य मण्डल रक्खा।

नोट।

यह कथन रामायण में नहीं है, इस कथन पर बड़ा आश्चर्य इस बातका है कि रानी विप्रा जो अपना धर्मरथ पीछे निकलने पर आहार त्याग कर अपघात करने पर तैयार होगई थी उसको पद्मपुराण में किस प्रकार से बड़ी धर्मात्मा लिख दिया है, फिर सब से बडी आश्चर्य की बात यह है कि इस प्रकार आहार त्यागने पर वह उस वक्त तक जीती कैसे रही जबतक कि उसका बेटा हरिषेण चक्रवर्ती होकर और ३२

हजार राजाओंको जीतकर वापिस न आ लिया, इसके सिवाय हरिषेण सम्बन्धी जो कामकथा इसमें वर्णन की गई है वह युवा स्त्री पुरुषों के वास्ते बहुत हानिकारक है और भले घर की कन्या का किसी पुरुष पर आशक्त होकर उसको सोते हुए को अपने यहा उठवा मँगाना आदि महा घृणित और अति साहसके कृत्योंका बखान कदाचित् भी धर्मग्रन्थों में शोभा नहीं देता है और यदि ऐसी ऐसी कहानियां पढ़ना भी हानिकारक नहीं हैं तो फिर तो नाटक, स्वांग, तमाशे और सब ही गन्दे उपन्यास पढ़ने योग्य हो जावेंगे और कोई भी पुस्तक बुरी न रहैगी, आश्चर्य है कि रावण की सेना के महा सुभटों और विद्याधरों से एक हाथी भी न पकड़ा गया और जब रावण ने उसको पकड़ा तो स्वर्ग के देवताओं ने भी आश्चर्य किया, इस से स्पष्ट सिद्ध है कि रावण के कैलाश पर्वत को उठा लेने और अन्य विद्याधरों के अनेक अद्भुत कृत्य जो पद्मपुराण में वर्णन किये गये हैं वह सब कथनमात्र ही हैं वास्तव में तो उस समय के लोग भी ऐसे ही सीधे सादे और कमज़ोर थे जैसे कि आजकल के मनुष्य हैं।

रावण का यमराज को जीतना।

रामायण का कथन है कि आकाश में रावण को नारद मुनि मिले जिन्होंने रावण को यमराज को जीतनेको कहा रावणने उत्तर दिया कि हम तो इस समय नागों को जीतने के वास्ते रसातल को जारहे हैं, नारद ने कहा कि यमपुर होकर ही रसातल को जाओ, तब रावण यमपुर गया, वहा यमराज के यहां सब प्राणियों के कर्म के अनुसार उनको फल दिया जारहा था, बहुत से जीव नर्क में भेजे जारहे थे जहा वैतरनी नदी है, रावण ने उन सब को छुड़ाया और यम को जीतकर रसातल को गया।

पद्मपुराण में लिखा है कि आकाश मार्ग से एक विद्याधर रावण के पास आया और कहा कि आपके भरोसे पर बानरवंशी अपना किहकूपुर लेने को पाताल लंका से निकले थे, इन्द्र के लोकपाल यम से उनकी लड़ाई हुई बानरवंशी हारे कुछ भाग गये, कुछ पकड़े गये, यम ने एक बन्दीगृह बना रक्खा है, उस ही में वैतरनी नदी बनाई है और भी सब बातें नरक के समान बना रक्खी हैं, उस ही में उसने बानरवंशियों को कैद कर रखा है, यह सुन रावण ने यम पर चढाई करी, उसका बनाया हुआ नरक तोड़ा और सब को छुड़ाया, यम भागकर इन्द्र के पास गया, इन्द्र सुन लड़ने को तय्यार हुआ, परन्तु मन्त्रियों ने मना कर दिया, तब इन्द्र भोगों में लग गया और रावण दिग्विजय को आगे चल दिया।

नोट।

रामायणमें और हिन्दुओंके सब से प्राचीन वेदोंमें भी राक्षस, इन्द्र, यम आदि सुर असुर देवताओं के युद्ध का कथन किया गया है परन्तु पद्मपुराण में रामायण की इन सब कहानियों को लिखकर यह सिद्ध करने की कोशिश की गई है कि राक्षस असली राक्षस नही थे बलिक राक्षस नामधारी मनुष्य थे, वानर असली वानर नही थे, बलिक बानरवंशी थे, इस ही प्रकार दैत्य और यक्ष भी असली नही थे बलिक मनुष्य ही दैत्य और यक्ष कहाते थे, इन्द्र असली इन्द्र नही था बलिक उसने इन्द्र का स्वांग बना लिया था, इस ही तरह यम असली यमराज नही था बलिक उसने यमराज का सा रूप बना लिया था, गरज पद्मपुराणके अनुसार उस समय सारी ही दुनिया बहरूपिया बन गई थी, जिसकी असलियत दिखाने के वास्ते इतना बड़ा पद्मपुराण बनाने की जरूरत हुई, परन्तु हमारी समझ में तो महाकाव्य रूप रामायण की कपोल कल्पित कथाओं को असली सिद्ध करने के वास्ते पद्मपुराण की यह कोशिश कुछ कार्य्यकारी नही हुई है, क्योंकि हिन्दूधर्म के अनुसार तो यमराज ही सब जीवों को उनके कर्म के अनुसार फल देता है इस ही कारण यमपुरी में उसने नरक बना रखा है, परन्तु जैनधर्म के अनुसार ऐसा कोई यमराज नही है, तब पद्मपुराण के नक़ली यमराज ने जो अपने यहां नक़ली नरक और बेतरनी नदी बना रखी थी, वह किस यमराजकी नक़ल कर रखी थी, जब जैनधर्म के कथनके अनुसार ऐसा कोई यमराज है ही नहीं तो उसकी नकल भी नही हो सकती है जिससे स्पष्ट सिद्ध है कि न तो कोई असली यमराज था और न नक़ली बलिक पद्मपुराण ने रामायण के ही कथन पर नक़ली यमराज बना दिया है, परन्तु जैनग्रन्थ में इस नकली यमराज का कथन खपा नही है और बिल्कुल उधारा और ओपरा ही दीखता है।

बाली और सुग्रीव।

पद्मपुराण में लिखा है कि सूर्यरज के बाली और सुग्रीव दो पुत्र और श्रीप्रभा कन्या हुई और ऋक्षरज के नल और नील दो पुत्र हुए, रावण ने कहकन्धापुर तो सूर्य्यरज को और किहकूपुर ऋक्षरज को दिया था, सूर्यरज मुनि होगया, बाली राजा हुआ, रावण ने बाली से उसकी बहिन मांगी, बाली ने इन्कार किया, रावण ने उस पर चढ़ाई करी, बाली सुग्रीव को राज्य देकर मुनि होगया, सुग्रीव ने रावण को अपनी बहिन देकर उसको राजी कर लिया।

रामायण में बाली से उसकी बहिन के मांगने वा रावण के चढ़ आने का कोई कथन नहीं है, हां इतना जरूर लिखा है कि बाली और सुग्रीव दो सगे भाई थे और ऋक्षरज के बेटे थे और सूर्य के पुत्र कहाते थे, ऋक्षरज के मरने पर बाली कहकन्धापुर का राजा हुआ और सुग्रीव युवराज, नल नील और हनुमान आदि इनके मन्त्री थे, बाली ने सुग्रीव को राज्य से निकाल दिया और उसकी स्त्री सुतारा भी ले ली, फिर सुग्रीव ने रामचन्द्र की सहायता से बाली से युद्ध किया और राम ने बाली को मारकर सुग्रीव को राज्य दिलाया।

जैन महापुराण में भी यह कथन रामायण के अनुसार और पद्मपुराण के विरुद्ध इस तरह पर लिखा है कि बाली ने लोभवश होकर सुग्रीव को राज्य से निकाल दिया, तब सुग्रीव राम के पास गया, राम ने अपनी सीता के वास्ते रावण पर चढ़ाई करी, सुग्रीव को साथ लिया, बालीने राम को कहला कर भेजा कि अगर तुम सुग्रीव को अलग कर दो तो मैं अकेला ही रावण को जीतकर तुम्हारी सीता ला दूं, राम ने यह बात न मानी बल्कि सुग्रीव के वास्ते पहिले बाली ही पर चढ़ाई कर दी घोरसग्राम हुआ और बाली लक्ष्मणके हाथसे मारा गया और सुग्रीवको राज्य दिया गया।

नोट।

बहुत माननीय दो जैनग्रन्थों में इतना भारी कथन भेद होना बड़े ही आश्चर्य्य की बात है और ऐसी दशा में भी इन दोनों ग्रन्थों के कथन को सर्वज्ञ भाषित बताना इससे भी अधिक आश्चर्य्य है, स्पष्ट सिद्ध है कि महापुराण में यह कथन रामायण से ही लिया गया है और पद्मपुराण में इस स्थान पर रामायणके इस कथन को बदलने की कोशिश की गई है, परन्तु बात बनी नहीं है जैसा कि आगे दिखाया जावेगा।

रावण की बहिन का विवाह।

रावण की बहिन का नाम रामायण में सरूपनखा और पद्मपुराणमें चन्द्रनखा लिखा है और उसके विवाह की बाबत रामायण में तो केवल इतना ही लिखा है कि वह विद्युज्जिह्व दैत्य से ब्याही गई थी और खर और दूषण भी रावण के दो भाई बताये हैं, परन्तु पद्मपुराणमें लिखा है कि चन्द्रनखा पर खरदूषण आशक्त होगया था जो एक दिन मौका पाकर उसको हर ले गया सेना पीछे दौड़ी, रावण उस दिन घर नहीं था, कुम्भकरण और विभीषण ने सोचा कि खरदूषण पकड़ा नही जावेगा इस कारण सेना को हटा लिया, जब रावण ने घर आकर यह हाल सुना तो उसको बहुत क्रोध आया और युद्ध को तय्यार हुआ परन्तु मन्दोदरी ने समझा दिया कि

कन्या तो पराये घर की होती ही है, तब रावण भी चुप होरहा और उसने भी खरदूषणको अपना बहनोई मान लिया।

नोट।

हमको आश्चर्य्य है कि सतयुग मे कन्या को हर लेजाने या कन्या की तरफ से पुरुष के हरे जाने आदि के कथन जैन कथाग्रन्थों में ही इतने क्यों भरे हुए हैं, इसका कारण अवश्य खोजना चाहिये।

रावण का कैलाश पर्वत को उठाना।

रामायण का कथन है कि रावण पुष्पक विमान में बैठा हुआ जारहा था कि रम्य वन में विमान अटक गया रावण ने मारीच से इसका कारण पूछा, महादेवजी के अनुचर नन्दीश्वर ने कहा कि यहां महादेवजी विचरते हैं, यहा से विमान लौटा ले जाओ, इसपर रावण को क्रोध आया, विमान से उतरा और नन्दीश्वर का बानरों का सा मुख देखकर हँसा, नन्दीश्वर ने कहा कि हमको देखकर तू क्या हँसता है, हमारे ही वीर्य्य से सयुक्त बानर तेरा नाश करेंगे, इसपर रावण महा क्रोधायमान होकर कहने लगा कि हम इस तेरे पर्वतको ही उठाकर फेंके देते हैं, यह कह कर उसने अपने हाथ से पर्वतको उठाना शुरू किया पर्वत हिला, सब कांप उठे, तब महादेवजी ने लीला के तौरपर अपने पैर के अँगूठे से पर्वत को दबा दिया, रावणकी भुजा नीचे दब गई, रावण ने बड़ा शोर किया, उसके शोर से तीनों लोक कांप उठे, फिर रावण नें महादेवजी की स्तुति करी महादेवजी ने अँगूठा हटा लिया और कहा कि अब से तुम्हारा नाम रावण हुआ क्योंकि तुम बहुत रोये हो, अब तुम जिधर से चाहो चले जाओ, रावण ने कहा कि यदि तुम मुझ से प्रसन्न हुए हो तो एक दिव्य अस्त्र दो, तब शिवजी ने रावण को चन्द्रहास खड्ग दिया।

पद्मपुराण में यह कथा इस प्रकार लिखी है कि रावण ने विद्याधरों की सब ही रूपवती कन्या अपने पराक्रम से व्याहीं वह नित्यालोक नगर के राजा की कन्या को व्याह कर लङ्का जारहा था कि पर्वत पर पुष्पक विमान अटक गया, रावण ने मारीच से कारण पूछा, उसने कहा कि इस पर्वत पर मुनि होंगे जिनके प्रभाव से विमान अटक गया है, इस पर रावण मुनियों के दर्शन के वास्ते उतरा और वहां बाली मुनि को तप करते हुए देखा, देखते ही रावण को क्रोध आगया क्योंकि यह बाली मुनि वह ही सुग्रीव का भाई था जिसने अपनी बहिन रावण को देने से इनकार किया था, रावण ने मुनि को बड़े कठोर शब्द कहे और कहा कि मैं तुझ को कैलाश-

पर्वत समेत उठाकर समुद्र में डाल दूंगा, यह कहकर रावण ने विद्यावल से अपना महारूप किया, पाताल में पैठा और कैलाश के उखाड़ने का उद्यम किया, जिस पर सारा पर्वत हिल गया, देव आश्चर्य्य करने लगे, वाली मुनिने उस पर्वत के चैत्यालयों की रक्षा के वास्ते अपने पैरका अँगूठा जरा दबा दिया, रावण दब गया, उसके गोडे और जङ्घा छिल गई, रावण बहुत रोया, तब ही से उसका नाम रावण प्रसिद्ध होगया, देव दुन्दुभी बजाने लगे, फूलों की वर्षा हुई, आकाश में देव देवी नाचने लगे, मुनि ने अपना अँगूठा ढीला किया, रावण ने आकर क्षमा मागी, फिर चैत्यालय में जाकर भगवान की स्तुति करी और अपनी भुजा में से नस निकाल कर उसको तांतके स-मान बजाने लगा, रावण की ऐसी भक्ति से धरणेन्द्र का आसन कांपा, वह तुरन्त वहां आया और रावण से कहा कि जो तूने भगवान की स्तुति करी है उससे हम व-हुत प्रसन्न हुए हैं तू कुछ वर माग, रावण ने कहा कि जिनेन्द्र की भक्ति के सिवाय और कुछ नहीं मागता हूं, तौ भी धरणेन्द्र ने रावण को अमोघविजय शक्ति दी और कहा कि यह शक्ती तेरे शत्रुओं का नाश करने वाली है, इससे देव भी डरते हैं।

नोट।

यदि यह कथा भी सच्ची मानी जाने लगे तो फिर तो दुनियामें कोई बात असत्य नहीं कही जा सकेगी, फिर तो हनुमान का जन्म ने ही सूर्य को पकड कर अपने मुंह में रख लेने और पर्वत को उठाकर लङ्का में ले आने आदि की रामायण की अस-म्भव कथायें भी सम्भव हो जावेंगी और असम्भव से असम्भव किसी भी बात को असम्भव कहने का अधिकार नही रहैगा, विचारने की बात है कि कैलाश पर्वत को उठाकर फेंक देने के वास्ते रावण ने विद्यावल से जो अपना शरीर बहुत बडा बना लिया था तो उसका वह शरीर मायावी अर्थात् केवल दिखानेका बना था वा वास्त-विक, यदि सिर्फ मायावी ही बना था तो उसके द्वारा पर्वत नहीं उठाया जा सकता था और यदि वह शरीर ऐसा वास्तविक बन गया था जिसके द्वारा पर्वत उखाड़ा और उठाया जा सकता था तो हज़ारों कोस का लम्बा चौड़ा और मोटा वह शरीर दम की दम में कैसे बन गया, इतना स्थूल शरीर बनाने के वास्ते इतने पुद्गल पर-माणु कहां से आये और किस प्रकार से इतने परमाणु एकदम में हाड मांस और रुधिर आदि रूप बदल गये, जब रावण के शरीर ने कैलाश पर्वत को उठाने से प-हिले हज़ारों कोस लम्बा चौडा फैलना शुरू किया होगा तो उस शरीर को स्थान मिलने के वास्ते आसपास के अनेक पर्वत, नगर, ग्राम और वृक्ष आदिक तो कैलाश

पर्वत के हिलने से पहिले ही गिर पड़े होंगे और हिमवान आदि पर्वतों का तो यहां पता भी नहीं रहा होगा, शोक है कि पद्मपुराण में यह नहीं बताया गया कि रावण के शरीर के फैलनेमें जिन जिन पर्वतों को पृथिवी से हट जाना पड़ा होगा वह कहां जाकर पड़े और उन पर रहने वाले असंख्य जीवों की क्या दशा हुई और उन पर्वतों से निकलने वाली कौन कौन नदियां उन पर्वतोंके टूटनेके कारण बन्द होगईं, विचारने की बात है कि जब रावण को अपने शरीर के छोटा बड़ा करने की शक्ति थी यहां तक कि वह अपने शरीर को हज़ारों कोस लम्बा चौड़ा कर सकता था तो वह जरूर अपने शरीर को छोटे से छोटा भी कर सकता होगा तब जब कि बाली मुनि ने अपने अँगूठे से पर्वत को दबाया तो रावण रोया क्यों, उसको तो तुरन्त ही अपना शरीर हवा से भी ज्यादा सूक्ष्म और सूक्ष्म निगोदिया जीव के शरीर के बराबर कर लेना चाहिये था, इसके अलावा जब उसका शरीर हज़ारों कोस लम्बा चौडा ऐसा विशाल होगया था कि जिससे कैलाश पर्वत उखाड़ कर फेंक दिया जावे तो बाली मुनि के दबाने से उसका वह मायावी शरीर दबा था वा असली शरीर, यदि मायावी ही शरीर दबा था तो रावण इतना अधिक रोया क्यों और यदि बाली मुनि के अँगूठे के दबाव से वह पर्वत इतना नीचे बैठ गया था कि हजारों कोस लम्बा चौड़ा उसका सारा मायावी शरीर पिचक कर उसका असली शरीर भी दबने लगा था तो किसी तरह सम्भव नहीं हो सकता है कि इतने भारी पर्वत के दबाव से एक मनुष्य का शरीर बिल्कुल पिस जाने और चूर २ होजाने से बच जावे और केवल गोड़े और जड्डा ही छिलें ।

इस कथा में रावण को क्रोध आने और कैलाश पर्वत को उठाकर फेंक देने का कारण भी ऐसा बनाया है जो किसी तरह भी जी को नही लग सकता है क्योंकि अव्वल तो जैन महापुराण के कथन के अनुसार यह ही बात असत्य है कि बाली मुनि होगया था बल्कि महापुराण के कथन के अनुसार तो वह मरते दम तक राजा रहा और अन्त में उसने राम लक्ष्मण के साथ युद्ध किया जिसमें वह मारा गया, दूसरे पद्मपुराण के कथन के अनुसार ही जब बाली रावण के साथ युद्ध को छोड़कर मुनि होगया और जिसके कारण युद्ध होता था वह कन्या सुग्रीव ने रावण को देकर उसकी सेवकाई कर ली और अब भी रावण विमान से इस ही कारण नीचे उतरा था कि जिस मुनि महाराज के प्रभाव से मेरा विमान अटक गया है उनको नमस्कार करूं, फिर कोई कारण नही हो सकता है कि बाली मुनि को तपस्या करते देखकर रावण को इतना गुस्सा आवे कि वह मुनि को कैलाश पर्वत समेत समुद्र में

फेंक देने लगे, पद्मपुराण में तो रावण के धर्मात्मा होने और जैनधर्म की रक्षा करने की यहां तक तारीफ की है कि वह द्रव्यलिंगी मुनियों की भी शुश्रूषा करता था जहां मुनि सुनता था वहीं जाता था और उनकी भक्ति करता था और धर्मात्मा होनेके कारण उसका ऐसा महान् प्रभाव था कि जहां वह जाता था वहां बिना बोया अन्न पैदा होजाता था, इस वास्ते पद्मपुराण के इन कथनों के अनुसार ही उसको मुनि पर ख्वामख्वाह ही ऐसा गुस्सा आना बिल्कुल असम्भव ही था और जिस कैलाश पर्वत पर अनेक जिन चैत्यालय बने हुए थे उसको उखाड़कर फेंक देने का विचार आना ऐसे धर्म के रक्षक के वास्ते तो किसी तरह भी नहीं हो सकता है, हां जिस रामायण में उसको महादुष्ट और ऋषि मुनियों और देवताओं की अवज्ञा करने वाला बनाया है वहां नन्दीश्वर के यह कहने पर कि हमारे वीर्य्य से संयुक्त वानर ही तेरा सर्वनाश करेंगे उसको क्रोध आजाना शायद कुछ सम्भव भी होजावे परन्तु पद्मपुराण की तो यह कथा किसी तरह पर भी नहीं बन सकी है और महापुराणके कथनसे असत्य भी सिद्ध होती है जिससे स्पष्ट मालूम होता है कि रामायण से ही यह कथा पद्मपुराण में ली गई है परन्तु शोक है कि रामायण की असम्भव बातों और गप्पों को रद्द करने का बीडा जिस पद्मपुराण में उठाया गया था स्वयम् वह ही पद्मपुराण ऐसी असम्भव बातें कहने लगा है कि एक मनुष्य ने कैलाश पर्वत को हिला दिया और उखाड कर समुद्र में फेंकने लगा।

वीतराग भगवान की स्तुति करते समय रावण का अपनी बांह में से एक नस का निकाल लेना और उसको तांत के समान बजा बजा कर स्तुति गाना और भी ज्यादा अनोखी बात है, वीतराग भगवान की स्तुति करनेमें गाने बजानेको इतना मुख्य समझना कि कोई बाजा मौजूद न होने पर उसके वास्ते अपनी बाहको चीर कर उसमें से नस निकाली जावे, यह बात जैनधर्म के अनुसार तो किसी तरह भी ठीक नहीं हो सकती है, मालूम नहीं जब रावण ने अपनी बांह को चीर कर नस निकाली होगी तो खून भी निकला होगा या नहीं और वह खून उसके शरीर पर, वस्त्रों पर और जहां खड़ा हुआ वह स्तुति कर रहा था उस मन्दिर में भी पड़ा होगा या नहीं और रावणकी बांहमें से निकली हुई वह नस अपवित्र थी या नहीं और उस नस को हाथ में लिये हुए जिन मन्दिर में भगवान की स्तुति करना उचित भी था या नहीं और यह भी मालूम नहीं कि रावण की बांह का यह बड़ा भारी घाव कितने दिनों में भरा, अगर पद्मपुराण में यह सब बातें खोल दी जाती तो शायद यह कथा और भी ज्यादा अद्भुत् होजाती।

इस कथा में रावण की तरफ से वीतराग भगवान की स्तुति करने पर धरणेन्द्र का आसन कांपना बहुत ही आश्चर्यजनक है, यदि इस निकृष्ट पञ्चमकाल में नहीं तो चौथेकाल में तो सदा करोड़ों अनुव्रती और महाव्रती मनुष्य वीतराग भगवान की स्तुति रावण से भी अधिक करते रहते होंगे परन्तु किसी की भी स्तुति पर धरणेन्द्र का आसन नहीं कांपा और कांपा तो ऐसे रावण की स्तुति करने पर कांपा जो ख्वामख्वाह ही मुनि महाराज पर क्रोध करके उनको उस कैलाश पर्वत सहित समुद्र में फेंकने को तय्यार होगया था जिस पर अनेक जिन मन्दिर बने हुए थे मगर रावण के ऐसा दुष्कृत्य करते समय धरणेन्द्र का आसन कांपता और वह तुरन्त आकर कैलाश पर्वत को हिलने से बचा लेता तब तो कुछ बात भी थी परन्तु उस समय तो धरणेन्द्र के आसन ने टस से मस भी न किया और धरणेन्द्र को पता भी न हुआ कि क्या अनर्थ होरहा है, हां जब वह ही रावण भगवान की स्तुति करने लगा जो एक मामूली बात है तब धरणेन्द्र का आसन डगमगाने लगा, इससे स्पष्ट सिद्ध है कि रामायण में महादेव के द्वारा रावण को दिव्य अस्त्र मिलने का जो कथन है उसमें पद्मपुराण में महादेव का नाम बदल कर धरणेन्द्र का कथन कर दिया गया है और उस ही के हाथ से रावण को अमोघशक्ति नाम का दिव्य अस्त्र दिलवा दिया गया है, परन्तु जैनग्रन्थ में यह कथन बिलकुल ही ओपरा और बेजोड़ रहा है, क्योंकि वीतराग भगवान की वीतराग रूप स्तुति करनेके बदले में ऐसा जबरदस्त शस्त्र देना जिससे सब ही वैरी विध्वंस होजावें किसी तरह भी नहीं बनता है और येह भी नहीं कि रावण ने यह हथियार श्रीवीतराग भगवान वा धरणेन्द्र से मांगा हो बल्कि उसके जिनेन्द्र की भक्ति ही मांगने पर भी ऐसा हथियार देना किसी तरह पर भी नहीं बनता है, ऐसी बातें तो हिन्दुओं के देवताओं को ही शोभा देती हैं क्योंकि उनके कथनानुसार उनके तो सब ही देवता दुष्टों का नाश करते हैं और इस कार्य्य के लिये बड़े बड़े दिव्य अस्त्र रखते हैं; पद्मपुराण की इस कथा में तो यदि धरणेन्द्र का आसन कांपता और वह आता तो ऐसे दिव्य अस्त्र देने के बदले में वह तो रावणकी वह सब शक्तियां व विद्या ही हर लेता जिनके भरोसेपर वह ख्वामख्वाह ही मुनिमहाराज तक पर क्रोध करके पर्वतों तक को फैंक देने को उद्यमी होजाता था जिससे वह आगेको ऐसा उपद्रव न करने पावे, क्योंकि यहां ही यदि बाली मुनि को इतनी शक्ति न होती कि वह पर्वत को दबा सकते तो यह महान् कैलाश पर्वत समुद्रमें ही जा पड़ता, इस कारण धरणेन्द्र तो यह ही सोचता कि नमालूम फिर कब रावण को कैलाश आदि पर्वतों को समुद्र में फैंक देने का क्रोध आजावे और उस

समय कोई ऐसा ऋद्धिधारी मुनि पर्वतपर न हो जो पर्वतकी रक्षा करसके तो यह पर्वत समुद्रमें ही जा पड़ेंगें, ऐसा विचारकर धरणेन्द्र तो अवश्य ही उसकी सारी शक्तियां हर लेता और उनके बदले में ऐसी ही चीजें देता जो इस प्रकार उपद्रव कारी न हों।

सच तो यह है कि अव्वल तो जैन महापुराण ने ही पद्मपुराण की इस कथा को झूठा कर दिया है क्योंकि उसके अनुसार तो न बाली कभी मुनि हुआ और न कैलाश पर्वत पर जाकर रावण उसपर इस प्रकार क्रोधित हुआ बल्कि वह तो मरते दम तक राज्य ही करता रहा और राम लक्ष्मण से युद्ध करता हुआ ही मरा और यदि महापुराण से यह कथा इस प्रकार असत्य न ठहराई जाती तो भी जैनग्रन्थ में किसी प्रकार भी शोभा नही देती थी और साफ़ साफ़ रामायण से ही ली हुई मालूम होती थी, ऐसी ही ऐसी कथाओं से यह विचार निश्चय होता है कि राम रावण की यह कथा जैन कथा नही है बल्कि रामायण से ही ली गई हैं और कुछ अदल बदल कर इसको जैनकथा बनाने की कोशिश की गई है।

राजा सहस्त्ररश्मि से रावण की लड़ाई।

रामायण मे लिखा है कि रावण घूमता हुआ माहिष्मतीपुर पहुंचा और विन्ध्याचल पर्वत पर जाकर अपनी सेना को नर्वदा में नहाने के वास्ते कहा, नहाकर उन्होंने महादेवजी की पूजा के वास्ते फूलों का एक बहुत भारी ढेर नदी के किनारे लगाया, बालू की वेदी बनाकर उस पर महादेवजी की मूर्त्ति स्थापन की, रावण पूजा करने लगा, इस ही जगह से थोडी दूर पर वहा का राजा अर्जुन अपनी स्त्रियों सहित नर्वदा में क्रीड़ा कर रहा था, उसने नर्वदा का पानी अपनी क्रीडा के वास्ते रोक रक्खा था, क्रीड़ा समाप्त होने पर वह रोक हटा दी गई जिससे एकदम बहुत पानी बहा जिसके वेग से रावण की पूजा की सामिग्री बह गई, रावण ने मन्त्रियों से इसका कारण पूछा, उन्होंने सब हाल सुनाया, रावण को राजा पर क्रोध आया और युद्ध की आज्ञा दी, बड़ा भारी युद्ध हुआ, वह राजा सहस्रबाहु था इस वास्ते रावण के मन्त्री युद्ध से हारकर भाग गये, तब रावण ने स्वयम् युद्ध किया, राजा ने रावण को कैद कर लिया, पुलस्त्य मुनि ने स्वर्ग में रावण का पकडा जाना सुना यह मुनि रावण के पडदादा थे, इस वास्ते पुत्र स्नेह से वह मुनि राजा अर्जुन के पास माहिष्मती में आये और राजा से रावण के छोड देने के वास्ते कहा, राजा ने उसको छोड दिया, मुनि ने दोनो में मित्रता करा दी।

पद्मपुराण में यह कथा इस प्रकार लिखी है कि एक दिन रावण ने विन्ध्याचल पर डेरे किये, उस दिन महिष्मती नगर का राजा सहस्त्ररश्मि भी अपनी एक हज़ार स्त्रियों सहित नर्बदा मे जलक्रीड़ा करने को आया हुआ था, वह नदी का जल रोक कर अपनी स्त्रियों से केल कर रहा था, रावण ने भी इस से कुछ दूर फासले पर स्नान करके बालू का एक चबूतरा बांधा और उस पर अरिहन्त भगवान की प्रतिमा स्थापन करके पूजा करने लगा, जब राजा सहस्त्ररश्मि ने क्रीड़ा समाप्त करने पर पानी का बन्द तोड़ दिया तो एकदम बहुत पानी बहा जिससे रावण की पूजा में विघ्न हुआ, रावण ने अपने लोगों से कारण पूछा उन्होंने सब हाल कहा, रावण को क्रोध आया और राजा को पकड़ लेने की आज्ञा देकर पूजा करने लगा, खूब युद्ध हुआ राजा ने रावण की सेना को हराकर भगा दिया, तब रावण स्वयम् लड़ाई के वास्ते आया, बहुत युद्ध हुआ, आखिर राजा पकड़ा गया, राजा का पिता मुनि होगया था जिसको जङ्घाचारण ऋद्धि भी प्राप्त होगई थी, जब मुनि ने सुना कि उसका पुत्र पकड़ा गया है तो वह रावण के पास आया और रावण के युद्ध की बहुत प्रशंसा करके कहा कि राजा को छोड़ दो, रावण ने राजा को छोड़ दिया और अपना भाई बना लिया परन्तु वह राजा भी मुनि होगया।

नोट।

जैनधर्म के अनुसार अरिहन्त भगवान की पूजा अपने भावोंकी शुद्धि के वास्ते ही की जाती है न कि भगवान को राज़ी करने को, इस लिये पूजा के समय भावों का निर्मल रखना बहुत जरूरी है, परन्तु इस कथा में रावण पूजा भी करता जाता है और क्रोध करके राजा से युद्ध करने की आज्ञा भी देता जाता है जिसमें हज़ारों मनुष्यों का वध होता है और फिर वह युद्ध भी ख्वामख्वाह ही, क्योंकि राजा को क्या खबर थी कि रावण भी नदी के किनारे पूजन कर रहा है, वह तो बेचारा अपनी मौज में पानी को रोक कर अपनी स्त्रियों से क्रीडा कर रहा था, क्रीड़ा समाप्त होने पर पानी की रोक दूर कर दी जिसके वेग से रावण की पूजा में विघ्न हुआ तो इसमें बेचारे का क्या कसूर था, इससे स्पष्ट सिद्ध है कि यह कथा जैनकथा नहीं है बल्कि साफ़ २ हिन्दूकथा है और रामायण से ही लेकर महादेव की पूजा के स्थान में अरिहन्त भगवान की पूजा क़ायम की गई है परन्तु बात बनी नहीं है, कैसे आश्चर्य की बात है कि जिस प्रकार रामयण का मुनि अपनी सन्तान को छुडाने के वास्ते आया है इस ही प्रकार पद्मपुराण में भी ऋद्धिधारी दिगम्बर जैन मुनि का अपने बेटे के छुडाने के वास्ते आना और सर्व परिग्रह रहित मुनि के मुख से रावण के युद्ध की

तारीफ़ करना तक वर्णन कर दिया है और पद्मपुराण के सार रूप रामपुराण में तो यहा तक साफ़ लिख दिया है कि जब मुनि को अपने बेटे के क़ैद होजाने का हाल मालूम हुआ तो उसको बहुत दुख हुआ, इस कथा से कोई भी सन्देह इस विषय में बाक़ी नहीं रह जाता है कि यह कथा रामायण से ही ली गई है और जिस प्रकार पिछली कथा में बाली को मुनि बनाकर उस से मुनि पद के विरुद्ध कार्य्य कराना पड़ा है इस ही प्रकार इस कथन में किया गया है, सम्भव है कि ऐसी ही कथाओं के कारण भट्टारकों की सृष्टि हुई हो जो परिग्रही होकर भी जैन मुनि कहे जाते हैं और मुनि के समान ही माने पूजे जाते हैं, बल्कि यदि यह कहा जावे तो शायद अनुचित न होगा कि पद्मपुराण के रचे जाने के समय भट्टारकों की प्रथा शुरू होगई थी या अन्य प्रकार मुनि क्रिया में कमी आगई थी।

रावण के द्वारा राजा मरुत के यज्ञ का विध्वंस किया जाना।

रामायण का कथन है कि घूमते हुए रावण ने महाराजा मरुत को यज्ञ करते हुए देखा, सम्वर्त्त ऋषि यज्ञ करा रहे थे, रावण को देखते ही देवता लोग पक्षी होकर उड़ गये राजा मरुत रावण से युद्ध करने को तय्यार हुआ परन्तु सम्वर्त्त ऋषि ने रोक दिया, रावण की जय होगई और रावण के मन्त्रियों ने ऋषियों को भक्षण कर लिया।

पद्मपुराण में इस कथा को इस प्रकार लिखा है कि रावण ने सब राजाओं को जीतकर जैनधर्म और जैनियों का बहुत पालन किया, जो जैनधर्म के द्वेषी हिंसक मनुष्य थे उनको शिक्षा दी, सम्यक् दृष्टि श्रावकों का बहुत आदर किया, जो सम्यक्त रहित द्रव्यलिङ्गी मुनि श्रावक थे उनकी भी शुश्रूषा करी, वह जैनी मात्र का अनुरागी हुआ, रावण ने एकबार सुना कि राजपुर का राजा बहुत बलवान है, दुष्ट है और यज्ञ करता है, नारद विहार करता हुआ अकस्मात् राजा मरुत की यज्ञ भूमि में आ निकला, सम्वर्त्त ब्राह्मण यज्ञ करा रहा था, सैकडों पशु यज्ञ करने के वास्ते बंधे हुए थे, नारद ने हिंसायज्ञ की बुराई करके उनको बहुत कुछ समझाया और वादविवाद किया, सम्वर्त्त इस विवाद में हारा, इस पर ब्राह्मणों को क्रोध आया वह नारद को मारने लगे, उस समय रावण का दूत राजा मरुत के पास आया हुआ था, उसने तुरन्त ही रावण को इस बात की खबर दी, रावण तुरन्त सेना लेकर

आया, नारद को छुडाया, सब पशु छुडाये, यज्ञशाला तोड डाली, राजा को पकड़ लिया और ब्राह्मणों को ऐसा मारा कि वह अचेत होकर धरती पर गिर पडे, रावण के सब ही नौकर चाकर उन हिंसकों को मारने लगे, वह लोग विलाप करने लगे कि फिर हम ऐसा न करेंगे, रावण को बड़ा क्रोध आरहा था इस वास्ते वह उनको नहीं छोडता था, तब नारद ने दया करके उनको छुड़ाया, राजा मरुत ने रावण की बहुत खुशामद करी और अपनी पुत्री कनकप्रभा उसको दी।

नोट।

सम्यक्त रहित द्रव्यलिङ्गी मुनियों की शुश्रूषा करने वाले की प्रशंसा करने की तब ही जरूरत होती है जब कि अधिक मुनियों में शिथिलाचारता आजावे, ऐसे ही कथनों से आहिस्ता २ भट्टारकों की उत्पत्ति का होजाना सिद्ध होता है, संसार के अन्य सब ही मत तलवार के जोर से चलाये गये और सब ही मतवालों ने अपनी चलती में दूसरे मत वालों को अपना २ धर्म पालन करने की पूरी स्वतन्त्रता नही दी, किन्तु जैनियों को इस बात का घमण्ड है कि उन्होंने कभी ऐसा अन्याय नही किया बलिक केवल समझाने बुझाने से ही अपना धर्म चलाया परन्तु जैनियों का यह घमंड रावण की इस कथा से बिलकुल ही टूट जाता है जिसने ब्राह्मणों को मार मारकर भुस बना दिया, जैनधर्म तो यह कहता है कि चूहों को बचाने के वास्ते बिल्ली की हिंसा मत करो, इस ही प्रकार पशुओं को बचाने के वास्ते ब्राह्मणों को मारना भी जैनधर्मके अनुसार नही हो सकता है, यह कथा महापुराण और पद्मपुराणके उस कथन के भी विरुद्ध है जिसमें यह लिखा है कि ब्राह्मण चौथेकालमें तो ठीक ही रहेंगे परन्तु पञ्चमकाल में जैनधर्म के विरुद्ध कार्य्य करने लगेंगे।

महापुराण के कथन के अनुसार जब जनक ने हिंसामय यज्ञ करने का इरादा किया तो उसके सेनापति ने कहा कि कालासुर ने यज्ञ की यह नई विधि निकाली थी, नागासुर क्रोधी हैं वह मात्सर्य्य रखकर परकाजमें विघ्न करता है और धरणीधर ने नमिविनमि का उपकार किया हैं इस वास्ते विद्याधर लोग भी यज्ञ में विघ्न करने लगे हैं, यदि पहाड के विद्याधर विघ्न नहीं भी करेंगे तो रावण अवश्य विघ्न करैगा, इस वास्ते दशरथ के बेटे राम को बुलाना चाहिये जिससे वह हमारा सहाई होकर यज्ञ की रक्षा करे और हमारा यज्ञ निर्विघ्न समाप्त होजावे, जनक ने रामको बुलवाया और दशरथ ने यह बात जानकर भी कि राम हिंसामय यज्ञकी रक्षाके वास्ते बुलाया जाता है उसको जनक के पास भेजा, जनकका यज्ञ सम्पूर्ण हुआ और राम को सीता

उंयाही गई, महापुराणोंका यह कथन विश्वास-य.ग्य नही है क्योंकि तद्भव मोक्षगामी जैनी रामचन्द्र का ऐसे यज्ञ की रक्षा के वास्ते जाना जिसमें पशु और मनुष्य फूंके दिये जाते हों और दशरथ का राम को ऐसे यज्ञ की रक्षा के लिये भेजना और जनक का ऐसा यज्ञ करना किसी तरह भी ठीक नही बैठता है बल्कि जैसा कि हम आगे चलकर दिखावेंगे महापुराण में यह कथन भी रामायण से ही लिया गया है और पद्मपुराण में रावण के द्वारा राजा मरुतके यज्ञके विध्वंस करने का कथन भी रामायण से ही आया है, हां इन दोनों कथनों ने चौथेकालमें भी हिंसामय यज्ञ की प्रवृत्ति दिखा कर और साथ ही इसके यह भी बताकर कि ऐसे हिंसामय यज्ञ के करने वालों की कन्या राम रावण जैसे धर्मात्मा भी ले लेते थे चौथेकाल को बदनाम अवश्य कर दिया है।

रावण का धर्म प्रभाव।

पद्मपुराण का कथन है कि जहा २ रावण जा निकला उस देश में बिना बोये धान स्वयम् उत्पन्न हुए, पृथिवी अति शोभायमान हुई, जिस २ देश में रावण विचरै सब देश सर्व सम्पदा से पूर्ण होजावे, उसके राज्य में सर्दी, गर्मी भी लोगों को दुख न दे सके, पर्वत जल अग्नि आदि की भी किसी प्रकार की बाधा प्रजा को न हो।

नोट।

सारे ही पद्मपुराण में रावण का कोई भी कृत्य ऐसा नही दिखाया गया है जिससे यह इतनी बडी तारीफ के योग्य होता बल्कि उसका दूषण यहां तक भारी दिखाया है कि परस्त्री लम्पट होने के कारण उसने केवली भगवानके सन्मुख भी यह प्रतिज्ञा ली, कि जबरदस्ती किसी परस्त्री के साथ भोग नही करूंगा और यह भी बताया है कि यह प्रतिज्ञा उसने इस विचार से ली थी कि कोई भी परस्त्री ऐसी नहीं हो सकती है जो मेरे साथ भोग करने पर राजी न हो, इस कारण मेरी इस प्रतिज्ञा से मेरे परस्त्री सेवन में कोई भी बाधा न पडैगी, इसके अतिरिक्त सीता को हर ले जाना, और घर ले जाकर उसको अनेक प्रकार डराना और फुसलाना भी उसने जबरदस्ती करने में नही गिना और इससे अपनी प्रतिज्ञा का भङ्ग होना नही समझा, यहां तक कि उसने अपनी रानी मन्दोदरी को अपनी अन्य अठारह हज़ार रानियों के साथ सीता के पास भेजा कि वह भी सीता को पर पुरुष के साथ भोग करने पर राजी करें और उन्होंने सीता के पास जाकर ऐसी कोशिश की भी, ऐसे पुरुष का इस प्रकार ऐसा महाप्रभाव वर्णन करना हमारी समझ में तो इस कथा के पढने सुनने वालों पर कुछ अच्छा प्रभाव नही डालता है।

इसके अतिरिक्त रावण की इस प्रशंसा में असम्भव को भी सम्भव करके दिखा दिया है यहां तक कि उसकी प्रजा के सब मनुष्यों के पापों को भी पुण्य रूप बदल दिया है और यह भी उन लोगों के शुभ कर्मों के कारण नहीं बल्कि रावण के पुण्य प्रताप के कारण और रावण के पुण्य प्रताप को यहां तक चढ़ाया है कि आग पानी वायु आदि को भी उसके आधीन कर दिया है, जैन सिद्धान्त में तो निमित्त-कारण को जीवों के कर्म के आधीन नहीं रखा है परन्तु पद्मपुराण में रावणको ऐसी शक्ति-सी मिल गई है।

राजा मधु की कथा।

रामायण में लिखा है कि मधु एक दैत्य था जो माल्यवान की दोहती कुम्भीनसी को हर ले गया था, रावण ने क्रोध में आकर मधु पर चढ़ाई करी, कुम्भीनसी रावण के पैरों में पड़ गई और कहा कि मेरे पति मधु को मत मारो, इस पर रावण राजी होगया, मधु के पास एक शूल भी था जो महादेवजी ने प्रसन्न होकर उसको दिया था और कहा था कि जो कोई तुम से युद्ध करेगा उसको भस्म करके त्रिशूल तुम्हारे पास आ जावेगा।

पद्मपुराण का कथन है कि रावण ने अपनी कन्या कृतचित्रा मधु को व्याही, इस मधु के पास असुरों के इन्द्र चमरेन्द्र का दिया हुआ एक त्रिशूल था जिसका वार वैरियों पर वृथा नहीं जाता था, त्रिशूल पाने की कथा पद्मपुराण में इस प्रकार लिखी है कि सुमित्र और प्रभव दो दोस्त थे, सुमित्र राजा हुआ और प्रभव दरिद्री ही रहा, तौ भी सुमित्र उसकी सब तरह से खातिर ही करता था, एकवार सुमित्र एक सुन्दर स्त्री व्याह कर लाया जिसको देखकर प्रभव आशक्त होगया, सुमित्र को भी यह बात मालूम होगई इस कारण उसने अपनी स्त्री को प्रभव के पास भेजी और कहा कि अगर तू मेरे दोस्त का कहना पूरी तरह से मानकर उसको राजी करके आवेगी तो मैं तुझको एक हजार गाव दूंगा नहीं तो दण्ड दूंगा, वह स्त्री प्रभव के पास गई, राजा भी प्रभव के मकान में जा छिपा, जब प्रभव को मालूम हुआ कि राजा ने अपनी स्त्री मेरे पास भेजी है तो वह बहुत लज्जित हुआ और तलवार से अपघात करने को तय्यार होगया, परन्तु तुरन्त ही राजा ने निकल कर उसका हाथ पकड़ लिया और उसको मरने से बचा लिया, पीछे राजा तो मुनि हुआ और मर कर स्वर्ग गया और वहा से आकर यह मधु राजा हुआ और प्रभव का जीव कई योनियों में जन्म लेकर अन्त में चमरेन्द्र हुआ और पहिली मित्रता के कारण मधु को यह त्रिशूल देगया।

नोट।

महादेव का मधु को त्रिशूल देना तो कोई बेजोड़ बात नहीं है क्योंकि हिन्दू धर्म के अनुसार वह त्रिशूल रखता भी है और अपनी मौज में जिस किसी को जो चाहे दे भी देता है परन्तु जैनधर्मानुसार चमरेन्द्र का मधु को त्रिशूल देना एक अचम्भे की ही बात है, इसके अतिरिक्त जैनपुराण की इस कथा पर बहुत ही अचम्भा होता है कि सतयुग में स्त्रियों पर कैसे २ जुल्म होते थे, यहां तक कि पति भी अपनी स्त्री को लाचार करता था कि तू मेरे मित्र के पास जा जो तुझ पर आशक्त होगया है और उसको राजी करके आ, नही तो दण्ड पावेगी, इस कथा को तो सुनकर ही रोंगटे खड़े होते हैं और कभी भी विश्वास नहीं होता है कि सतयुग में ऐसा होता हो और यदि सतयुग ऐसा ही भयानक था तो नही मालूम उसकी कहानियां सुनाकर क्या लाभ निकाला जाता है।

राजा नलकूवर से रावण का युद्ध।

रामायण के अनुसार मधु के पास से रावण कुवेर के यहां कैलाश पर गया वहां रात को किन्नरियों ने गाना गाया जिसको सुनकर रावण को काम उत्पन्न हुआ वहां रम्भा अप्सरा जारही थी रावण ने उसको पकड़ लिया अप्सरा ने कहा कि तुम्हारे भाई कुवेर के पुत्र नलकूवर की मैं अप्सरा हूं और उस ही के पास जारही हूं, रावण ने कहा कि देवलोक में कोई नियत स्त्री नही होती है इस वास्ते हमारा तुम्हारा कोई नाता नहीं है और अप्सराओं का कोई एक पति होता भी नहीं है, ऐसा कहकर रावण ने रम्भा से भोग किया, रम्भा ने नलकूवर से सब हाल कहा, उसने रावण को श्राप दिया कि वह किसी स्त्री से जबरदस्ती भोग न कर सके, यदि करे तो उसके शिर के सात टुकड़े होजावें।

पद्मपुराण का कथन है कि रावण ने कैलाश पर डेरा किया, दुर्लंघपुर में नलकूवर इन्द्र का लोकपाल था, उसने रावण के भय से सौ योजन ऊंचा विद्यामय कोट बनाया जिसमें भयानक अग्नि की लपट निकलें और भयङ्कर वैताल के रूप नज़र आवें जो एक योजन दूर तक के मनुष्य को निगल जावें, रावण के मन्त्री इस कोट को देखकर घबराये, नलकूवर की स्त्री उपरम्भा इन्द्र की अप्सरा रंभा के समान सुन्दर थी वह पहिले से ही रावण पर आशक्त थी, जब उसने रावण को अपने नगर के निकट आया सुना तो उसने अपनी सखी विचित्रमाला को रावण के पास भेजकर भोग की इच्छा प्रगट की, रावण ने अव्वल तो परस्त्री सेवन से इनकार

किया परन्तु जब विभीषण ने समझाया कि उसको छल से यहां बुलाकर उससे इस मायावी कोट के तोड़ने का भेद लेना चाहिये तब रावण ने उपरम्भा को अपने डेरे पर बुलवा लिया और फुसला कर उससे कोट के तोडने का भेद लेकर वापस भेज दिया, रावण ने कोट को तोडा और नलकूवर से युद्ध किया, रावण की जीत हुई, तब रावण ने उपरम्भा को शील का उपदेश दिया और चला गया।

नोट।

रामायण में तो पुरुष का कुशील दिखाया था परन्तु पद्मपुराण में स्त्री की कामाशक्ति दिखाई गई है और रावण को शीलवान सिद्ध किया है जो पद्मपुराण के अन्य कथनों के विरुद्ध है इस वास्ते यह ही मालूम होता है कि रामायण से ही यह कथा बनाई गई है।

रावण का इन्द्र से युद्ध।

रामायण का कथन है कि रावण इन्द्र के साथ लड़ने क वास्ते अपनी सेना लेकर इन्द्रलोक में गया, इन्द्र विष्णु के पास गया, विष्णु ने कहा कि रावण को वर है इस वास्ते वह तुम से नही मारा जावेगा, तो भी इन्द्र रावण से लडा, बडा भारी युद्ध हुआ, रावण की तरफ़ से सुमाली भी लडा, रावण का बेटा मेघनाद भी लड़ा इधर इन्द्र का बेटा जयन्त भी मुक़ाबिले पर आया, रावण का रथ सर्पों से वेष्टित था, आख़िर मेघनादने इन्द्र को पकड़ लिया और लङ्का ले गया, तब देवतागण ब्रह्मा को लङ्का लेगये, रावण ने ब्रह्मा के कहने से इन्द्र को छोड़ दिया ब्रह्मा ने मेघनाद का नाम इन्द्रजीत रखा और उसको वर दिया।

पद्मपुराण का कथन है कि रावण इन्द्र से लड़ने के वास्ते वैताड़ पर्वत पर जाकर पड़ा, इन्द्र ने अपने पिता सहस्रार से सलाह करी, उसने कहा कि रावण अधिक बलवान है इस वास्ते अपनी रूपवती कन्या देकर उससे मेल क र लो, इन्द्र ने न मानी और युद्ध किया, बड़ा भारी युद्ध हुआ, रावण की तरफ से माल्यवान का बेटा श्रीमाली खूब लड़ा, इन्द्र का बेटा जयन्त भी लड़ा, इधर रावण का बेटा इन्द्रजीत भी लडा, रावण ने नागबाण चलाया जिससे इन्द्र की सारी सेना को नाग लिपट गये, इन्द्र ने गरुड़ बाण चलाया, गरुड़ों के पीत पङ्खों से आकाश पीत होगया और पङ्खों की पवन से रावण का लश्कर हिल गया, आख़िर रावण ने इन्द्र को बांध लिया और रावण के पुत्र इन्द्रजीत ने इन्द्र का बेटा जयन्त बांधा, रावण इनको लेकर लङ्का मे आया, इन्द्र का पिता सहस्रार उदासीन श्रावक था, इन्द्र के लोग सहस्रार

को लेकर लङ्का आये, रावण ने सहस्रार के कहने से इन्द्र को छोड़ दिया, फिर इन्द्र को वैराग्य आया और वह मुनि होगया।

नोट।

रावण के नागवाण से इन्द्र की सारी सेना को नागों का चिपट जाना और इन्द्र के गरुडवाण से नागों का भाग जाना और उन गरुड़ों के पङ्खों से सारा आकाश पीले रङ्ग का होजाना और पङ्खों की पवन से सारा लश्कर हिल जाना बिल्कुल ही असम्भव बात है, रामायणमें विष्णु की सवारी गरुडकी बताई गई है और विष्णु की लडाई मे कथन किया गया है कि विष्णु की सवारी के गरुड के पङ्खों से सारा आकाश पीला होगया और उसके पङ्खों की पवन से बैरी का सारा लश्कर व्याकुल होगया, मालूम होता है कि रामायण के इस कथन को ही यहा पद्मपुराण में लिख दिया है परन्तु जैनग्रन्थों में ऐसी गप्प किसी प्रकार भी शोभा नही देती है।

इन्द्र की हार का कारण।

रामायण के कथनानुसार ब्रह्मा ने इन्द्र से कहा कि रावण से तुम्हारे हारने का कारण यह है कि तुमने गौतम का रूप बनाकर उसकी स्त्री अहिल्या से भोग किया था, इस पर गौतम ने तुमको शाप दिया था जिससे तुम्हारी यह दशा हुई है, पद्मपुराण में इस बात को इस तरह लिखा है कि इन्द्र को मुनि महाराज ने उसका पूर्व भव सुनाया जिसमें उन्होंने बताया कि एक राजा की कन्या अहिल्या ने स्वयम्वर में राजा अनन्दपाल को बरा था, तू इस बात से बहुत नाराज हुआ और अनन्दपाल का बैरी होगया, वह राजा मुनि होगया, तूने उसको मुनि अवस्था में देखकर उसकी बहुत हँसी उडाई, उसके साथ उसका भाई कल्याण मुनि भी था, उस मुनि ने क्रोध में आकर तुझसे कहा था कि तू क्या हँसी करता है, तेरा भी पराभव होगा, उस समय तेरी स्त्री सर्वश्री ने मुनि की पूजा करके उनको शान्त किया था।

रामपुराण में लिखा है कि मुनि की इस नाराजी के कारण ही इन्द्र रावण से हारा था।

नोट।

हिन्दुओं के ऋषि गौतम की तरह जैनमुनि का भी श्राप देना किसी तरह भी नही बनता है और स्पष्ट मालूम होता है कि रामायण की कथा को ही बदलकर जैनकथा बनाने की कोशिश की गई है परन्तु बन नहीं सकी है।

रावण की धर्म प्रतिज्ञा।

पद्मपुराण में लिखा है कि एकबार रावण एक केवली भगवान के समोसरण में गया, धर्म सुना, अनेक पुरुषों ने नाना प्रकार के व्रत लिये, एक मुनि ने रावण को भी कोई व्रत लेने के वास्ते ज़ोर दिया, रावण ने यह विचार करके कि सर्व लोक में ऐसी कौन रूपवती नारी है जो मुझे देखकर कामवश न होजावे यह नियम लिया कि परनारी की इच्छा बिदून मैं उससे भोग नहीं करूंगा।

नोट।

आश्चर्य्य है कि ऐसे परस्त्री लम्पट के धर्म प्रभाव की पद्मपुराण में क्यों बड़ी भारी तारीफ़ की गई है, ऐसा पुरुष चाहे कितना भी धर्म का पक्ष रखता हो और विधर्मियों से लड़ता हो वा धर्म की बाह्यक्रिया करता हो परन्तु धर्मात्मा नहीं हो सकता है, ऐसे पुरुष की भी तारीफ़ करने से नुक़सान ही होता है और अधर्म ही फैलता है और लाभ कुछ भी नहीं होता है।

* दूसरा अध्याय *

हनुमान का जन्म।

रामायण का कथन है कि हनुमान का पिता केसरी जहां राज्य करता था वह सूर्य के वरदान से सोने का होगया है और सुमेरु पर्वत उसका नाम है, पुञ्जकस्थला नाम की एक अप्सरा जिसको अञ्जना भी कहते थे केसरी की पत्नी थी, वह अपने रूपसे त्रैलोक्य में विख्यात थी, एक ऋषि के शाप से वह बानरी होगई थी, वह कुञ्जर बानर की कन्या थी, यौवन अवस्था में वह एक दिन मनुष्य रूपमें सुन्दर वस्त्राभूषण पहिने हुए पर्वत पर घूम रही थी कि पवनदेव को उसका सुन्दर शरीर दृष्ट पड़ गया वह उसपर मोहित होगये और कहा कि हम तुम्हारा पातिव्रत नष्ट नहीं करते हैं बल्कि मनसे ही तुम्हारा भोग करते हैं, जिससे तुम्हारे अति पराक्रमी पुत्र होगा, यह सुनकर वह प्रसन्न हुई और एक गुफा में उस अञ्जना ने एक पुत्र जन्मा जो हनुमान हुआ, बच्चा जनकर वह फल लेने के वास्ते वन में चली गई, सुबह का समय था निकलते हुए सूर्य को देख हनुमान उसको लेनेके वास्ते आकाश में उछला और सूर्य के पास पहुंच गया, उस दिन सूर्य ग्रहण था, सूर्य ने हनुमान को नहीं जलाया, हनु-

मान ने राहु को नीचे गिरा दिया, राहु इन्द्र के पास शिकायतनी गया, इन्द्र सूर्य के पास आया, हनुमान फिर राहु की तरफ झपटा, इन्द्रने वज्र मारा, हनुमाने पर्वत पर गिर पडा, उसकी बांई ठुड्डी टूट गई इस ही से हनुमान उसका नाम हुआ, इस पर पवनदेव को बडा क्रोध आया वह हनुमान को मरा हुआ समझ उसको गोद में लेकर गुफा में जा बैठा, पवनदेव के गुफा में बैठ जाने से संसार में वायु का सञ्चार न रहा, सब जीवों का सांस बन्द होगया, सब देवता घबराकर ब्रह्मा के पास गये ब्रह्माजी पवन के पास आये, पवनदेव ब्रह्मा के पैरों पर गिर पडा, ब्रह्मा ने पवनदेव का उठाया, हनुमान को हाथ लगाया जिससे हनुमान जी उठा, तब पवन का भी संसार,में सञ्चार हुआ, सब देवताओं ने हनुमान को वर दिया।

पद्मपुराण में यह कथा इस प्रकार लिखी है कि आदित्यपुर नगर के राजा के पुत्र का नाम पवनकुमार था और एक राजा महेन्द्र की कन्या का नाम अञ्जना था अष्टान्हिका पर्व मे यह दोनो राजा परिवार सहित कैलाश पर्वतकी यात्राको गये, वहां उन्होंने पवनकुमार और अञ्जना की सगाई कर दी और विवाह भी शीघ्र ही कर देना ठहर गया, परन्तु पवनकुमार अञ्जना की तारीफ सुनकर उसपर ऐसा आशक्त हुआ कि विवाह से पहिले ही उसके देखने का तड़पने लगा, लाचार, इसका मित्र इसको गुप्त रीति से अञ्जना के महल में लेगया और वहा एक खिडकी से अञ्जना दिखा दी, अञ्जना की सहेलियां उस समय विवाह की बातें कर रही थी, किसी सहेली के मुख से पवनकुमार की बुराई निकली, यह बात होते हुई देखकर पवनकुमार को अञ्जना पर अत्यन्त क्रोध आया, अव्वल तो उसने चाहा कि उससे विवाह ही न कराऊं परन्तु फिर सोचा कि विवाह कराकर छोड देना अच्छा होगा, इस वास्ते विवाह करा लिया परन्तु विवाह के पीछे अञ्जना का नाम तक न लिया; कई वर्ष इस ही तरह बीत गये, एकवार पवनकुमार वरुण और रावण के युद्ध में रावण की सहायता को गया, वहां एक सरोवर के किनारे ठहरना हुआ, वहां रात को चकवा चकवी के विरह का तड़पना देखकर उसको अञ्जना का प्यार आया, वह रातों रात वहां से अपने नगर को आया, अञ्जना के पास गया, उससे भोग करके रातको ही युद्धस्थान को लौट गया, अञ्जना को गर्भ रह गया, जब अञ्जना के सास ससुर को इस गर्भ का हाल मालूम हुआ तो उन्होंने अञ्जना को व्यभिचारिणी समझकर निकाल दिया, अञ्जना अपने पिताके पास गई परन्तु वहां भी ठिकाना न मिला, तब वह अपनी एक बांदीके साथ जङ्गल में चली गई और एक गुफा में जा बैठी, रात को एक सिंह उस गुफा में आया, अञ्जना बहुत घबराई तब गुफा के गन्धर्वदेव ने अपनी स्त्री के कहने

से अष्टापद का रूप बनाया और सिंह को हटाया, फिर उस देव ने अरिहंत की स्तुति में खूब गीत गाये और अनेक बाजे बजाये जिनको सुनकर अञ्जना भी आनन्दित होती रही, अञ्जना ने उस गुफा मे मुनि सुव्रतनाथ की प्रतिमा पधराकर सुगन्धित द्रव्यों से उसकी पूजा करी, वहां अञ्जना से हनुमान का जन्म हुआ, हनुमान के जन्म से गुफा का अन्धकार जाता रहा, प्रकाश होगया, उस समय आकाश मे सूर्य के तेजके समान एक विमान जा रहा था, वह स्त्रिया विमानसे घबराकर रोने लगी, इनका रोना सुनकर विमान का स्वामी आकाश से उतरा, इनका सब हाल पूछा, वह राजा प्रतिसूर्य था जो हनुरुह देशका राजा था और अञ्जना का मामा था, वह इनको विमान में बिठाकर अपने घर लेगया, रास्तेमें हनुमान अपनी माता की गोदसे उछला (रामपुराण मे लिखा है कि वह विमान के चमकदार मोती तोडने उछला था) उछलकर वह एक पर्वत पर पड़ा, जिसके पड़ने से पर्वत चूर २ होगया, और हनुमान खेलता हुआ अपना अँगूठा चूसने लगा यह बात देखकर सबको आश्चर्य हुआ सबने बालक को नमस्कार किया, बालक को उठाकर हनुरुहद्वीप में लेगये, वहीं उसका जन्मोत्सव किया और इस ही कारण हनुमान उसका नाम रखा।

जब पवनकुमार युद्ध से वापस आया और अपनी स्त्रीके निकाल देने का हाल सुना तो वह बहुत दुखी हुआ और उसकी तलाश में निकला और सारी पृथ्वी पर ढूंढता फिरा, जब पवनकुमार को अञ्जना का कहीं पता न मिला तो वह एक वन में मौन धारण करके बैठ रहा और इस ही तरह बैठे २ प्राण त्याग देने का इरादा किया पवनकुमार का पिता पवनकुमार को ढूढ़ने निकला और उस ही वन में जा पहुंचा उसने पवनकुमार का मौन तोडनेके वास्ते बहुत कुछ उपाय किये परन्तु कुछ न हुआ इतने में अञ्जनाका मामा भी पवनकुमार को ढूंढता हुआ वहां आ पहुंचा, उसने पवनकुमार के कान में अञ्जना के मिल जाने का समाचार सुनाया, तब ही पवनकुमार ने मौन तोड दिया और घर गया।

महापुराण के कथनानुसार हनुमान अञ्जना सुन्दरी प्रभञ्जन का पुत्र था जिसको पवन भी कहते थे, हनुमान ने तीन विद्या सिद्ध की और परीक्षाके वास्ते अपना एक पैर सूरज तक पसार दिया और फिर त्रसरेणु के बराबर छोटा कर लिया तब से उसका नाम हनुमान पडा, वह सुग्रीव का सखा था।

नोट।

इसमें तो कोई सन्देह नहीं है कि रामायण की अटकलपच्चू गप्पें पद्मपुराण में नहीं हैं परन्तु ऐसी बातों से खाली पद्मपुराण भी नहीं है, रामायण की इन अद्भुत कथाओं को लेने में पद्मपुराण को भी बहुत सी गप्पें और असम्भव बातें लेनी

पडी हैं, विचारने की बात है कि एक दिन के बालक के पर्वत पर गिर पडने से यदि पर्वत के टुकडे २ होजाने और बालक को जरा भी चोट न आने की कथा सच है तो सूरज और राहू को पकडने के लिये झपटने और राहू के डरकर भाग जाने की कथा भी झूठी नहीं हो सकती है, और यदि गुफा के देवता का अष्टापद का रूप धारण करके सिंह से लडने की कथा सच है तो पवनदेव का कोई रूप बनाकर अञ्जना के साथ भोग करने की कथा भी झूठी नहीं मानी जा सकती है, हनुमान के जन्मने पर गुफा में प्रकाश होजाना और विमान को जाते देखकर स्त्रियों का इतने जोर २ से रुदन करने लग जाना कि विमान तक भी आवाज जावे, यह सब ऐसी बातें हैं जो किसी प्रकार भी विश्वास नहीं की जा सकती हैं रही महापुराण की बात सो उसमें तो हनुमान की टांग का धुर सूरज तक ही पहुंचा दिया है और फिर उसको सिकोडकर अणुमात्र बना दिया है इस वास्ते इस गप्प का तो कुछ ठिकाना ही नहीं है गरज जैनकथा ग्रन्थ भी गप्पों से खाली नहीं है।

हरिवंश की उत्पत्ति।

पद्मपुराण में राजा जनकको हरिवंशी वर्णन किया है और हरिवंश की उत्पत्ति इस तरह लिखी है कि सुमुख नाम के एक राजा ने अपने नगर के सेठ वीरक की स्त्री वनमाला पर आसक्त होकर उस स्त्री को अपनी स्त्री बना लिया, इस राजा और सेठानी ने एक दिन मुनि को आहार दिया जिसके पुण्य से वह मरने पर विद्याधर विद्याधरी हुए, सेठ वीरक भी अपनी स्त्री के विरह में मुनि होगया था और मरकर स्वर्ग का देव हुआ था, उस देवने इन विद्याधर विद्याधरी को हरिक्षेत्र में क्रीडा करते देखा और पूर्व जन्म की बात याद आने से क्रोधित होकर इन दोनों को उठाकर दूर देश में पटक दिया, वहां यह विद्याधर हरि के नाम से प्रसिद्ध हुआ और इसका वंश हरिवंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

मनुष्य भक्षी सौदास की कथा।

रामायण में राजा दशरथ को इक्ष्वाकुवंश में लिखा है और इस वंश के एक राजा सौदास का वर्णन इस प्रकार किया है कि राजा सौदास के पुत्र वीर्य्यसिंह ने यज्ञ कराया था, उसकी समाप्ति पर एक धोके के कारण गुरु को मनुष्य का मांस खिलाया गया जिसपर गुरु ने नाराज होकर श्राप दिया जिससे १२ वर्ष तक उस राजा का भोजन मनुष्य का मांस ही रहा, १२ वर्ष के बाद वह ठीक होगया और फिर राज्य करने लगा।

पद्मपुराण में यह कथा इस प्रकार लिखी है कि इक्ष्वाकुवंश में एक राजा सौदास हुआ है जिसका पिता मुनि होगया था और जिसकी माता सिंहिका बहुत

धर्मात्मा थी परन्तु सौदास को मांस खाने की बहुत धन होगई थी, यहां तक कि राजा ने अपने रसोइये को अष्टान्हिका के दिनों में भी मांस बनाने को कहा, रसोइये ने बहुतेरा कहा कि आजकल सारे नगर में कहीं भी मांस नहीं मिल सकता है परन्तु राजा ने एक न मानी, लाचार वह रसोइया मसान भूमि से एक मरे हुए बालक को उठा लाया और पकाकर राजा को खिला दिया, राजा को वह मांस बहुत पसन्द आया इस कारण नित्य मनुष्य का ही मांस पकाने की आज्ञा दी, रसोइया नित्य नगर के बालकों को मार मार कर पकाने लगा और राजा को खिलाने लगा, आखिर लाचार होकर नगर वालों ने राजा को निकाल दिया और उसके बेटे सिंहरथ को राजा बना दिया, सौदास पृथिवी पर घूमता हुआ मसान भूमि से मरा बालक उठा उठा कर खाने लगा, फिर एक मुनि के उपदेश से उसने श्रावक के व्रत लिये और फिर वह एक नगर का राजा भी होगया, उसने अपने बेटे को अपना मातहत बनाना चाहा, बेटे ने नहीं माना, तब उसने अपने बेटे पर चढ़ाई करी और बेटे को जीतकर मुनि होगया उस ही की सन्तानमें राम और लक्ष्मण हुए, (रामपुराणमें यद्यपि पद्मपुराण का ही सार है परन्तु नहीं मालूम कहां से उसमें रसोईदार के स्थान में कुण्डपाल कोतवाल का कथन कर दिया है जिसको राजा ने अष्टान्हिका के दिनों में मांस लाने को कहा और उसने मांस न मिलने पर एक मरे हुए बालक को खूब मसाले डालकर पकाया और राजा को खिलाया, तब से राजा ने उस ही कोतवाल को आज्ञा दी और वह ही नित्य एक बालक को मारकर राजा को खिलाने लगा,)।

नोट ॥

रामपुराण में कुण्डपाल कोतवाल का नाम आने से यह ही सिद्ध होता है कि कथाओं के लिखने में ग्रन्थकारों को मनमानी लिखने की आज़ादी रही है, यदि पद्मपुराण की यह कथा सत्य है और एक मांस भक्षी ही नहीं बल्कि मनुष्य भक्षी भी और मनुष्यके मांस खानेका ऐसा भक्ती भी जिसने राज छोडना मंजूर किया परन्तु मनुष्य का मांस खाना नहीं छोडा, जैनमुनि हो सकता है, तो कोई वजह नहीं है कि वह शूद्र जिसने जन्म दिन से कभी भी मांस न खाया हो बल्कि जिसकी पिछली सात पीढी ने भी मांस न खाया हो और जो अनेक पीढियोंसे अनुव्रती श्रावक होता चला आया हो वह मुनि न होसके, कुछ हो हमको तो यह कथा जैनियोंकी कथा मानते भी लज्जा आती है और यह ही विश्वास होता है कि रामायण से ही यह कथा लीगई है और ज़बरदस्ती ही इसको जैनकथा बना दिया है।

* तीसरा अध्याय *

राजा दशरथ का केकई को वर देना ।

रामायण का कथन है कि एकबार वैजयन्तपुर में इन्द्र की शम्बर असुर से लडाई हुई थी, उस में दशरथ भी इन्द्र की सहायता को गया था और अपनी रानी केकई को भी साथ लेगया था, शम्बर ने दशरथ के सारथी को मारडाला, तब केकई ने स्वयम् रथ चलाया और दो वार राजा को बचाया, दशरथ ने प्रसन्न होकर रानी को दो वर दिये, रानी ने कहा कि मैं जब चाहूंगी वर ले लूगी ।

पद्मपुराण का कथन है कि एकबार नारद ने दशरथ और राजा जनक से आकर कहा कि रावण को यह मालूम हुआ है कि तेरी मौत जनक की कन्या के कारण दशरथ के पुत्र के द्वारा होगी, इस वास्ते उसके भाई विभीषण ने यह प्रतिज्ञा की है कि मैं जनक और दशरथ को उनके सन्तान होने से पहिले ही मार डालूगा, नारद की यह बात सुनकर जनक और दशरथ अपने अपने रूप का एक पुतला अपने २ महल में रखकर और अपने को बीमार प्रसिद्ध करके गुप्तरूपसे देशान्तर को चले गये, परदेश में एक जगह केकई का स्वयम्बर होरहा था, यह लोग भी वहा चले गये, केकई बडी विद्वान् चतुर और धर्मात्मा थी, उसने दशरथ के गले मे वरमाला डाली, इस पर अन्य राजाओं ने युद्ध किया, दशरथ बडी बहादुरी से लडा, उस युद्ध में केकई ने दशरथ का रथ हांका और बड़ी चतुराई से हाका जिससे प्रसन्न होकर दशरथ ने उसको दो वर दिये और उसने कहा कि जब चाहूगी ले लूगी, इधर विभीषण इन राजाओं के रूप के पुतलों को असल राजा समझकर उनका शिर काट कर लेगया और जनक और दशरथ को मरा समझ रावण वेखौफ होगया, राजा जनक और दशरथ भी अपने २ नगर में आकर राज्य करने लगे ।

नोट ।

रामायण की इस कथा से स्पष्ट सिद्ध है कि हिन्दू लोग इन्द्र आदिक देवोंको मनुष्यों के ही समान मानते थे तब ही तो राजा दशरथ इन्द्र की सहायता को युद्ध में गया, यह ही बात वेदों और हिन्दुओं के प्राचीन ग्रन्थों से मालूम होती है, प्रसिद्ध इतिहासकार और लेखक जगन्मोहन वर्मा ने भी अनेक युक्तियों से अपने पक

लेख में जो "सरस्वती" में प्रकाशित हुआ है यह सिद्ध किया है कि अधिक शक्तिशाली मनुष्य ही इन्द्र आदिक देवता कहलाये और उन ही को पीछे से वेद आदिक ग्रन्थों में गा गाकर लोगों ने पूजा, इस से सिद्ध है कि जैन ग्रन्थकारों ने रामायण के इन्द्रादिक देवताओं के मनुष्य के समान कार्यों और मनुष्यके समान ही उनकी लडाइयों और हार जीत को असम्भव मानकर उनके स्थान मे इन्द्र आदि देवता की नकल करने वाले मनुष्य राजा स्थापन करने में व्यर्थ ही श्रम किया है, इस कथा में हमको सब से बड़ा आश्चर्य्य तो इस बात का है कि जैनकथा ग्रन्थों ने प्रायः किसी भी स्वयम्वर को ऐसा नही छोडा है जिसमे युद्ध न हुआ हो, यहां तक कि महापुराण में इस युग के सब से पहिले अर्थात् सुलोचना के स्वयम्वर में भी महायुद्ध होने का कथन किया है, परन्तु ऐसी नीच दशा सतयुग की किसी प्रकार भी नहीं हो सकती है बलिक स्वयम्वर की रीति बन्द होने से कुछ दिनों पहिले ही ऐसे फिसाद पैदा होने शुरू हुए होंगे और इस ही फिसाद से लाचार होकर स्वयम्वर जैसी उत्तम रीति बन्द करनी पडी होगी अर्थात् यह बातें इस निकृष्ट कलिकालकी ही हैं।

विभीषण का राजा जनक और दशरथ के पुतलों को असल मान लेना और उन पुतलों का शिर काट कर संतुष्ट होजाना किसी तरह भी विश्वास में नहीं आ सकता है और फिर जनक और दशरथ का अपने २ नगर मे आकर राज्य करने लग जाना और यह निश्चय होजाना कि अब हमारे जीते रहने की रावण को खबर न होगी और रावण को भी इनके राज्य करते हुए भी इनके जीते रहने की खबर न मिलना किसी तरह भी नहीं माना जा सकता है, विशेष कर ऐसी दशा में जब कि रावण विद्याधर था (जो आकाश मार्ग से पल की पल में कही से कही चले जाते हैं) और दिग्विजय करता हुआ, राजाओं की सुन्दर कन्या लेता हुआ और अनेक तीर्थों की यात्रा करता हुआ सदा फिरता रहता था।

राम आदि का जन्म।

रामायण के अनुसार तो दशरथ की रानी कौशिल्या से रामचन्द्र, सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न और केकई से भरत का अयोध्या में जन्म हुआ, परन्तु पद्मपुराण के अनुसार अयोध्या में कौशिल्या से रामचन्द्र, सुमित्रा से लक्ष्मण, केकई से भरत और चौथी रानी सुप्रभा से शत्रुघ्न का जन्म हुआ और जैन महापुराण के अनुसार बनारसमें रानी सुबालासे रामचन्द्र और केकईसे लक्ष्मण हुआ और फिर अयोध्या में अन्य दो रानियों से जिनका नाम नही वर्णन किया गया है भरत और शत्रुघ्न हुए,

महापुराण के अनुसार राम लक्ष्मण के जन्म के समय राजा दशरथ बनारस में ही राज्य करता था, पीछे राम लक्ष्मण के जवान होने पर दशरथ को यह विचार आया कि सगर आदि हमारे पूर्वज विनीता अर्थात् अयोध्या में राज्य करते थे इस वास्ते वह अयोध्या गया और वहां राज्य करने लगा, वहा जाने पर भरत और शत्रुघ्न हुए।

नोट।

इतना भारी कथन भेद इन कथा ग्रन्थों पर से बिल्कुल विश्वास हटा देने वाला है।

सीता का जन्म।

रामायण का कथन है कि मिथिला देश जो विदेह के नाम से भी प्रसिद्ध था उसके राजा जनक ने एक यज्ञ किया था जिसकी समाप्ति पर उसने यज्ञ की रीति के अनुसार खेत में हल वाहा, वहा उसको धरती में से एक कन्या मिली जिसको उसने अपनी पुत्री बना लिया, हल जोतने से धरती में जो लकीर होजाती है उसको सीता कहते हैं, उस ही मेंसे वह निकली थी इस वास्ते सीता ही उसका नाम रख दिया गया।

पद्मपुराण में इसके विपरीत यह लिखा है कि सीता राजा जनक की रानी विदेह के गर्भ से पैदा हुई है और उस ही गर्भ से एक साथ एक पुत्र भी पैदा हुआ जिसका नाम पीछे से भामडल रखा गया, इस भामण्डल को पैदा होते ही एक देव उठा लेगया था।

जैन महापुराण में इसके भी विपरीत यह लिखा है कि रावण की स्त्री मन्दोदरी से लङ्का में सीता पैदा हुई उसके जन्मके समय धरती कापी और अनेक उत्पात हुए, इससे सब ने रावण का नाश समझा इस कारण रावण ने मारीच मन्त्री से कहा कि इसको दूर छोड आओ और मारीच उसको एक सन्दूक में बन्द करके और कुल हाल लिखकर मिथिला के जङ्गल में गाड आया, लोगों को धरती खोदते हुए यह सन्दूक मिला जिसको वह राजा जनक के पास ले गये, राजा ने सन्दूक खोला कन्या निकाली, सब हाल पढा और उसको अपनी पुत्री बनाकर अपनी रानी वसोधा को दी जिसने उसको पाली, इस ग्रन्थ में भामण्डल का कोई कथन नही है मानो वह कोई था ही नही।

रामपुराण में जिसके कर्त्ता ने स्वयम् लिखा है कि मैं यह ग्रन्थ पद्मपुराण का ही संक्षेप रूप लिखता हूं इस से भी विलक्षण यह लिखा है कि सीता तो रावण की स्त्री मन्दोदरी के ही गर्भ में पैदा हुई परन्तु गर्भ के दिनो मे मन्दोदरी के ऐसे भाव होते थे कि शस्त्र से रावण को काट डालूं इस वास्ते इसके पैदा होने पर वह मारीच के द्वारा सन्दूक में बन्द करके मिथिला मे गाडी गई तब ही इधर जनक की स्त्री से भामण्डल पैदा हुआ, जिसको देव उठा लेगया, एक किसान को हल जोतते हुए सन्दूक मिला जो राजा जनकको दिया गया और उसने इसमे से कन्या निकाल कर अपनी रानी विदेह को दी और सीता नाम रखा।

नोट।

जैनकथा ग्रन्थों मे इतना कथन भेद होने पर भी इनको सर्वज्ञ भाषित जिन वाणी मानना वास्तव मे जिनवाणी को ही बदनाम करना है और पद्मपुराण द्वारा ही बने हुए रामपुराण के इस कथन से तो स्पष्ट ही सिद्ध है कि ग्रन्थकारों ने इनको मामूली कथा कहानी मान कर जैसा चाहा गढ़ दिया है।

रामचन्द्र और सीता के पूर्वभव।

रामायण मे तो रामचन्द्र और सीता के पूर्वभव की बाबत सिर्फ इतना ही लिखा है कि राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न यह चारों ही विष्णु भगवान के अवतार हैं और सीता का जीव इस जन्म से पहिले कुशध्वज ब्रह्मर्षिकी कन्या वेदवती थी, वह बहुत ही सुन्दर थी, इस कारण यक्ष गन्धर्व और राक्षस सब ही उसकी इच्छा करते थे परन्तु उसका पिता उसको विष्णु भगवान को ही देना चाहता था, इस बात से दैत्यों का शुम्भ बहुत नाराज़ हुआ और उसने कन्या के पिता को मार डाला, इस पर वह कन्या विष्णु को अपना पति बनाने के वास्ते तपस्या करने लगी रावण उसको तपस्या करती को देखकर उस पर आशक्त होगया, उसने वेदवतीको बहुत कुछ समझाया परन्तु वह राज़ी न हुई, इस पर रावण ने उसके बाल पकड़कर उसको अपनी तरफ घसीटा जिससे उसके बाल कट गये, इस पर वह कन्या अग्नि मे जल मरी और निदान किया कि मैं अपने तप के बदले में बिना योनि के पैदा होकर रावण का नाश करूं, इस ही कारण वह धरती में से उत्पन्न हुई।

पद्मपुराण में यह कथा इस तरह पर लिखी है कि सीता का जीव एक जन्म में श्रीभूत ब्राह्मणकी वेदवती नामकी कन्या थी जो बहुत रूपवती थी, अनेक राजाओं ने इस कन्या की इच्छा की परन्तु श्रीभूत ने किसी को भी न दी, आखिर शुम्भ

नाम का एक राजपुत्र इस पर अधिक आशक्त होगया और उसने वेदवती की प्राप्ति की बहुत कोशिश की परन्तु वेदवती का पिता सम्यक्ती श्रावक था और शुम्भ मिथ्यात्वी इस वास्ते वेदवती का पिता किसी तरह भी अपनी कन्या उसको देने को राजी न हुआ तब शुम्भ ने क्रोध मे आकर वेदवती के पिता को मारडाला और वेदवती को पकड कर उससे जबरदस्ती मैथुन किया, वेदवती ने क्रोध मे आकर कहा कि पापी मैं ही तेरे नाश का कारण हूगी, फिर कई जन्म के पीछे शुम्भ का जीव तो रावण हुआ और वेदवती सीता हुई।

महापुराण का यह कथन है कि विजयार्ध में अलकापुरी के राजा अमितवेग की कन्या मणिवती वन में विद्या सिद्ध कर रही थी, पुलस्त्य का बेटा रावण भी वन क्रीडा के वास्ते अपनी स्त्रियों सहित वहां चला गया, और मणिवती को देखकर उस पर आशक्त होगया और उस कन्या की सिद्ध विद्या हर लेगया, कन्या ने राप करके १२ वर्ष तप किया और निदान किया कि मैं इसकी पुत्री होकर इसके प्राण हरू, इस पर वह कन्या मरकर रावण की रानी मन्दोदरी के गर्भ से पैदा हुई।

रामायण और महापुराण मे तो यह उपरोक्त कथा सीता के एक ही भव पहिले की कथा है परन्तु पद्मपुराण ने वेदवती की इस कथा को सीता के कई जन्म पहिलेकी कथा बताया है और लिखा है कि वेदवती आर्य्यका होकर तप करने लगी और मरकर स्वर्ग गई फिर वहा से चित्तोत्सवा नाम की राजकन्या हुई, इस ही राजा के परोहित का बेटा पिङ्गल चित्तोत्सवा पर आशक्त होगया और यह उसके साथ भाग गई, भागकर यह दोनों विदग्ध नगर में गये और एक जङ्गल मे रहने लगे, पिङ्गल लकडी काटकर वेच लाता था जिससे इनका गुजारा होता था, एक दिन उस नगर के राजा का पुत्र कुण्डलमण्डित इस चित्तोत्सवा पर आसक्त होगया और इसको दूती के द्वारा अपने यहा बुलाकर अपनी रानी बनाली, पिङ्गल इस स्त्री के वास्ते बहुत कुछ भटका और आखिर को मुनि होगया, अन्त राजा कुण्डलमण्डित और उसकी रानी चित्तोत्सवा दोनों मरकर एक साथ जनक की रानी विदेहा के गर्भ में आये और सीता और भामण्डल नाम के पुत्र पुत्री हुए।

पद्मपुराण में सीता के पूर्व जन्म की बाबत वेदवती से भी पहिले की कथा इस प्रकार लिखी है कि एकवार रामचन्द्र का जीव तो धनदत्त बनिया था और लक्ष्मण का जीव वसुदत्त उसका भाई था और विभीषण का जीव यज्ञवली नाम का इनका मित्र था, सीता का जीव गुणवती नाम की एक बनिये की कन्या थी, भामण्डल का जीव गुणवान इस कन्या का भाई था गुणवती की सगाई धनदत्त से हो-

गई थी परन्तु रावण का जीव श्रीकान्त भी जो एक महा धनवान सेठ था इसको चाहता था, इसने गुणवती के भाई को गुणवती का विवाह अपने साथ कर देने पर राजी कर लिया, यह बात यज्ञवली को मालूम होगई, उसने वसुदत्त को खबर दी जिसने श्रीकान्त को मारडाला, इस पर लोगों ने वह कन्या धनदत्त का भी न ब्याहने दी वह बिना ब्याही ही रही और पाप परिणाम से ही मरी, धनदत्त अनुव्रती श्रावक हुआ और समाधिमरण कर स्वर्ग गया और अन्य सब मरकर अनेक त्रियञ्च योनियों में भ्रमे, गुणवती भी उन ही योनि की त्रियञ्चनी होती रही जिसके कारण यह सब लड लड कर मरते रहे फिर कई जन्म के पश्चात् गुणवती का जीव वेदवती हुआ।

पद्मपुराण मे वेदवती के बाद और चित्तोत्सवा होने से पहिले के सीता के एक जन्म की कथा इस प्रकार लिखी है कि विमुचि नाम का एक दरिद्री ब्राह्मण था अनुकोशा उसकी स्त्री थी और अतिभूत उसका पुत्र था जिसकी स्त्री का नाम सरसा था, कयान एक परदेशी ब्राह्मण भी अपनी माता सहित वहा आ रहा था, एक दिन विमुची तो अपनी स्त्री सहित भिक्षा मांगने गया था, पीछे कयान सरसाको ले भागा और अपनी माता को भी साथ ले गया, अतिभूत उनके पीछे दौडा, विमुचि वापस आकर अपनी स्त्री सहित उनको ढूढने को निकला, मार्ग में विमुचि तो मुनि होगया और अनुकोशा आर्य्यका होगई, कयान की माता भी आर्य्यका होगई, मरकर यह तीनों स्वर्ग गये, अतिभूत और कयान ने दुर्गति पाई, सरसा मृगी हुई, फिर वह ही सरसा तो चित्तोत्सवा हुई, कयान पिङ्गल ब्राह्मण हुआ, अतिभूति राजा कुण्डलमण्डित हुआ, विमुचि राजा चन्द्रगति हुआ जिसके यहा जाकर भामण्डल पला और और अनुकोशा उसकी स्त्री पुष्पवती हुई और कयान की माता जनक की रानी विदेहा हुई।

रामचन्द्र के पूर्वभव की बाबत पद्मपुराण का कथन है कि अनेक बार देव और मनुष्य होकर रामचन्द्र का जीव विदेह की क्षेमपुरी नगरी के राजा विपुलवाहन की रानी पद्मावती के पुत्र हुआ, वह बडा पुण्यवान और प्रतापी राजा हुआ, एक दिन समाधिगुप्त मुनि उस नगर मे आये, राजा श्रीचन्द्र धर्मोपदेश सुन कर अपने बेटे ध्वजकान्ति को राज्य देकर मुनि होगया, मरकर पाचवें स्वर्ग का ब्रह्मेन्द्र हुआ और वहा से आकर रामचन्द्र हुआ, पद्मपुराण में लक्ष्मण के पूर्व भव की बाबत यह लिखा है कि वह राजा पुनर्वसु विद्याधर होकर तीसरे स्वर्ग गया और वहा से आकर लक्ष्मण हुआ।

, जैन महापुराण में इसके विपरीत यह लिखा है कि रामचन्द्र का जीव मलय देश में रत्नपुर नगर के राजा प्रजापति का पुत्र चन्द्रचूल था और लक्ष्मण का जीव उस ही राजा के मन्त्री का बेटा विजयकुमार था, इन दोनों में बडी भारी मित्रता थी, परन्तु यह दोनों दुश्चरित्री होगये, उस ही नगर में वैश्रवण नाम का एक बनियां रहता था, कुवेरदत्ता जिसकी कन्या थी वह श्रीदत्त को व्याही गई परन्तु वह बहुत रूपवती थी इस वास्ते राजपुत्र उसके हरने को उद्यमी होगया, लोगों ने राजा से शिकायत करी, राजा ने उसका शूली पर चढाने का हुक्म दिया, मन्त्री इन दोनों को वन में लेगया वहा वह दोनों एक मुनि का उपदेश सुनकर मुनि होगये और बहुत तप किया, परन्तु चन्द्रचूल ने हरि बलभद्र का प्रताप देखकर ऐसा ही होने का निदान किया, मरकर यह दोनों तीसरे स्वर्ग गये और वहां से आकर राम लक्ष्मण हुए।

नोट।

जिस राम और सीता की यह कथा है उन ही के विषय में इन दोनों ग्रन्थों में इतना भारी कथन भेद होने से शोक है कि यह दोनों ग्रन्थ विश्वास के योग्य नहीं रहे, और विशेष शोक इस बात का है कि इन कथाओं से रामचन्द्र और सीता के पूर्व भव ही कलङ्कित नहीं हुए हैं बल्कि सतयुग भी महाकलङ्कित होगया है और इससे यह कथा बिलकुल भी विश्वास के योग्य नहीं रही है, क्योंकि सतयुग का समय ऐसा नहीं हो सकता है जैसा कि इन कथाओं में दिखाया गया है, इन कथाओं को सतयुग की कथा मानने से इस कलिकाल के लोगों पर बहुत बुरा असर पडता है।

भामण्डल का हरण।

पद्मपुराण का कथन है कि चित्तोत्सवा पर आशक्त पिङ्गल ब्राह्मण का जीव जो देव होगया था वह जनक की स्त्री विदेहा के गर्भ का ६ महीने तक इन्तजार करता रहा कि कब राजा कुण्डलमण्डित का जीव इसके यहा पुत्र पैदा हो और मैं उससे अपने वैर का बदला लूं; आखिर जब सीता और भामण्डल पैदा हुए तो वह देव भामण्डल को उठा ले गया और मारने का इरादा किया, फिर हिंसा का खयाल करके और दया भाव धारण करके उसको कुण्डल आदि अनेक दिव्य आभूषण पहनाकर धरती पर छोड दिया जिसको रथनुपुर के राजा चन्द्रगति ने उठाया और अपनी रानी पुष्पवती को दिया जिसने उसको पुत्र बनाकर पाला, देव के दिये हुए आभू-

पर्णों के कारण धरती पर गिरता हुआ वह बालक बहुत चमक रहा था इस वास्ते प्रभामण्डल उसका नाम रखा गया।

नोट।

यह कथा रामायण मे नहीं है और जैन महापुराण के कथन से असत्य सिद्ध होती है क्योंकि महापुराण के अनुसार तो राजा जनक के यहां न सीता पैदा हुई और न कोई भामण्डल, बल्कि सीता भी उसको धरती में से ही मिली, इसके अलावा इस कथा में बड़ा आश्चर्य्य इस बात का है कि जिस भामण्डल से बदला लेने के वास्ते देव नौ महीने तक इन्तज़ार करता रहा उसका उठाकर लेजाने पर दया आगई और दया भी ऐसी आई कि उसको स्वर्ग के दिव्य आभूषण भी पहना दिये यहां तक कि कुण्डलों को पहनाने के वास्ते कान भी बींधने पडे होंगे, परन्तु शोक है कि उस देव को यह दया न आई कि आज के ही जन्मते इस बालक को इसकी माताके पास ही छोड़ आऊ स्वर्ग के इन आभषणोंका पहनानेके बदले यदि वह देव उसको उसकी माता के पास छोड आता तो बेशक दया मानी भी जाती परन्तु इस कथा मे तो महा दया करके चमकदार आभूषण भी पहनाये और वहीं धरती पर छोड भी दिया जिससे यदि वह राजा के वा किसी अन्य मनुष्य के हाथ न लगता तो बेचारा एक दिन का बालक मर ही जाता इससे स्पष्ट सिद्ध है कि कथा का जोड़ नहीं मिल सका है और यह कथा विश्वास करने के योग्य नहीं बनी है।

सीता का राम से विवाह।

रामायण मे लिखा है कि ब्रह्मऋषि विश्वामित्र ने राजा दशरथ से आकर कहा कि हमारे यज्ञ में राक्षस आकर विघ्न करते हैं, रावण उन राक्षसों को भजता है तुम अपने पुत्र रामचन्द्र को हमारे साथ भेज दो, वह ही हमारे यज्ञ की रक्षा कर सकता है, दशरथ ने राम को बालक समझ भेजने से इनकार किया परन्तु जब वशिष्ठजी ने समझा दिया कि वहां जाने से राम को लाभ ही होगा तब उसने राम और लक्ष्मण दोनों को विश्वामित्र के साथ कर दिया, मार्ग में राम ने ताडका नाम की राक्षसी को मारा जो देशको उजाड़ती थी और मनुष्योंको भक्षण करती थी, विश्वामित्र ने राम को बहुत से दिव्य अस्त्र दिये और अनेक विद्यायें दी, फिर राम ने मारीच राक्षस को अपने बाण से चार सौ कोस दूर फेंक दिया और सुबाहु राक्षस को मारडाला, इस प्रकार विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करी, फिर विश्वामित्र इनको

राजा जनक के यज्ञ में ले गया, राजा जनक के यहां एक अद्भुत धनुष था, विश्वामित्र ने जनक से कहा कि राम को अपना धनुष दिखाओ, जनक ने कहा कि राजा नमि की छटी पीढी में एक देवरात राजा हुआ जिसको महादेवजी ने यह धनुष धरोहर दिया था, तब से यह यहा रखा है और हमने यह प्रतिज्ञा कर रखी है कि जो कोई इस धनुष को चढावेगा उस ही को हम अपनी सीता विवाह देंगे, अब तक कोई भी इस धनुष को नहीं चढ़ा सका है यहां तक कि सब राजा मिलकर भी इस धनुष को नही चढा सके हैं, यह कह कर राजा जनक ने धनुष को राम के पास मँगाया जिसके लाने में पांच हज़ार महायोधा लगे, राम ने वह धनुष सहज ही में उठा लिया और जब खेंच कर चढ़ाने लगे तो टूट गया, जिससे पृथिवी कांप उठी और पर्वत फट गये, तब जनक ने अपनी कन्या राम को देनी चाही, परन्तु राम ने कहा कि पिता की आज्ञा बिदून हम नही विवाह सकते, तब राजा दशरथ भी वहां बुलाये गये, जनक ने अपने भाई कुशध्वज को बुलाया और राम को सीता और अपनी दूसरी कन्या उर्मिला लक्ष्मण को और, विश्वामित्र के कहने से अपने भाई की दो कन्या एक भरत को और दूसरी शत्रुघ्न को विवाह दी, आकाश में देवताओं ने नगारे बजाये, फूलों की वर्षा करी और गा बजाकर खूब हर्ष मनाया, वहा से लौटते हुए मार्ग मे परशुराम मिले, उसने राम को जनक के धनुष के साथ का दूसरा धनुष जो विष्णु महाराज का था राम को दिया सब लोग अयोध्या में आये और भरत और शत्रुघ्न अपने मामा युधाजित के साथ केयके देश को चले गये।

महापुराण में यह कथा इस प्रकार लिखी है कि राजा जनक ने यज्ञ करने का इरादा किया और कुशलमति सेनापति से पूछा कि ऐसा सुननेमें आता है कि पिछले समय में राजा सगर ने यज्ञ में हाथी घोड़े और अपनी रानी सुलसा को फूक दिया था और वह सब स्वर्ग मे जाकर देव होगये थे, सेनापति ने कहा कि जब से कालासुर ने यज्ञ की यह नई विधि निकाली थी तब से यज्ञ में अनेक लोग विघ्न करने लगे हैं, नागासुर मात्सर्य करके यज्ञ में विघ्न करते हैं और धरणेन्द्र ने विद्याधरोंके पुरुषा नमि विनमि का उपकार किया था इस वास्ते विद्याधर भी विघ्न करते हैं, इस वास्ते जो कोई नागासुरों और विद्याधरोंको जीत सके वह यज्ञ करने में समर्थ हो सकता है अगर विजियार्धके विद्याधर विघ्न नही करेंगे तो रावण तो जरूर ही विघ्न करेगा इस वास्ते इसका तो यही एक इलाज है कि दशरथ के बेटे राम को बुलाकर सीता

उसको दी जावे जिससे वह अपना सहाई होजावे, वह बड़ा बहादुर है, यज्ञ की रक्षा कर सकता है, जनक ने यह सलाह पसन्द की और राम के लाने के वास्ते दशरथके पास दूत भेजा।

दशरथ के मन्त्रियों में से एक ने तो यह सलाह दी कि विघ्न रहित यज्ञ होजाने से दोनों लोक में सुख मिलता है इस वास्ते राम को अवश्य जनक के यहां भेजो, परन्तु दूसरे मन्त्री ने कहा कि हिंसामय यज्ञ करना महापाप है उससे हर्गिज स्वर्ग नहीं मिल सकता है, तब दशरथ ने पूछा कि ऐसा है तो फिर ज्ञानी लोग हिंसामय यज्ञ क्यों करते हैं, इस पर उस मन्त्री ने हिंसामय यज्ञ की उत्पत्ति की एक विस्तृत कथा सुनाई, इस पर महाबल सेनापति ने दशरथ से कहा कि यज्ञ में पाप होता हो वा पुण्य हमको इससे क्या मतलब अर्थात् हमको तो यह ही देखना चाहिये कि राम के मिथिला जाने में नफ़ा है वा नुक़सान, तब दशरथ ने पुरोहित से सलाह करी, उसने कहा कि राजा जनक राम को अपनी पुत्री सीता देगा, तुम राम लक्ष्मण दोनों को भेजो इनके जाने में कोई भय नहीं है, तब दोनों भेजे गये, जनक ने कई दिन तक यज्ञ किया फिर सीता राम को ब्याही गई, बहुत दिन के पीछे दशरथ का बुलावा गया तब राम लक्ष्मण अयोध्या आये।

पद्मपुराण में यह कथा इस प्रकार लिखी है कि अर्ध बरबर देश के राजा जनक का राज्य उजाड़ने लगे थे और लोगों का धर्म कर्म सब नष्ट करते थे, जनक ने राजा दशरथ से सहायता मांगी, तब राम लक्ष्मण गये और इन्होंने म्लेक्षों को भगा दिया, तब जनक ने अपनी सीता राम को देने का विचार प्रगट किया, राम लक्ष्मण अयोध्या आये।

नारद छुल्लक यह बात सुनकर सीता के देखने को गया, सीता उस समय दर्पण में अपना मुख देख रही थी, नारद का प्रतिबिम्ब उसके दर्पण में पड़ा, वह जटाधारी मूर्ती को देखकर डरी और दौड़कर घर में घुस गई; नारद भी उस घर में घुसने लगा, नौकरों ने रोका, नारद नौकरों से झगड़ा हुआ, वह मारनेको तय्यार हुए, तब नारद आकाश में भाग गया और क्रोध में आकर सीता को महाकष्ट देने का इरादा किया और अपने इस इरादेको पूरा करनेके वास्ते रथनूपुरमें गया और भामण्डल को सीता का चित्र दिखाकर उसको सीता पर ऐसा आशक करा दिया कि वह सीता की प्राप्तिके वास्ते रात दिन तड़पने लगा, तब राजा चन्द्रगति ने (जिसके यहां भामण्डल पला था) एक विद्याधर राजा, जनक को उठा लाने के वास्ते भेजा जो घोड़ा बनकर और जनक को अपनी पीठ पर सवार करा कर उड़ा लाया, चन्द्र-

गति ने जनक को बहुत कुछ समझाया और दबाया कि वह अपनी सीता भामण्डल को व्याह दे परन्तु जनक ने यह ही कहा कि मैंने तो वह कन्या राम को देनी कर दी है, लाचार होकर चन्द्रगति ने जनक को दो धनुष दिये और कहा कि यह धनुष धरणेन्द्र ने विद्याधरों के पूर्व पुरुषा नमि विनमि को दिये थे, यदि रामचन्द्र इन धनुषों को चढ़ा दे तो तुम अपनी सीता उसको दे दो नहीं तो हम सीताको जबरदस्ती ले आवेंगे, जनक को यह बात मंजूर करनी पड़ी तब चन्द्रगति ने विद्याधरों के द्वारा राजा जनक और दोनों धनुषों को मिथिला पहुंचा दिया।

जनक ने सीता का स्वयम्बर किया, अनेक राजा आये, दशरथ भी अपनी स्त्रियों और चारों पुत्रों सहित वहां गया, सब राजा लोग धनुष को देखकर डरे क्योंकि उसमें से अग्नि की ज्वाला निकलती थी, और भयङ्कर सर्प फुंकार मारते थे, परन्तु जब राम धनुष के पास गया तो वह धनुष ज्वाला रहित बिल्कुल सौम्य होगये, राम ने धनुष चढ़ाया जिससे पृथिवी कांपी, मेघ जैसा शब्द हुआ, जङ्गल के मोर मेघ गर्जन समझ कर नाचने लगे, आकाश में देवों ने धन्य धन्य कहा, फूल बरसाये और नृत्य किया, सीता ने राम के गले में वरमाला डाली, लक्ष्मण ने दूसरा धनुष चढ़ाया, इस पर भी पृथिवी कांपी, आकाश में देवों ने जय जयकार किया और फूल बरसाये, यह बात देखकर जो विद्याधर इन धनुषों के साथ आया था उसने अपनी १८ कन्या लक्ष्मण को दीं, भरत उदास हुआ, तब दो बारा स्वयम्बर कराया गया और जनक के भाई कनक की पुत्री लोक सुन्दरी से भरत के गले में वरमाला डलवाई गई।

जब भामण्डल को सीता का राम से व्याहा जाना मालूम हुआ तो उसको बड़ा क्रोध आया और वह सीताके हरने के वास्ते चढ़ा परन्तु मार्ग में उसको जातिस्मरण होगया और यह मालूम होगया कि सीता तो मेरी मां जाई बहिन है इस वास्ते बहुत लज्जित होकर वापिस चला गया।

नोट ।

इस कथनमें महापुराण में तो बहुत कुछ रामायण का ही अनुकरण किया गया है, यहां तक कि राजा जनक से हिंसामयी यज्ञ कराया गया है और राम लक्ष्मण को उस हिंसा यज्ञ की रक्षा के वास्ते भेजा गया है, परन्तु पद्मपुराण ने भामण्डल नाम का एक नवीन व्यक्ति कथन करके एक विलक्षण ही कथा वर्णन करी है, इतना भारी कथन भेद होने पर भी नहीं मालूम यह दोनों ग्रन्थ किस प्रकार जिनवाणी माने जा सकते हैं, इसके अलावा पद्मपुराणको यह कथा तो किसी तरह भी जैनकथा नहीं हो-

सकती है क्योंकि जैनियोंके छुल्लक न तो जटाधारी ही होते हैं और न वह ऐसा अनर्थ ही करते हैं जैसा कि नारद ने किया, बल्कि ऐसे कृत्य करने वाले नारद को जैन छुल्लक बताना तो जैनधर्म को भ्रष्ट करना है, आश्चर्य है कि जब नारद अच्छी तरह से सीता की शक्ल भी नहीं देख सका था बल्कि जब वह भागकर घरमें घुस गई तो वह भी उसको देखनेके वास्ते जबरदस्ती घरमें घुसना चाहता था तो उसके पास सीता की तसवीर कहां से आगई जो उसने तुरन्त ही भामण्डल को जा दिखाई।

धनुष में से अग्नि की ज्वाला निकलना और भयङ्कर सर्पोंका फुंकार मारना बिल्कुल अप्राकृतिक है, मालूम नहीं इस धनुष के चढ़ाने से देवों को क्या खुशी हुई जिससे वह नाचने तक लगे, हिन्दू रामायण में तो विष्णु भगवान ने देवताओंके वैरी राक्षसों को मारने के वास्ते ही राम के रूप में जन्म लिया था और सीता से उनका विवाह होकर सीता हरण के कारण ही राक्षसों का विध्वंस करना था इस वास्ते राम के धनुष चढ़ाने पर रामायण में तो देवताओं के हर्ष का जितना भी कथन किया जावे वह थोड़ा है परन्तु जैनकथा में देवों का हर्षित होकर उनके नाचने गाने का कोई कारण नहीं हो सकता है, बल्कि जैनधर्मानुसार तो देवताओं को महाशोक होना चाहिये था क्योंकि जैन सिद्धान्तानुसार वह अवधिज्ञानी होते हैं, इस कारण वह जान गये होंगे कि इस ही सीता के कारण रावण से महायुद्ध होगा और लाखों करोड़ों मनुष्यों की हिंसा होगी, इससे स्पष्ट सिद्ध है कि यह कथन जैनकथन नहीं है बल्कि रामायण से ही लिया गया है।

धनुष के चढ़ाने पर पृथिवी कांपी यह बात किसी प्रकार भी विश्वास नहीं की जा सकती है शोक है कि रामायण का यह बिल्कुल असम्भव कथन भी बिना विचारे ही पद्मपुराण में उठाकर रख दिया गया है।

दशरथ की रानी सुप्रभा का धर्म क्रोध।

पद्मपुराण के कथनानुसार राजा दशरथ ने अयोध्या में अष्टाह्निका पर्व का उत्सव किया और पूजन करके सब रानियों के पास गन्धोदक भेजा, वह गन्धोदक सब रानियों के पास तो पहिले पहुंच गया परन्तु जो खोजा रानी सुप्रभा के पास गन्धोदक ला रहा था वह बुढ़ापे के कारण शीघ्र नहीं पहुंच सका इस कारण वह बहुत नाराज हुई और जहर खाकर मरने को तय्यार होगई यहां तक कि जहर मंगा भी लिया, इतने में राजा को खबर होगई, राजा ने बड़ी खुशामद करके रानी का क्रोध शान्त किया।

नोट ।

क्या सतयुग में रानिया अष्टाह्निका के दिनों में भी भगवान के दर्शन को नहीं जाती थी जो गन्धोदक उनके महलों में भेजने की जरूरत हुई, यह कथा बच्चों के खेल से भी अधिक तमाशे की है जिसमें गन्धोदक आने में जरासी देर होने पर रानी ने ज़हर खाकर मर रहने का इरादा कर लिया और गन्धोदकके पहुंचने से पहिले जहर मँगा भी लिया है, यह कथा किसी प्रकार भी विश्वास के योग्य नहीं हो सकती है और यदि यह रानी ऐसी ही महामूर्ख थी तो उसकी मूर्खता वा राजा रानी का रूस मनावा अन्य अनेक बातों में दिखाया जा सकता था, धर्म सम्बन्ध में इसके इस महाक्रोध से तो भोले लोग धर्म की बातों में क्रोध करना ही सीखते हैं ।

* चौथा अध्याय *

राम लक्ष्मण के वन जाने का कारण ।

रामायण के कथनानुसार राजा दशरथ ने विचार किया कि अब मैं वृद्ध होगया हूं इसवास्ते राम को राज्य देकर विश्राम करना चाहिये, उसने तुरन्त ही इस बात की तय्यारी शुरू कर दी, इस पर रानी कैकई ने अपनी बांदी मन्थरा के बहकाने से राजा से अपने दो वर इस प्रकार मांगे कि भरत को तो राज्य दिया जावे और राम को १४ वर्ष का वनोवास, राजा ने उसको बहुतेरा समझाया परन्तु उसने एक न मानी, राजा लाचार होकर बेहोश होगया, कैकई ने राम को बुलवाया और सब हाल सुनाकर कहा कि तुम अपने पिता के वचनों को पूरा करो, रामचन्द्र तुरन्त ही भरत को राज्य देने पर राजी होगया और आप वन जाने को तय्यार होगया, लक्ष्मण को इस बात पर क्रोध आया और वह अपने पिता और भरत से लडकर जबरदस्ती राम को राज्य दिलाने पर तय्यार हुआ परन्तु राम ने उसको शान्त किया तब वह भी राम के साथ वन को चला और सीता भी साथ चली, भरत और शत्रुघ्न अपने मामा के यहां गये हुये थे, राम के वनोवास के पीछे वह बुलाये गये ।

पद्मपुराण में यह कथन इस प्रकार है कि मुनि महाराज का उपदेश सुनकर दशरथ को वैराग्य आया, राजा चन्द्रगति को भी वैराग्य हुआ, जनक भी वहीं बुलाया गया, वहीं वह अपने खोये हुए पुत्र भामण्डलसे मिला बड़ी खुशी हुई, दशरथ ने राम को राज्य देकर मुनि होने का विचार किया, इस पर भरत को भी वैराग्य आया, इससे केकई को बहुत फ़िकर हुआ, तब उसने राजा से अपने वर मांगे कि राज्य भरत को दो जिससे वह मुनि होने से रुके, दशरथ ने राम से सलाह पूछी, राम ने कहा कि तुम जरूर अपने वचनों का पालन करो और राज्य भरत को दो; दशरथ ने और राम ने भरत को समझा बुझाकर राजा होना स्वीकार कराया और प्रजा पर से अपना प्रभाव हटाने और भरत का अटल राज्य होने के वास्ते राम ने ऐसी जगह जा रहनेका इरादा भी प्रगट किया जहां अयोध्याकी प्रजासे रामका कोई सम्बन्ध न रहे, रामचन्द्र परदेश को चल दिये, दशरथ को मूर्छा आगई, राम की माता साथ जाने को तय्यार हुई परन्तु राम ने तसल्ली दी कि दक्षिण में कोई स्थान ठीक करके तुमको बुला लेंगे, सीता साथ चली, लक्ष्मण को पिता पर क्रोध आया और इरादा किया कि राम को ज़बरदस्ती राज्य दिला दूं फिर सोचा कि पिता जाने और बड़ा भाई जाने मुझे इन बातों से क्या, आखिर को वह भी राम के ही साथ गया।

महापुराण में इसके बिलकुल ही विरुद्ध यह लिखा है कि अयोध्या में रहते हुए एक दिन राम ने अपने पिता से कहा कि काशी देश और बनारस नगर शुरू से हमारा ही था परन्तु अब कोई राजा वहां नहीं है, इस वास्ते आज्ञा हो तो हम जाकर वहां का राज्य करें, तब दशरथ ने रामके शिर पर मुकुट रख कर उसको बनारस का राजा और लक्ष्मण को युवराज बनाकर भेज दिया और वह वहां जाकर राज्य करने लगे और सीता हरण तक बराबर वहीं राज्य करते रहे और अयोध्या में दशरथ ही बराबर राज्य करते रहे, यहां तक कि सीता हरणके समय भी राजा दशरथ अयोध्या का राज्य कर रहे थे और राम बनारस का।

नोट।

दो जैनग्रन्थों में इस प्रकार धरती आकाश का अन्तर होने का महशोक है और ऐसी दशा में इन ग्रन्थोंका कथन किसी प्रकार भी मानने योग्य नहीं हो सकता है, ऐसे ग्रन्थों को सर्वज्ञ वचन कहना तो साक्षात् ही सर्वज्ञता को कलंकित करना है, पद्मपुराण का यह कथन यद्यपि बहुत कुछ रामायण के ही अनुसार है परन्तु

रामायण में तो राम के वनोवास का कारण राम की मतेई केकई को बताया है जिससे एक पुरुषके अनेक स्त्रियोंके होने की बुराई साफ प्रगट होती है और पद्मपुराण में इसका कारण भरतका वह अद्भुत् वैराग्य बताया है जो राज्य मिलने पर जाता रहा और जिसने अपने अटल राज्य होजाने के लालच में राम का दूर देश में चले जाना भी मञ्जूर कर लिया, वेशक जैनकथा ग्रन्थों को एक एक पुरुष के हजारों हज़ारों विवाह करा देने बहुत प्रिय हैं और इन ग्रन्थों में बहुधा ऐसे ही कथन किये गये हैं और मालूम होता है कि शायद इस ही कारण से पद्मपुराण में रामायण के इस कथनको बदलना पड़ा है परन्तु सच्चातो यह है कि केकई की सौतिया डाह के बदले में भरत के वैराग्य की जो कथा पद्मपुराण में वर्णन की गई है वह फबी नहीं है बल्कि साफ़ बेजोड़ और बनावटी मालूम होती है, क्योंकि जैसा आगे चलकर मालूम होगा, पद्मपुराण में भी राम लक्ष्मण और सीता को रामायण की तरह वन वन पैदल ही फिराया है और यह नहीं सोचा है कि रामायण में तो केकई ने राम को साफ़ तौर पर वनोवास दिलाया है और उसका फकीरी भेष बनाकर उसको घर से निकाला है और पद्मपुराण में पिता माता की आज्ञा से राम वन में नहीं गया है बल्कि अयोध्या की प्रजा को भरत की ही भक्ति होजाने के वास्ते राम ने बहुत दूर दक्षिण में जाकर अपना नवीन राज्य स्थापन करने का इरादा किया है ऐसी दशा में पद्मपुराण में भी राम लक्ष्मण और सीता का पैदल वन वन फिरना और एक भी नौकर चाकर वा सवारी उनके साथ न होना किसी तरह भी ठीक नहीं बैठता है और यह ही सिद्ध करता है कि यह पद्मपुराण रामायण से ही बनाया गया है जिसमें कहीं कहीं कोई कथन बदल दिया गया है और वह ही बेजोड़ मालूम होरहा है।

राम लक्ष्मण का वन गमन।

रामायण के कथनानुसार रामचन्द्रजी साधू वेश धारण करके वन को गये, सब अयोध्या वासी राम के साथ चले, रात को तमसा नदी के किनारे ठहरे, सब वहीं सोये, तड़के ही राम जागे, देखा कि सब साथी सोरहे हैं, वह सब को सोता छोड़कर और लक्ष्मण और सीता को साथ लेकर चल दिये, अयोध्या के राज्य की सीमा तक रथ में बैठकर गये, गङ्गा पार जाकर उन्होंने रथ को लौटा दिया और जो लोग यहां तक चले आये थे उनको भी समझा बुझाकर लौटा दिया, फिर आगे पैदल ही चले, भीलों के राजा गोह ने उनको किश्तियों के द्वारा गङ्गा पार कराया,

प्रयाग में पहुंच कर यह भरद्वाज ऋषि के आश्रम में गये, फिर चित्रकूट-पर्वत गये और वहीं कुटी बनाकर रहने लगे।

पद्मपुराण में यह कथन इस प्रकार लिखा है कि राम के चलने पर अयोध्या में हाहाकार मच गया, सब साथ जाने को तय्यार हुए, इस ही झगड़े में शाम होगई, तब राम ने लोगों को टालने के वास्ते रात को एक चैत्यालय के पास विश्राम किया, फिर जब आधी रात को सब लोग सोगये तो यह सब को सोता छोडकर नगर के द्वार की खिडकी से निकल कर पैदल ही दक्षिण दिशा को चल दिये, चलते चलते उस नदी के किनारे आये जहा भीलों का निवास था, राम के प्रभाव से वह महा भयानक नदी नाभि प्रमाण बहने लगी, इस कारण यह तीनों पैदल ही उस नदी से पार उतरे और जा लोग यहा तक इनके साथ आये थे उनको समझा बुझा कर वापिस किया, आगे चल इनको मार्ग मे एक चैत्यालय और सत्यकेतु आचार्य्य मिले जिनकी वन्दना करके वह आगे चले और चित्रकूट पर्वत पर गये।

नोट।

आश्चर्य्य है कि रामायण में तो जहा राम को वनोवास दिया गया है और फ़कीर के भेष में घर से निकाला गया है वहा तो इनको राज्य की सीमा तक रथ में बैठाकर पहुंचाया गया है परन्तु पद्मपुराण में जहां वह दक्षिण देश में अपना अलग राज्य स्थापित करने को राजी खुशीमें चले हैं वहा उनको शुरू से ही पैदल चलाया गया है, इसके अलावा रामायण में राम को विष्णु भगवान का अवतार मानते हुए भी नाव के द्वारा गङ्गा पार कराया है परन्तु जैन पद्मपुराण में राम के प्रताप से गङ्गा नदी भी उतर कर नाभि तक बहने लगी है और यह तीनों पैदल ही उसको पार कर गये हैं, पद्मपुराणकी आदिमें कहा तो यह गया है कि राम रावणकी कथा में हिन्दूग्रन्थोंमें जो अप्राकृतिक बातें लिखी थी उन ही पर शङ्का करके राजा श्रेणिक ने गणधर महाराज से प्रश्न किया और उन अप्राकृतिक बातों का निराकरण करने के वास्ते ही गौतम स्वामी ने यह पद्मपुराण सुनाया परन्तु इसमें तो स्वयम् ही अनेक अप्राकृतिक और असम्भव बातें मिलती हैं जिससे यह ही सिद्ध होता है कि गणधर महाराज का कहा हुआ यह ग्रन्थ नहीं है।

भरत का राम के पास वन में जाना।

रामायण के कथनानुसार राम के जाने के छटे दिन दशरथका देहान्त होगया इस पर भरत और शत्रुघ्नको मामाके यहांसे बुलाया गया और उनके द्वारा दशरथकी दाह क्रिया कराकर मन्त्री और पुरोहितों ने भरतको राज्य ग्रहण करनेके वास्ते कहा

परन्तु उसने राज्य लेने से कतई इनकार कर दिया और अपनी माता पर बहुत नाराज होकर राम को वापस लाने के वास्ते वन को चला, मार्गमें भारद्वाज ऋषि के आश्रम में ठहरा, ऋषि ने उसको और उसकी सारी सेना को भोजन दिया और बड़ी खातिरदारी करी, अगले दिन भरत चित्रकूट पहुंचा और राम को वापस अयोध्या लेजानेके वास्ते बहुत कोशिश करी परन्तु राम ने यह ही जवाब दिया कि हम अपने पिता के वचनों को सार्थक करने के वास्ते १४ वर्ष वन में ही ठहरेंगे, तब लाचार सोने की पावड़ियों पर राम का पैर रखवा कर भरत अपने साथ ले आया और उन को गद्दी पर रखकर और नन्दीग्राम में रहकर राम की तरफ़ से राज्य का प्रबन्ध करता रहा और प्रतिज्ञा करी कि अगर १४ वर्ष के पीछे राम वापस न आवेंगे तो आग में जल मरूंगा।

पद्मपुराण में यह कथा इस प्रकार लिखी है कि दशरथ ने दीक्षा ले ली, भरत के हृदय में भी वैराग्य रहा और वह राज्य विभूति को विष के समान ही समझता रहा, केकई ने भरत को समझाया कि राम लक्ष्मण के बिदून राज्य की शोभा नहीं है और वह बिना सवारी पैदल किस तरह फिरेंगे, इस वास्ते जल्द जाओ और उनको वापिस लेकर आओ, मैं भी पीछे आती हूं, तब भरत बहुत से आदमियों को साथ लेकर राम के पास गया, छटे दिन भरत राम के पास पहुंचा, भरत ने राम को बहुत खुशामद करी कि तुम ही राज्य करो मैं तुम्हारे शिर पर छत्र लगाये तुम्हारी सेवामें खड़ा रहूंगा, मेरी माता बहुत पश्चाताप करती है, फिर केकई भी वहां आगई, उसने भी बहुत समझाया परन्तु राम ने एक न मानी बल्कि वनमें ही भरत का राज्याभिषेक किया और वापस भेजा, अयोध्या जाकर भरत ने प्रतिज्ञा करी कि राम के वापस आते ही मुनि हो जाऊंगा।

नोट।

यदि भरत के हृदय में वैराग्य था और वह राज्य को विष के समान समझता था तो उसने क्यों नहीं त्यागा, उसकी तरफ से कोई भी अयोध्या का राजा होता उसको इससे क्या और यदि उसको राज्य का प्रबन्ध करके ही दीक्षा लेनी थी तो शत्रुघ्न को राज्य देकर मुनि हो सकता था, इसके सिवाय वैराग्य के कारण राज्य को विष के समान समझने की हालत में वह यह न कहता कि तुम वापस चलकर राज्य करो और मैं तुम्हारे शिर पर छत्र लगा कर तुम्हारी सेवा में खड़ा रहूंगा, बल्कि साफ कहता कि मैं तो अवश्य ही दीक्षा लूंगा इस वास्ते तुम वापस जाकर

अपना राज्य सँभालो, आश्चर्य है कि रामायण मे तो १४ वर्ष पीछे राम के वापस आने की आशा थी जिस पर भरत ने प्रतिज्ञा की कि यदि उस वक्त वापस न आये तो अग्नि में जल मरूंगा परन्तु पद्मपुराण में तो राम को चौदह वर्ष का बनोवास नहीं मिला था बल्कि वह तो दक्षिण में राज्य स्थापन करने के वास्ते अपनी मरजी से ही निकले थे, इस कारण भरत की यह प्रतिज्ञा बिल्कुल ही बेठिकाने है कि राम के वापस आने पर मैं मुनि हो जाऊंगा।

सच तो यह है कि सारी रामायण में एक यह ही कथन शिक्षाप्रद था जिसमें केकई की दुष्टता और भरतका भ्रातृस्नेह दिखाया गया था, शोक है कि पद्मपुराण में केकई की रक्षा करके और एक पुरुष के अनेक स्त्रियों से जो बुराई पैदा होती है उसको छिपाकर इस सारी कथा की खूबी को नष्ट कर दिया है।

रामायण के अनुसार राम का वन भ्रमण।

रामायण का कथन है कि चित्रकूट के ऋषियों को रावण का भाई खर राक्षस दुःख देता था इस वास्ते वह दूसरे स्थान को चले गये, राम भी अत्रि ऋषि के आश्रम मे होते हुए दण्डक वन में पहुंच गये, वहां के सब तापसी राम से बडी प्रीतिसे मिले और हाथ जोड़कर कहने लगे कि राक्षसों से हमारी रक्षा करो, वहीं राम लक्ष्मण का एक राक्षस से युद्ध हुआ जिसका नाम बिराध था, राम ने उसको मारा, फिर वह शरभङ्ग ऋषि के पास गये जहा इन्द्र भी अपना दिव्यरथ लेकर आया हुआ था, राम ने यह रथ लक्ष्मणको दिखाया, फिर वहांसे सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रममें गये, वहां सब मुनियोंने उनसे राक्षसोंसे रक्षा करनेके वास्ते कहा, इन्होंने वनमें घूमते हुए एक सरोवर देखा जिसका नाम पञ्चाप्सर था, उस सरोवर में से गाने की आवाज आती थी, फिर वह अगस्त्य ऋषि के आश्रम में गये, वहां ऋषि ने राम को विश्वकर्मा का बनाया हुआ वैष्णव धनुष दिया और ब्रह्माका बनाया हुआ बाण दिया और इन्द्र का दिया हुआ अक्षय तर्कश दिया।

वज्रकर्ण की धर्म प्रतिज्ञा।

पद्मपुराण में राम के वन भ्रमण की कथा इस प्रकार लिखी है कि भरत के मिलने के बाद राम वन में फिरते हुए तापसियों के आश्रम में गये, तापसियों ने उनकी बहुत खातिर की और जब यह आगे को चले तो बहुत दूर तक इनके पीछे २

गये, तापसियों की स्त्रियां इनके सुन्दर रूप को देखकर जङ्गल से लकडी आदि लाने के बहाने से बहुत दूर तक इनके पीछे २ गई और कहा कि यही रहो, फिर यह भीम वन में गये।

वहां से मालवदेश में आये, वह देश उजाड होरहा था, कारण यह था कि उस देश के राजा वज्रकरण ने यह प्रतिज्ञा कर रखी थी कि देव गुरु शास्त्रके सिवाय और किसी को प्रणाम् नही करूगा, वह वज्रकरण उज्जैनीके राजा सिंहोदर का मातहत था, वज्रकरण ने अपनी अंगूठी में जिन प्रतिमा बनवा रखी थी इस वास्ते जब वह सिंहोदर के सामने जाता तो अपनी अंगूठी को नमस्कार कर लेता, किसी ने सिंहोदर को इस बात की खबर कर दी इसपर सिंहोदर ने उसके मारने का इरादा किया, एक मनुष्य ने वज्रकरण को इस बात की खबर दी और कहा कि मैं सेठ का बेटा हूं, उज्जैनी में व्यापार को आया था परन्तु यहां आकर कामलता वेश्या से फँस गया और सब धन खोदिया, वेश्या ने रानी कैसे कुंडल मांगे, मैं रानीके कुडल चुराने को राजा के महल में गया, उस समय राजा अपनी रानी से तुम्हारे मारने का विचार प्रगट कर रहा था, मैंने यह सब बातें सुनी इस वास्ते तुम से कहता हूं, इस पर वज्रकरण तो अपने गढ़ में जा बैठा और सिंहोदर ने उसका देश उजाड़ दिया।

राम ने लक्ष्मण को वज्रकरण की सहायताके वास्ते भेजा लक्ष्मण ने सिंहोदर की सारी सेना परास्त करके उसको पकड लिया, सिंहोदरकी स्त्रियों ने उसके छुडाने के वास्ते बहुत प्रार्थना करी, राम ने वज्रकरण के कहने से सिंहोदर को छोड़ दिया और सिंहोदर का आधा राज्य वज्रकरण को दिलवा दिया, वज्रकरण ने अपनी आठ कन्याओं की सगाई लक्ष्मण से करी, सिंहोदर ने भी अपनी ३०० कन्या लक्ष्मण को दी, लक्ष्मण ने कहा कि विवाह तब ही होगा जब हम दक्षिण देश में जाकर कोई राज्य स्थापित कर लेंगे, यह बात सुनकर वह कन्यायें ऐसी मुरझा गई जैसे पाले का मारा हुआ कमल।

नोट।

महापुराण के अनुसार तो यह कथा बिल्कुल ही असत्य ठहरती है क्योंकि उसके अनुसार तो राम लक्ष्मण वन वन वा देश विदेश नही फिरे हैं बलिक बनारस में ही राज्य करते रहे हैं, इसके अलावा इस कथन में वेश्यागामी सेठ पुत्र का कथन तो ख्वामख्वाह ही किया गया है, उसकी इस कथा के स्थान में इतना ही कहना काफी था कि वज्रकरण को एक पुरुष से सिंहोदर के खोटे इरादे का हाल मालूम

होगया, इस कथन में वज्रकरण की अनोखी प्रतिज्ञा की अनुचित प्रशंसा की गई है, इस पर तो मोक्षमार्ग प्रकाश में भी आक्षेप किया गया है और लिखा है कि अपने से बड़े राजाओं को तो बड़े बड़े सम्यक्ती नमस्कार करते हैं जिसमें कोई भी दोष नहीं है बल्कि दोष है अँगूठी में प्रतिमा रखने में जहां उसकी पूरी इहतियात नहीं हो सकती है, इस वास्ते अन्य सम्यक्ती पुरुषों को राजा वज्रकरण की रीस नहीं करनी चाहिये।

यह तो रही मोक्षमार्ग प्रकाशकी सम्मति परन्तु हमारी समझ में तो वज्रकरण ने यह अनोखी प्रतिज्ञा करके ख्वामख्वाह ही युद्ध कराया, अपना देश उजड़वाया, और हजारों मनुष्यों की हिंसा कराई जिसका सब दोष अवश्य उसकी ही गर्दन पर पड़ा होगा, यदि पद्मपुराण में इस कथा को वर्णन करना ही उचित था तो साथ ही इसके उसकी इस प्रतिज्ञा की बुराई भी करनी चाहिये थी जिससे अन्य कोई उसका अनुकरण न करे परन्तु शोक है कि पद्मपुराण से तो उसकी इस प्रतिज्ञा की प्रशंसा ही का भाव निकलता है।

कल्याणमाला की लक्ष्मण पर आशक्ति।

पद्मपुराण के अनुसार राम आगे चलकर नलकूवर नगर में आये, वन में ठहरे वहां कल्याणमाला नाम की राजकन्या जो पुरुष के रूप में रहती थी लक्ष्मण पर आशक्त होगई, उसने इन सब की बहुत खातिर करी और अपना असली रूप दिखाया, इसके रूप से महल में चांदनीसी छिटक गई, लक्ष्मण भी कामबाण से बींधा गया, उस कन्या ने बताया कि बालखिल्य इस नगर का राजा मेरा पिता है जिसको म्लेक्षों ने कैद कर रखा है, यह राज्य राजा सिंहोदर के मातहत है, उसकी आज्ञा है कि यदि बालखिल्य के कोई पुत्र हो तो वह राज्य करे, इस वास्ते मन्त्रियों ने मुझको पुत्र प्रसिद्ध करके राज्य पर बिठा रखा है, राम लक्ष्मण तीन दिन यहां ठहर कर चल दिये, पीछे कल्याणमाला बहुत तड़पती रही कि मेरा मन हर लेगये, चलते २ इनको वन में म्लेक्ष मिले, उनसे बहुत लड़ाई हुई, म्लेक्ष राजा हारा, राम ने उनसे राजा बालखिल्य को छुड़वाया और इनको बालखिल्य का सेवक बनाया, म्लेक्षों का राजा असलमें ब्राह्मण था इस वास्ते उससे म्लेक्ष क्रिया छुड़वाई।

नोट।

यह काम कथा भी महापुराण के अनुसार तो असत्य ही सिद्ध होती है चूंकि पद्मपुराण में अगले कथन में भी एक ब्राह्मण की निन्दा कीगई है इस वास्ते सन्देह

होता है कि शायद ब्राह्मणों की निन्दा के वास्ते ही मुक्ष सर्दार को ब्राह्मण बनाया गया हो।

यक्षराजका राम के वास्ते नगर बनाना।

पद्मपुराण के अनुसार राम लक्ष्मण अरुण ग्राम में आये, एक अग्निहोत्री ब्राह्मण के घर पर आकर उतरे, और ब्राह्मणी से पानी पिया, इतने में ब्राह्मण भी जङ्गल से लकड़ी काटकर आ पहुंचा, उसने क्रोध में आकर इनको घर से निकाल दिया और ब्राह्मणी पर भी बहुत नाराज हुआ कि इनको यहा क्यों ठहरने दिया, इनके ठहरने से मेरा अग्निहोत्र स्थान भ्रष्ठ होगया है, लक्ष्मण को जोश आया कि इसको पकड़ कर पछाड दूं, परन्तु राम ने समझाया कि यति ब्राह्मण गाय पशु स्त्री बालक और वृद्ध को दोषी होने पर भी जैनधर्ममें मारना मना है, फिर राम ने कहा कि यहां से चलो क्योंकि दुर्जन के पास एक पलभर भी ठहरना उचित नही है।

वह वनमें एक वृक्षके नीचे जा ठहरे, उस वृक्ष पर एक यक्ष रहता था, इनको तेजस्वी देखकर उसने यक्षराज से खबर करी, वह देवों सहित आया और अवधि से इनको नारायण बलभद्र जानकर वहीं उनके वास्ते महामनोज्ञ नगरी बनाई और खूब ही सजाई, नौकर चाकर सिपाही प्यादे सब ही बनाये, रामपुरी उसका नाम रक्खा और उसमें सब ही वातं अयोध्या के समान बनाई और राम को उस नगर में ठहराया, यहा राम ने वडा भारी दान देना शुरू किया और दरिद्रियों को राजा के समान धनी वना दिया, अगले दिन ब्राह्मण लकडी काटने वन में गया तो उसने नगर को देख बड़ा आश्चर्य किया, वहां उस ब्राह्मण ने एक मुनि भी देखे जिनसे धर्मस्वरूप सुनकर जैनधर्म ग्रहण किया, फिर ब्राह्मणीको भी मुनिके पास लेगया, बहुतसे ब्राह्मण मुनि और श्रावक हुए, रामने भी इनको रत्नोंके आभूषण आदि देकर मालामाल कर दिया और फिर वह ब्राह्मण भी मुनि होगया, जब राम लक्ष्मण यहां से आगे चले तो यक्ष ने अपनी नगरी संकोचली और इनको हार कुण्डल आदि भेंट दिये।

नोट।

महापुराण के अनुसार तो यह कथा भी असत्य ही है, यह कथा हिन्दूधर्म की बुराई और जैनधर्म की प्रशंसा में कही गई मालूम होती है, जैनकथा ग्रन्थों के अनुसार राम लक्ष्मण इस वन मे ही आकर नारायण बलभद्र नही हुए थे बल्कि जन्म से थे और केवल इस ही वन में यक्ष नहीं रहते थे बल्कि नगर ग्राम वन पर्वत और वृक्ष आदि कोई स्थान भी यक्षों से खाली नहीं बताया गया है, इस कारण यही इनके

वास्ते एकदम महान् नगर रचा जाना और आगे पीछे बात भी न पूछना यहां तक कि न सीताहरण के समय किसी यक्ष का सहायता को आना और न जब राम वन के वृक्षों तक से सीता का पता पूछते थे तब भी किसी यक्ष का हूं तक न करना बिल्कुल बेजोड़ बात है, पैदल वन वन भटकते हुए राम लक्ष्मण के वास्ते अचानक ही यक्ष द्वारा यह नगर रचा जाना तो बिल्कुल ही बेतुकी बात बन गई है और ग्रन्थ रचता की कचाई का सिद्ध करती है।

रामायण के कथनानुसार जब भरत राम को वन से वापस लाने के वास्ते जारहे थे तो मार्ग में वह एक रात भारद्वाज ऋषि के आश्रम मे ठहरे थे, उस वक्त भरत के साथ ९ हज़ार हाथी साठ हज़ार रथ एक लाख सवार और असंख्य मनुष्य थे, ऋषि ने इन सब को दावत दो थी और भोज के प्रबन्ध के वास्ते यम कुवेर वरुण और विश्वकर्मा आदि सब ही देवताओं को और दुनियां भर की सब नदियों को बुलाया था, उस भोज के प्रबन्ध के वास्ते सब ही देवता आये थे, मन्द सुगन्ध पवन चलने लगी थी, आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई थी, देवों ने नगारे बजाये अप्सरा नाची और गन्धर्वों ने गाना गाया, पांच योजन तक चारों तरफ की भूमि समतल होगई, उस पर हरी हरी घास उग गई और सब प्रकार के मेवों के वृक्ष लग गये, उत्तरकुरु से दिव्य भोग की वस्तु के वन के वन आगये, चौखने महल, राज सिंहासन चंवर छत्र सब ही कुछ आये, ब्रह्माजी ने दिव्य वस्त्र धारण किये हुए २० हज़ार स्त्रिया भेजीं, २० हज़ार स्त्रियां कुवेर ने भेजीं, २० हज़ार अप्सरा नन्दन वन से आई जिनको देखते ही पुरुष कामातुर होकर बेवश होजावे, गाने वाले अनेक देव आये, अप्सराओंने नाच दिखाया और खूब ठाठ बांधा, इस प्रकार रामायणमें खूब ही दिल खोलकर गप्प मारी गई है, मालूम होता है कि रामायण की इस गप्प के बदले में ही पद्मपुराण में यक्ष के द्वारा यह नगर बनवाया गया है और उस नगर के भी खूब ठाठ वर्णन किये गये हैं, परन्तु शोक है कि बात का जोड़ नहीं मिल सका है।

सब से ज्यादा आश्चर्य्य की बात तो इस कथा मे यह है कि यक्ष ने तो यह नगर मायामय ही बनाया था इस ही कारण राम के वहां से आगे चलते ही वह नगर भी वहां न रहा परन्तु राम ने इस मायामय नगर में रत्नों और सोने चांदी के ढेर देखकर दान करना ही शुरू कर दिया और इतना दान दिया कि दरिद्रियों को राजाओं के समान धनी बना दिया, मालूम नही वह द्रव्य असली था वा मायामय और जिनको दान दिया गया था उनके पास रहा था वा जिस प्रकार वह नगर गायब होगया था इस ही प्रकार उन दरिद्रियों को मिला हुआ द्रव्य भी हवा होकर उड़ गया था।

जिस ब्राह्मण ने राम को घर से निकाल दिया था वह मिथ्यात्वी था और राम ने भी उसको दुर्जन बताकर उसके पास से दूर चले जाने को कहा परन्तु इन सब बातों के होते हुए भी यह सिद्धान्त सुनाया कि ब्राह्मण और गऊ आदिको दोषी होने पर भी दण्ड नहीं देना चाहिये, यह सिद्धान्त किसी तरह भी जैन सिद्धान्त नही हो सकता है और यदि किसी प्रकार से ब्राह्मण लोग पूज्य और ऐसी भक्ति के योग्य हो भी सकते हैं जिससे वह अकस्मात दोषी होजाने पर भी दण्ड के योग्य न हों तो केवल जैन ब्राह्मण ही हो सकते हैं न कि मिथ्यात्वी और ऐसे महादुर्जन जिनकी सङ्गतिसे भी दूर भागने की जरूरत पड़े, इससे साफ सिद्ध है कि जैन कथाओं में बहुत से सिद्धान्त हिन्दू ग्रन्थों के ही भर दिये गये हैं।

बनमाला की लक्ष्मण पर आशक्ति।

पद्मपुराण के अनुसार राम लक्ष्मण आगे चलकर विजयपुर आये और बनमें ठहरे, यहां के राजा की कन्या बनमाला पहिले से ही लक्ष्मण पर आशक्त थी, परन्तु जब उसके पिता को मालूम हुआ कि लक्ष्मण तो राम के साथ बन को गया है तो उसने अपनी कन्या किसी दूसरे को देने का इरादा किया, परन्तु कन्या ने लक्ष्मणके विरह में फांसी लेकर मरजाना विचारा और किसी बहाने से रात को वन में जाकर एक वृक्ष में फांसी लटका कर मरने को तय्यार हुई और गले में फांसी डालकर कहने लगी कि हे इस वृक्ष के देव ! यदि लक्ष्मण इधर आ निकलें तो कह देना कि वह तुम्हारे कारण फांसी लेकर मरगई है वह इस भव में नहीं मिला तो अगले भव में तो मिलेगा, राम लक्ष्मण उस रात को उस ही वन में ठहरे हुए थे और जब वह यह बात कह रही थी अचानक उस ही वक्त लक्ष्मण भी वहीं आ निकला, उसने उस कन्या के यह बोल सुने और तुरन्त ही रस्सा काट कर उसको मरने से बचाया और राम के पास लाया, राजा को भी खबर हुई वह इन सब को नगर में ले गया और खूब खातिर की, वहां इन्होंने खूब भोग भोगे।

यहां रहते हुए इनको मालूम हुआ कि राजा अतिवीर्य्य ने अयोध्या पर चढ़ाई कर दी है, राम लक्ष्मण गुप्त रीति से वहां गये और नृत्यकारिणी का रूप बनाकर राजा अतिवीर्य्य के दर्बार में खूब गाना गाया फिर गाते २ वीररस में आकर राजा को बांध लिया, राजा अतिवीर्य्य मुनि होगया उसका बेटा भरत का सेवक बना और

उसने अपनी बहिन वनमाला लक्ष्मण को दनी करी, फिर राम लक्ष्मण विजयपुर आकर यहा से भी चल दिये, वनमाला ने बहुत विलाप किया कि मुझे छोडकर कहां जाते हो, यदि ऐसा ही करना था तो मुझे फासी से क्यों बचाई थी, इस पर लक्ष्मण ने उसको धैर्य्य बँधाया और कहा कि हम तुमको जल्दी ही ले जावेंगे।

नोट।

"यह महा रसीली कामकथा भी महापुराण के कथन के अनुसार तो असत्य ही ठहरती है और इस कथा का ढांचा बिल्कुल ऐसा ही है जैसा कि नाटक के कथनों का होता है, लक्ष्मण का वनमाला के पास ठीक उस समय पहुंचना अब वह गले में रस्सा डालकर अन्तिम शब्द कह रही थी इस बात को स्पष्ट सिद्ध करता है, फिर नृत्यकारिणी बनकर गाते २ शृङ्गाररस से वीररस में आजाना और राजा को मार डालना इस बात को बिल्कुल ही पुष्ट कर देता है कि यह कथन बिल्कुल ही नाटकी कथन है और काव्यरस पैदा करने के वास्ते ही कहा गया है, जो हो परन्तु ऐसी कथा जवान २ कन्याओं और बालकों के वास्ते बहुत हानिकारक हैं।

जितपद्मा का लक्ष्मण पर मोहित होना।

पद्मपुराण के अनुसार आगे चलकर राम लक्ष्मण क्षेमाञ्जलि नगर में आये, यहा के राजा की पुत्री जितपद्मा किसी भी पुरुष को पसन्द नहीं करती थी, राजा के पास एक ऐसी शक्ति थी जिसकी चोट से कोई भी नहीं जी सकता था उसने यह प्रतिज्ञा कर रखी थी कि जो कोई मेरी शक्तिकी चोट खावेगा वह ही मेरी कन्या को पावेगा, परन्तु कोई भी शक्ति की चोट खाने को राजी नही होता था, यह बात सुनकर लक्ष्मण उस राजा के पास गया और कहा कि एक नहीं चाहे पांच शक्ति मार लो, वह कन्या लक्ष्मण को देखकर उस पर मोहित होगई और इशारे से शक्ति के खाने से मना करने लगी, लक्ष्मण ने भी इशारे से उसको जवाब दे दिया कि कुछ भय मत करो, राजा ने लक्ष्मण के पांच शक्ति मारी और लक्ष्मण ने पांचों ही थाम ली, देवों ने आकाश में बाजे बजाये और फूल बरसाये, कुछ दिनों पीछे राम लक्ष्मण यहा से भी चल दिये, चलते वक्त लक्ष्मण ने जितपद्मा को बहुत दिलासा दिया।

नोट।

यह कामकथा भी महापुराण के कथनानुसार असत्य ही है, आश्चर्य है कि जिस शक्ति की चोट से काई भी नही जी सकता था उसको लक्ष्मण ने कैसे सहार लिया और जब राजा की प्रतिज्ञानुसार एकवार शक्ति के सहारने से लक्ष्मण उस की कन्या का वर होगया था तो फिर उस राजाने पांच वार क्यों शक्ति मारी, राजा को तो लक्ष्मण के जिद करने पर भी दोबारा शक्ति नहीं मारनी चाहिये थी क्योंकि जब वह शक्ति ऐसी थी जिसकी चोट से कोई भी नहीं बच सकता था तो उसको तो दवयोग से ही यह ऐसा पुरुष मिला था जा उसकी कन्या का पति हो सकता था, एकवार शक्ति सहार लेने के बाद फिर भी चार वार शक्ति मारने का तो साफ यह ही अर्थ होता है कि वह राजा अपनी कन्याको सदा के वास्ते कुवारी ही रखना चाहता था; इससे सिद्ध है कि कथा का जोड विलकुल नही मिल सका है, इसके सिवाय यदि लक्ष्मण में ऐसी ही अद्भुत् ताकत थी कि जिस एक शक्ति की चोट से भी कोई नहीं बच सकता था उसको उसने बडे चाव से पांच चोट सहार लीं और उसको कुछ बाधा न हुई ता फिर रावणकी शक्ति लगने से वह क्यों मृतक समान होकर गिर पडा था, इससे तो यह ही मालूम होता है कि यह बात कविके ही इख्त्यार मे है कि वह जहा जैसा चाहे वर्णन कर दे।

असुर के उपद्रव से मुनियों की रक्षा।

पद्मपुराण के अनुसार राम लक्ष्मण वशधर नगर में पहुंचे जहा के लोग भागे जारहे थे, कारण यह था कि नगर के पास पहाड पर रात को भयानक ध्वनि होती थी जिससे पृथिवी कापती थी और वृक्ष गिर पडते थे, नगर के लोग भय के मारे शामको भाग जाते थे और सुबह को आजाते थे, राम लक्ष्मण उस पहाड पर गये देखा कि वहा दो मुनि विराजमान हैं और एक असुर उन पर उपद्रव करता है, जा मायामय ऐसे सांप बिच्छुओं से मुनियों का शरीर वेढ देता है जो महाविकराल फुकार मारते हैं, राम लक्ष्मण ने सांप बिच्छू हटाकर मुनि की पूजा करी, तब असुर की माया से महारुद्र भूतों के गण, हड, हाऊ और राक्षस आदि शोर मचाने लगे, जिनमें से अग्नि की ज्वाला निकले, उन्होंने अपने अङ्ग काट काटकर आकाश से गिराये, खून की वर्षा करी और नग्न डाकिनी नाचीं, इस ही प्रकार और भी बहुत से डरावने रूप किये और भूकम्प किया, तब यह दोनों भाई धनुष चढाकर

लड़ने को तय्यार हुए और असुर इनको नारायण बलभद्र जानकर भाग गया, मुनियों ने वह उपसर्ग निश्चलभाव से सहन किया इस वास्ते इनको केवल ज्ञान होगया ।

राम ने इनसे उपसर्ग का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि अमृतसुर नाम का एक ब्राह्मण था उपभोगा जिसकी स्त्री और उदित मुदित दो पुत्र थे, वसुभूति इसका मित्र था जो इसकी स्त्री पर आशक्त था, एक दिन अमृतसुर परदेश गया वसुभूति भी साथ हुआ, उसने मार्ग में अमृतसुर को मारडाला और घर आकर उसकी स्त्री को यह हर्ष समाचार सुनाया, उसने कहा कि मेरे पुत्रों को भी मारडाल जिससे निष्कण्टक भोग करें, यह बात उदित की बहू ने सुन ली, उसने अपने पति से कही और उसने वसुभूति को मारडाला, फिर उदित मुदित मुनि होकर स्वर्ग गये, वसुभूति का जीव अनेक योनियों में घूमता हुआ मनुष्य होकर मिथ्यात्वी तापसी हुआ और मरकर अग्निकेतु नाम का ज्योतिषी देव हुआ, उदित मुदित के जीव स्वर्ग से आकर एक राजा के यहां रत्नरथ और विचित्ररथ नामके पुत्र हुए और वसुभूति का जीव भी उस ही राजा के यहां दूसरी रानी से अनुधर नाम का पुत्र हुआ, रत्नरथ ने एक स्त्री व्याही, अनुधर भी उस स्त्री को चाहता था इस वास्ते इनमें बहुत वैर होगया, अनुधर रत्नरथ का देश उजाड़ने लगा, दोनों भाइयोंने मिलकर अनुधर को देश से निकाल दिया, फिर यह दोनों भाई मुनि होकर स्वर्ग गये वहां से आकर हम देशभूषण और कुलभूषण नाम के राजपुत्र हुए, राजा ने हमारे विवाह के वास्ते कन्यायें बुलाईं, हम दोनों भाई उन कन्याओं को देखने को चले परन्तु मार्ग में हमने अपनी बहिन को देखकर यह समझा कि यह ही कन्या हमारे विवाह के वास्ते आई है, हम दोनों भाई उस पर आशक्त होगये और दोनों अपने २ मन मे विचारने लगे कि अगर दूसरा भाई इसको व्याहना चाहेगा तो मैं उसको मार डालूंगा, फिर जब हमको मालूम हुआ कि यह तो हमारी बहिन है तो बहुत पछताये और मुनि होगये ।

अनुधर देश से निकल कर मिथ्यात्वी तापसी होगया और एक राजा के यहां गया जिसने उसके तप की बहुत तारीफ करी, वहां एक नृत्यकारिणी जैनधर्म ग्रहण करके सम्यक्ती होगई थी, उसने राजा से कहा कि जिस तापसी की आप इतनी तारीफ करते हैं उसका पाखण्ड थोड़े ही दिनों में मालूम हो जावेगा, घर आकर उस नृत्यकारिणी ने अपनी कन्या को सिखा बुझाकर उस तापसी के पास भेजी, तापसी उस पर आशक्त होगया और उसकी तरफ हाथ बढ़ाने को तय्यार हुआ, कन्या ने

कहा कि तुम मेरी माता के पास चलो और उससे मुझे माग लो, तब वह कन्या के साथ उसके घर आया और कन्या को मांगने लगा, नृत्यकारिणी ने तापसी को बांध लिया और राजाको दिखाया, राजा ने उसको निकाल दिया, वह मरकर अनेक योनियों में घूमता फिरा फिर मनुष्य होकर तापसी हुआ और मरकर यह अग्निप्रभ नाम का ज्योतिषी देव हुआ और पूर्वभव के वैर के कारण यहां आकर यह उपद्रव किया।

केवली भगवान के समोसरण में उस समय गरुडेन्द्र भी आया था, उसने यह मालूम करके कि राम लक्ष्मण ने मुनियों का उपसर्ग दूर किया है इनसे कहा कि जो मांगो सो दूं, इन्होंने कहा कि जरूरत पडने पर हमारी सहायता करना गरुडेन्द्र ने यह बात मंजूर कर ली; फिर राम लक्ष्मण ने इस पहाड़ पर सैकड़ों जिन मन्दिर बनवाये जिससे वंशगिर का नाम रामगिर होगया और वहां के राजा ने इन की बहुत सेवा की।

नोट।

महापुराणके कथनानुसार तो यह अद्भुत कथा भी असत्यही ठहरती है जिसमें काम कथाओं का इतना भारी ढेर लगा दिया गया है कि जिसको पढ़कर ख़याल होता है कि अगर व्यभिचार और कामवासना में सतयुग ऐसा भारी भ्रष्ट होरहा था कि कोई भी कथन बिना ऐसी बातों के नहीं किया जा सकता है तो सतयुग की कथा सुनाई ही क्यों जाती है, इसके अलावा भूतों और प्रेतों के जैसे डरावने दृश्य इस कथा में वर्णन किये गये हैं मालूम होता है कि ऐसे ही कथनों के कारण हिन्दुस्तान के लोग ऐसे बुज़दिल होगये हैं कि उनको दिन दोपहरी में बस्ती से बाहर निकलने और बाग बगीचों में जाते हुए भी डर लगता है और हर जगह भूत और चुड़ेलों का ही ख़याल होता है।

मालूम नहीं राम लक्ष्मण ने इन भूतों और देवों पर अपना धनुषबान क्यों उठाया, क्या देव भी बाणों से बींधे जा सकते हैं, क्या यह शोक की बात नहीं है कि खुद ही तो पद्मपुराण में यह कहा है कि असली इन्द्र आदिक देवता युद्ध में रावण आदि मनुष्यों से नहीं हार सकते हैं और खुद ही यहां देवों के मुकाबिले में राम से धनुषबाण उठवाया है, और इस धनुष ही के भय से देव भाग गये हैं, कारण इसका सिवाय इसके और कुछ नहीं है कि यह पद्मपुराण रामायण से ही बनाया गया है इस कारण हरएक कथन में उसकी झलक आये बिदून नहीं रही है, नहीं मालूम उस ज्योतिषी देव को नारायण बलभद्र का क्या भय हुआ था जिससे वह डरकर भाग

गया, क्या सचमुच ही वह नारायण बलभद्र उस देव को अपने बाणों से बींध सकते थे, वा अन्य कोई पीडा पहुंचा सकते थे, अगर नहीं तो वह देव क्यों भाग गया और क्यों इन्होंने धनुषबाण चढ़ाया, क्या यह आश्चर्य्य की बात नहीं है कि ज्योतिषीदेव तो नारायण बलभद्र का नाम सुनकर ही भाग गया परन्तु जब रावण ने इन ही नारायण बलभद्रसे युद्ध किया और विद्यामयबाण चलाये तब इनसे डरकर कोई भी विद्यादेवी न भागी बल्कि रावण की छोड़ी हुई शक्तिदेवी ने लक्ष्मण का ऐसा बेहाल बनाया कि राम उसको बिल्कुल ही मरा हुआ समझकर रोने लगे, यह बेचारी विद्या देवियां और शक्ति-देवियां तो ऐसी कमजोर हैं कि थोड़े से ही उपाय से मामूली मनुष्य भी इनको सिद्ध कर लेते हैं अर्थात् काबू मे कर लेते हैं और सेवक की तरह इनसे जो चाहें काम लेते हैं, पस जब यह विद्या देविया भी राम लक्ष्मण से डरकर न भागीं तो ज्योतिषी देव का डरकर भाग जाना तो बहुत ही असम्भव है।

अनुधर तापसी की मिट्टी पलीद करने के लिये यदि नृत्यकारिणीको सम्यक्ती जैन न बनाया जाता तो शायद अच्छा होता क्योंकि जैनी सम्यक्ती होने पर भी अपनी कन्या से ऐसा नीच कार्य्य कराना कि वह तापसी को अपने पर मोहित करके घर ले आवे अच्छा नहीं मालूम होता है, इस कथन मे मिथ्यात्वी तापसियों को बार बार ज्योतिषी देव बनाना कोई अनोखी बात नहीं है बल्कि सब ही जैनकथा ग्रन्थों में प्रायः मिथ्यात्वी तापसियों का ज्योतिषी देव होजाना ही वर्णन किया गया है और कारण इसका यह ही मालूम होता है कि हिन्दू लोगों ने अपने तापसियों को बहुत करके ध्रुव और सप्तऋषि आदि ज्योतिषी देव ही बन जाना लिखा और इस ही को अति उच्चपद समझा है उन ही के कथनानुसार जैन कथाओं में भी इन हिन्दू तापसियों को ज्योतिषी देव बना दिया है।

इस कथा में ज्योतिषी देव द्वारा मुनियों पर उपसर्ग का होना और राम लक्ष्मण द्वारा उसको भगाना रामायण के उस कथन के बदले मे मालूम होता है जिसमें तापसियों का राम लक्ष्मण से रक्षा के वास्ते प्रार्थना करना और उनका एक महाभयङ्कर राक्षस को मारना वर्णन किया गया है और गरुडेन्द्र का राम लक्ष्मण को सहायता का वचन देना रामायण के उस कथन के बदले में मालूम होता है जिसमें इनको अगस्त्य ऋषि ने देवताओं के बनाये हुए धनुषबाण दिये हैं, क्योंकि पद्मपुराण में भी आगे चलकर इस गरुडेन्द्र ने यह ही सहायता दी है कि उसने युद्ध में इनके पास सिंहवाहिनी और गरुडवाहिनी विद्या और जलबाण और अग्निबाण आदि भेजे हैं।

मालूम नहीं कि सेकड़ों जिन मन्दिर बनवाने के वास्ते राम के पास द्रव्य कहां से आगया था और यदि उनके पास इतना द्रव्य था तो वह पैदल क्यों फिरते थे और क्यों अति कोमलाङ्गी सीता को पैदल फिराते थे, रामायण की तरह पद्मपुराण मे इनको वनवास तो दिया ही नहीं गया था, तो फिर वह सवारी क्यो नहीं रखते थे, गरज यह कथा भी सब तरह से वेजोड़ ही रह गई है।

जटायु नाम का गृद्ध पक्षी।

रामायण का कथन है कि फिर वह राम लक्ष्मण पञ्चवटी गये और वहीं रहने लगे, रास्ते में उनको एक गृद्ध पक्षी मिला जटायु जिसका नाम था, इन्होंने उसको राक्षस समझा परन्तु वह राजा दशरथ का मित्र था इस वास्ते वह भी इन ही के साथ रहने लगा।

पद्मपुराण के कथनानुसार राम लक्ष्मण दण्डक वन को गये, रास्ते में उन्होंने दो मुनियों को आहार दिया जिससे देवों ने पञ्चाश्चर्य्य किये, वहां एक वृक्ष पर एक गृद्ध पक्षी बैठा था, यह देखकर उसको जातिस्मरण होगया, वह बहुत पश्चात्ताप करने लगा कि पूर्व भव में मनुष्य जन्म पाने पर भी मैने धर्म न किया अब मैं किस तरह इन साधुओं की शरण लूं, वह वृक्ष से गिरकर मुनियों के चरणों में आपड़ा, वह पक्षी बहुत मोटा था, जिसके भूमि पर पड़ने के शब्द से हाथी और सिंह आदि वन के जीव भाग गये, वह पक्षी मुनियों के चरण के धोने के पानी में आकर पड़ा था, उस जल के प्रभाव से उसका शरीर रत्नों की राशि के समान नाना प्रकार के तेज से मण्डित होगया और उसकी देह में नाना प्रकार के रत्नों की छवि होगई, मुनियों ने उस पक्षी को उपदेश दिया और वह राम के साथ रहने लगा, फिर उस पक्षी के शरीर मे रत्न और सोनेकी जटा निकली जिससे उन्होंने उसका नाम जटायु रक्खा, लक्ष्मण ने एक हाथी पकड़ा और राम ने रत्न और सोने का एक रथ बनाया जिसमें चार हाथी जोड़े उसमें बैठ कर यह सब वन में भ्रमण करने लगे।

नोट।

महापुराण के कथनानुसार तो यह कथा भी असत्य ही है, इसके सिवाय यह कथन अटल सबूत इस बात का है कि यह पद्मपुराण रामायण से ही बनाया गया है क्योंकि गृद्ध तो चील के बराबर एक छोटा सा पक्षी होता है जो पशुओं की लाश को नोचते हुए जङ्गलमे झुण्ड के झुण्ड दिखाई दिया करते हैं, पद्मपुराणमें भी उसको दुष्ट

मांसाहारी अशुचि पक्षी वर्णन किया है, परन्तु ऐसा होने पर भी रामायण में उसका बडा भारी शरीर और अत्यन्त बल वर्णन किये जाने के कारण उस ही की रीस करके पद्मपुराण में भी यह गप्प मार दी है कि जब वह वृक्ष से भूमि पर पड़ा तो ऐसा महा शब्द हुआ जिससे डरकर जङ्गल के सिंह और हाथी भी भाग गये, यह गप्प ही नहीं है बल्कि महागप्प है और स्ववचन बाधित है क्योंकि जो पक्षी पेड पर बैठ सकता है वह कितना ही बडा क्यों न हो तो भी उसके गिरने का इतना भारी शब्द नहीं हो सकता है कि उस जङ्गल के शेर और हाथी भी भाग जावें, ऐसा तो बड़े से बड़े वृक्ष के गिरने पर भी नहीं हो सकता है।

इस ही महागप्प के साथ पद्मपुराण में यह गप्प भी मिलादी गई है कि मुनियों के चरण के धोने के पानी के स्पर्श से उसकी देह में नाना प्रकार के रत्नों की छवि होगई, शरीर के पुद्गल परमाणुओं का पानी के स्पर्श से एकदम इस प्रकार बदल जाना बिलकुल अप्राकृतिक है, और इस ही के साथ राम का रत्न और सोने का रथ बनाना भी विश्वास के योग्य नहीं है, क्योंकि वन वन पैदल फिरने वाले उन बेचारों के पास इतना धन कहां से आया था जिससे वह रत्न और सोने का रथ बना लेते और यदि इतना धन होता तो अब तक पैदल ही क्यों फिरते; मालूम होता है कि रामायण में जो यह लिखा है कि उस बन में इन्द्र अपना रत्नमय दिव्य रथ लाया और उसको राम लक्ष्मण ने बड़े आश्चर्य से देखा उस ही कथन के बदले में पद्मपुराण में यह रत्नमय रथ बनाया गया है।

---

* पांचवां अध्याय *

चन्द्रनखा की आशक्ति और सीताहरण।

रामायण का कथन है कि रावण की बहिन सूर्पनखा इस ही दण्डक बन में रहा करती थी, वह राम को देखकर काम से पीडित होगई और रामके पास आकर कहने लगी कि मुझको अपनी स्त्री बना लो, राम ने हँसकर कहा कि मेरे साथ तो स्त्री है तू लक्ष्मण को अपना पति बना, तब लक्ष्मण के पास गई, लमक्ष्ण ने कहा कि मैं तो राम का दास हूं तू राम को ही अपना पति बना, तब वह फिर राम के पास

आई और सीता के भक्षण करने को उसकी तरफ झपटी, राम ने रोकी लक्ष्मण और ने उसके कान नाक काट लिये, वह चिल्लाती हुई खर के पास गई, खर और दूषण उसके भाई थे और इस ही वन में रहते थे, खर ने राम लक्ष्मण के मारने के वास्ते १४ राक्षस भेजे, रामने उन सबको मार दिया, तब खर १४ हजार महायोद्धा लेकर और दूषण को सेनापति बनाकर लडने को आया, राम ने सीता और लक्ष्मण को तो एक गुफा में भेज दिया और स्वयम् इनसे लडा, देव और गन्धर्व भी युद्ध देखने को आये, राम ने खर दूषणको उसकी सब सेना सहित मार दिया, एक राक्षस रावण के पास गया और सब हाल सुनाया, रावण को बडा क्रोध आया और वह युद्ध का तैयार हुआ, अकम्पन ने कहा कि राम युद्ध में नहीं जीता जा सकता है, उसकी स्त्री रूपवान है आप उसको हर लें तब राम आप ही तडपकर मर जावेगा, रावण को यह सलाह पसन्द आई और अगले दिन वह मारीच के पास गया, मारीच ने राम के बल की बहुत तारीफ़ की और कहा कि सीताहरण से सर्वनाश हो जावेगा, रावण लङ्का को लौट आया, परन्तु सूर्पनखा ने फिर उसको उकसाया तब फिर मारीच के के पास गया और जिस तिस तरह उसको साथ लेकर दण्डक वन में गया, वहा जाकर मारीच एक सुन्दर हिरण बना मणि जडित जिसके सींग थे, सीता ने जङ्गल में फूल चुनते हुए उस हिरण को देखा और उसको जिन्दा पकडने वा मारकर-लाने के वास्ते राम लक्ष्मण से ज़िद की, लक्ष्मण ने कहा कि यह तो मारीच राक्षस है परन्तु सीता ने एक न मानी, तब राम तो हिरण के पीछे गये और लक्ष्मण से कह गये कि जटायु और तुम सीता की रक्षा करना।

यह हिरण कभी छिप जाता था कभी दिखाई देने लगता था इस प्रकार वह राम को बहुत दूर लेगया, राम ने थककर ब्रह्माका बनाया हुआ बाण उस पर छोड़ा बाण खाकर मारीच उछल कर धरती पर पडा और अपना असली रूप बना लिया और राम की बोली बनाकर लक्ष्मण को पुकारने लगा, उसकी यह आवाज सुनकर राम को बहुत खटका हुआ और तुरन्त अपने डेरे की तरफ चला, इधर सीता ने यह आवाज सुनकर लक्ष्मण को राम की सहायता के वास्ते जाने को कहा, लक्ष्मण ने जाने से इनकार किया और कहा कि राम को कोई भय नहीं हो सकता है, सीता ने कहा कि तुम राम को मरवा कर मुझे ग्रहण करना चाहते हो, लाचार लक्ष्मण गया, पीछे रावण फकीर का भेष करके सीता के पास आया, सीता ने उसको खाना पानी दिया और अपना सारा हाल सुनाया, तब रावणने अपना असली हाल सुनाकर कहा कि तुम हमको अपना पति बनाओ, सीता ने उस को झिडका,

तब रावणने अपना असली रूप धारण किया और सीताको जबरदस्ती उठाकर अपने रथ में बिठा लिया और ले चला, तब जटायु ने रावण से बहुत युद्ध किया उसका रथ, धनुष और बकतर तोड दिया और सारथी को मारडाला तब रावण सीता को गोद में उठाकर ही आकाश मार्ग से लेगया।

जैन महापुराणमे यह कथा इस प्रकार लिखी है कि मुनि नारद जिसके सिर पर पीत जटा उँगली में अँगूठी, हाथमे रुद्राक्ष की माला और गलमे जनेऊ था रावण के पास गया और कहा कि मैं बनारस से आरहा हू जहा रामचन्द्र राज्य कर रहा है, जनक ने गुप्त रीति से यज्ञ करके और राम लक्ष्मण को बुलाकर अपनी सीता ब्याह दी है, वह सीता रूप गुण की खान है और तुम्हारे लायक है, उसके भोगने से वह सुख होता है जो शिवसङ्गम से होता है, यह सुनकर रावण को काम उपजा और सीता को जबरदस्ती हर लेने का इरादा किया, मारीच मन्त्री ने मना किया, परन्तु रावण ने उसकी बात न मानी, तब लाचार होकर मारीच ने यह सलाह दी कि एक चतुर दूती के द्वारा सीता को फुसलाकर बुला लो और जब दूती से काम न चले तब जबरदस्ती हरकर लाओ।

इसपर रावणने सूर्पनखा नामकी एक स्त्री सीता के पास भेजी, राम लक्ष्मण उस समय बनारसके वनमें क्रीड़ा करने को चित्रकूट पर अपनी स्त्रियों सहित आये हुए थे सूर्पनखा एक बहुत बूढी स्त्री का रूप बनाकर सीता के पास गई और इधर उधर की बातें बनाकर सीता को रावण के वास्ते फुसलाने की बहुत कोशिश की सीता की सब सखिया उस बुड्ढी से हँसी करने लगीं, आखिर लाचार होकर वह चली गई और रावण से जाकर कहने लगी कि सीता तो पूरी पतिव्रता है वह किसी तरह भी नहीं मान सकती है, तब रावण विमान में बैठकर और मारीच आदि को साथ लेकर स्वयम वहां आया, मारीच सोने का मृग बनकर वहां घूमने लगा, सीता ने राम को उस हिरण के पकडने के वास्ते कहा, यद्यपि राम ने जान लिया कि यह मायामय मृग है तो भी राम उसके पीछे हुआ, हिरण कभी छिप जावे कभी निकले वह हिरण राम को वन में बहुत दूर लेगया, इधर रावण ने राम का रूप बनाया और सीता के पास जाकर कहा कि मृग तो पकडकर नगर में भेज दिया है और अब शाम होगई है तुम भी शहर को ही चलो; पुष्पक विमान का रावण ने पालकी बना दिया जिसमें सीता सवार होगई, रावण राम के रूप मे घोड़े पर सवार हुआ और पालकी के पीछे २ चला, रास्ते में सीता को सन्देह हुआ परन्तु वह सीता को लेकर लङ्का पहुंच ही गया।

इसके विरुद्ध पद्मपुराण मे यह लिखा है कि रावण की बहिन सूर्पनखा नहीं थी बल्कि चन्द्रनखा थी और खर और दूषण उसके भाई नहीं थे बल्कि वह खर दूषण से व्याही गई थी, जो १४ हजार राजाओं का सरदार होकर रावण की तरफ से पाताल लङ्का में रहता था, उसका बेटा सम्बूक १२ वर्ष से दण्डक वन में एक बास के बीड़े में बैठकर सूर्यहास खड्ग की प्राप्ति के वास्ते विद्या सिद्ध कर रहा था, उसकी माता उसके लिये भोजन लाया करती थी, विद्या सिद्ध होने पर वह खड्ग बास के बीड़े पर आकर प्रगट हुआ, उस खड्ग को आये तीन दिन होगये और चन्द्रनखा ने उस खड्ग को देखकर अपने पति को भी यह हर्ष समाचार सुना दिया, राम लक्ष्मण का डेरा भी उस ही वनमें था, लक्ष्मण घूमता हुआ वहां जा पहुंचा और खड्गको देखकर उसको उठा लिया और आजमाने के वास्ते उसको बास के बीड़े पर मारा जिससे वह बीड़ा शम्बूक समेत कट गया, एक हजार देव उस खड्ग के रक्षक थे, लक्ष्मण के हाथ में खड्ग आने से वह सब देव भी लक्ष्मण के सेवक होगये।

जब चन्द्रनखा भोजन लेकर आई तो अपने बेटे को मरा हुआ देखकर बहुत व्याकुल हुई और पुत्र के मारने वाले को मार डालने के वास्ते वन में फिरने लगी, फिरते २ उसने राम लक्ष्मण को देखा, इनको देखते ही वह कामबाण से बींधी गई और पुत्र का मरना भूल गई, वह अपनी कामेच्छा को पूरा करने के वास्ते एक पेड़ के नीचे बैठकर रोने लगी, सीताने उसके पास आकर उसको धीरज बँधाया और अपने डेरे पर लाई, उसने राम से कहा कि मेरे मां बाप मरगये हैं, मैं मरने के वास्ते इस वनमें आई थी परन्तु वन पशुओं ने भी मुझको न खाई, अब तुम में से ही कोई मुझ को वर लो, राम लक्ष्मण ने उसकी बात का कोई उत्तर न दिया, तब वह निराश होकर चली गई और अपने अङ्ग में मिट्टी लगा, बाल बखेर, छाती और कुचों को विदार और जङ्घा में खून निकाल अपने पति के पास गई और कहने लगी कि मैं भोजन लेकर वन में गई थी, देखा तो किसी ने मेरे पुत्र को मारडाला है और खड्ग भी लेगया है, मैं पुत्र के सिर को गोद में लेकर रो रही थी कि उस दुष्ट ने आकर मुझसे अनीति करनी चाही, मैं बड़ी मुश्किल से जान बचाकर आई हूं।

यह सुनकर दूषण को क्रोध आया, उसने तुरन्त रावण के पास खबर भेजी और १४ हज़ार राजाओं को लेकर राम लक्ष्मण पर चढकर आया, लक्ष्मण उससे लड़ने को गया और राम से कहता गया कि भीड़ पड़ैगी तो सिंहनाद करूंगा, खूब युद्ध हुआ, खर दूषण ने विराधित के पिता चन्द्रोदर को पाताल लङ्का से निकाल कर वहां का राज्य लिया था और चन्द्रोदर के मरने पर विराधित निरादरा

ही भटकता फिरता था वह भी आया और लक्ष्मण का तरफदार होकर लड़ा, खर दूषण मारा गया, आकाशसे देवोंने फूल बरसाये और धन्य २ कहा, उसके १४ हजार राजा भी मारे गये, लक्ष्मण की जीत हुई।

युद्धके होते हुए रावण भी अपने बहनोई खर दूषण की सहायता को आ पहुंचा परन्तु युद्धस्थल में पहुंचने से पहिले सीता को देखकर उस पर आशक्त होगया और विचारने लगा कि खर दूषण के लश्कर में मेरे आने की खबर होने से पहिले ही मैं इसको हर ले जाऊं; उसने अपनी विद्या के बलसे सब हाल मालूम किया और सिंह-नाद किया; नाद सुनते ही राम तुरन्त लक्ष्मण की सहायता को गये और सीता को फूलों में छिपाकर जटायु से कहते गये कि यह स्त्री अबला जाति है इसकी रक्षा रखियो, राम के जाने पर रावण तुरन्त सीताके पास आया और ज़बरदस्ती विमान में बिठा लेगया, जटायु ने अपने नख और चोंच से रावण की छाती लहूलुहान करदी तब रावण ने उसको अपने हाथ की ऐसी झपेट मारी कि वह बेहोश होगया और रावण सीता को लेकर चलता बना।

नोट।

राम लक्ष्मण के वनमे भ्रमण करने का जो विस्तृत कथन पद्मपुराण मे लिखा है वह सब कथन तो महापुराण के कथन के अनुसार बिलकुल असत्य और कपोल कल्पित सिद्ध होता ही था क्योंकि महापुराणके अनुसार तो इस प्रकार वन-२ फिरने के बदले में राम लक्ष्मण मुकट सिर पर रखे हुए बनारस का ही राज्य करते रहे हैं परन्तु सीताहरण के इस कथन की बाबत पद्मपुराण और महापुराण में जो आकाश पाताल का भेद है वह स्पष्ट इस बात को सिद्ध करता है कि दोनों ग्रन्थकर्त्ताओं ने अपनी-२ बुद्धि के अनुसार अलग-२ तौर पर रामायण के कथन को तोड़ा मरोड़ा है जिसके कारण कथन बिलकुल बेजोड़ होगया है।

नारदको मुनि कहकर उसका जो स्वरूप महापुराणमें लिखा है वह किसी तरह भी जैनग्रन्थ को शोभा नहीं देता है और महापुराण में इस नारद को ब्रह्मचारी और पद्मपुराण मे क्षुल्लक बताकर इसके जो कृत्य दिखाये हैं वह साफ सिद्ध करते हैं कि यह सब कथन हिन्दू ग्रन्थों से ही लिया गया है और बिलकुल आंख मीचकर लिया गया है, इन कथनों के लेने मे ग्रन्थकारो ने जरा भी विचार इस बात का नही किया है कि यह कथन जैनधर्म को शोभा भी देता है वा नही, सीता के भोगने से वह सुख होता है जो शिव सङ्गम से अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति से होता है, नारद के मुख से ऐसी बात हमें तो बहुत ही घिणावनी मालूम होती है।

जिस मारीच को जैनग्रन्थों में मनुष्य सिद्ध किया है उसका सोने का हिरण बन जाना बिलकुल ही अप्राकृतिक है, मनुष्य का औदारिक शरीर किसी प्रकार भी तुरन्त ही हिरण आदि पशु के रूप में नहीं ढल सकता है, इस वास्ते महापुराण का यह कथन बिलकुल ही असम्भव है, रहा पद्मपुराण का कथन उसपर तो अनगणित एतराज उठते हैं, जैसा कि खड्ग सिद्ध होजाने पर वह खड्ग बांस के बीड़े के ऊपर ही क्यों अटक गया, शम्बूक के पास क्यों नहीं पहुंचा, तीन दिन तक भी शम्बूक ने उस खड्ग को क्यों नही लिया, जब उस खड्ग को शम्बूक ने सिद्ध किया था और उस ही के वास्ते यह खड्ग आया था तो वह लक्ष्मण के हाथ में कैसे आगया, ग्रन्थ में लिखा है कि हजार देव उसके रक्षक थे परन्तु इस कथनसे तो यह मालूम होता है कि एक कौड़ी भी उसकी रक्षक नही थी, क्या इस ही का नाम रक्षा है कि जब लक्ष्मणने उस खड्गको उठाया तो वह हज़ारों देव लक्ष्मणकी ही पूजा करने लगे और जब लक्ष्मण ने उस खड्ग से बांसका बीडा काटा तो उस खड्ग ने अपने सिद्ध करने वालेको भी काट दिया और वह हजारों देव तमाशा ही देखते रहे, फिर वह चन्द्रनखा अकेली ही पाताललङ्का से दण्डक वन में खाना लेकर आई और अपने बेटे को मरा हुआ देखकर अकेली ही वन में भटकती फिरने लगी, मानो वह एक बहुत ही ग़रीब किसान की स्त्री थी जो अकेली ही खेत पर रोटी ले जाया करती है, १४ हज़ार राजाओंके मालिक की रानी तो एक महलसे दूसरे महल मे और महल के एक कमरे से दूसरे कमरे में जाती है तो हजारों बांदियां और सैकड़ों नौकर साथ चलते हैं, उसका इतने दूर देश में आना तो हज़ारों सिपाहियों और नौकर चाकरों को साथ लिये बिदून किसी तरह भी नहीं हो सकता था।

इसके अलावा ऐसी स्त्रीको जिसका जवान बेटा अभी किसी ने मारडाला हो और वह क्रोध मे आकर मारने वाले की तलाश में फिरती हो, बेटे के मारने वाले ही को देखकर काम उत्पन्न होजाना और ऐसा काम उत्पन्न होजाना कि सब कुछ भूल-कर कामभोग की ही कोशिश करने लगे, यह कामरसका सबसे ही बढ़िया उदाहरण है जो शायद ही कहीं देखने में आता हो, परन्तु मालूम नहीं धर्म ग्रन्थों में भी ऐसा गहरा कामरस दिखाने से काव्य चतुराई दिखाने के सिवाय और क्या लाभ निकाला गया है।

फिर १४ हज़ार राजाओं और महाबली खर दूषणके साथ अकेले एक लक्ष्मणका युद्ध करना और उन सबको मारना भी विश्वासके योग्य नहीं हो सकता है, इधर महाबली रावणका अपने भानजेकी मृत्यु सुनकर क्रोधमें भरे हुए आना और युद्धस्थलके करीब

पहुंचकर सीता पर आशक्त होकर युद्ध को भूल जाना भी कामरस की उत्कृष्टता को दिखाने के सिवाय और कुछ नहीं है, यहां भी ग्रन्थमें ऐसा ही नक़शा बांधा गया है मानो रावण जैसा महाराजा भी अकेला ही युद्धस्थल में आया था और लावोलश्कर तो क्या वल्कि कोई नौकर चाकर भी साथ नही लाया था, तब ही तो उसने यह विचार किया कि खर दूषण के लशकर में मेरे आने की ख़बर होने से पहिले ही मैं सीताको हर ले जाऊं, मानो रावण एक छोटीसी मक्खी था जो बिल्कुल पास आया हुआ भी नहीं जाना जा सकता था और युद्ध भी एक मामूली कुश्ती थी जिसमें आस पास आने जाने वालों की कोई खबर नहीं रखी जाती है, १४ हजार राजाओं का संग्राम में आना और कोसों तक की देख रेखका इन्तज़ाम न करना कभी यक़ीन में नहीं आ सकता है।

राम का गृद्ध पक्षी को यह कहना कि सीता अबला स्त्री है तुम इसकी रक्षा रखना, इस सारी कथा के कल्पित होने का एक अटल सबूत है और साफ़ ज़ाहिर करता है कि गृद्ध पक्षी आदिक का कथन रामायणसे बिलकुल ही बेसोचे समझे लिया गया है, भला रामायण में तो खर दूषण से राम लक्ष्मण की लड़ाई में राम की जीत होने पर आकाश के देवों का हर्ष मनाना ठीक ही है, क्योंकि राम लक्ष्मण का जन्म ही देवोंकी प्रार्थना पर इन राक्षसों के मारनेके वास्ते कहा जाता है परन्तु पद्मपुराण में जब लक्ष्मण ने खर दूषण का सिर काटा तब आकाश से फूलों की वर्षा क्यों हुई और क्यों देवों ने धन्य २ कहा, पद्मपुराण के कथनानुसार तो इस समय पर देवों का हर्ष मनाना महा अन्याय था क्योंकि लक्ष्मण ने ही बिना अधिकार खर दूषण के बेटे का सिद्ध किया हुआ खड्ग लिया और उसका सिर काटा इस वास्ते खर दूषण को तो राम लक्ष्मण पर चढ़ आने का यह ही कारण काफ़ी था, और देवों को खर दूषण की ही जीत मनानी चाहिये थी और लक्ष्मण के जीत जाने और बेचारे खर दूषण के मारे जानेपर रोना चाहिये था परन्तु तौ भी पद्मपुराण में रामायण के कथन के अनुसार देवों का हर्ष मनाना ही दिखाया गया है जिससे स्पष्ट सिद्ध है कि यह पद्मपुराण रामायण से ही बनाया गया है और जहां कहीं कुछ कथन बदल दिया है वही बेजोड़ होगया है, पद्मपुराण में तो देवों को यह चाहिये था कि वह खर दूषणकी सहायता करते और कमसे कम लक्ष्मण के हाथ में से खड्ग छीनकर खर दूषण को देते क्योंकि वह खड्ग खर दूषण के ही बेटे का था।

राम के द्वारा सुग्रीव को उसकी स्त्री का मिलना ।

रामायण के कथनानुसार सीता के हरेजाने से राम बिल्कुल ही बावला सा होगया और वृक्षों तक से सीता का पता पूछता हुआ फिरने लगा, एक राक्षस ने मरते वक्त राम से कहा कि तुम सुग्रीव को अपना मित्र बना लो वह सीताके ढूंढने में तुम्हारा सहायक होगा, तब राम लक्ष्मण सुग्रीवके पास गये, अव्वल हनुमान मिला, वह बानर का रूप छोड़कर एक भिक्षुक के रूपमें राम से मिला, फिर रामको सुग्रीव से मिलाया, सुग्रीव ने कहा कि बाली हमारा भाई है, पिता के मरने के बाद बाली राजा हुआ और मैं युवराज, परन्तु एक बात पर बालीने नाराज होकर मुझको राज्य से निकाल दिया और मेरी स्त्री भी लेली, तबसे मैं हनुमान, नल, नील और तार इन चार मन्त्रियों सहित यहां पर्वत पर रहता हू, राम और सुग्रीव में अग्नि की साक्षी से मित्रता होगई, राम ने कहा हम बाली को मारकर तुमको राज्य दिलावेंगे, सुग्रीव ने कहा हम सीता को ढूंढ़ देंगे क्योंकि हमने रावण को तुम्हारी स्त्री लेजाते हुए देखा है, आकाश में जाती हुई सीता ने हमारे ऊपर अपना ओढना और आभूषण डाले थे।

राम के कहने से सुग्रीव बाली से लड़ने को गया, राम भी सहायता को गये परन्तु बाली और सुग्रीव की शकल मिलती हुई देखकर यह पहिचान न कर सके कि बाली कौन है और सुग्रीव कौन, इस कारण सुग्रीव की सहायता न कर सके, सुग्रीव हारकर भाग आया, तब राम ने पहिचान के वास्ते सुग्रीव के गले मे फूलों की माला डालकर उसको दोबारा लड़ने के वास्ते भेजा, बाली युद्ध के वास्ते आया और राम ने बाली को तीर से मारडाला, तारा बाली की असली स्त्री थी और रुमा सुग्रीव की स्त्री थी जिसको बाली ने ग्रहण करली थी, अङ्गद तारा का बेटा था और सुषेण सुग्रीव का ससुर था, बाली के मरने पर सुग्रीव राजा बनाया गया और सुग्रीव ने बाली की स्त्री तारा को भी अपनी स्त्री बना लिया।

जैन महापुराण में यह कथन इस तरह पर लिखा है कि जब राम को बन में शाम होगई और हिरण छिप गया तब राम रास्ता भूल गये, रातको बन में ही रहना पड़ा, सुबह ही वह डेरे पर आये, वहां सीता न देखी, राम बहुत व्याकुल हुए, बनमें वृक्षों से सीता का पता पूछने लगे, सीताके जो वस्त्र फटे पड़े थे वह लोगों ने लाकर दिये, इधर अयोध्या में राजा दशरथ को खोटा सुपना आया, निमित्तज्ञानी से पूछने

पर मालूम हुआ कि रावण सीताको हर लेगया है, दशरथ ने बनारस में राम के पास दूत भेजा और रावण का सब हाल बताया और कहला भेजा कि हम भी शीघ्र ही तुम्हारे पास आने वाले हैं घबराओ मत, जनक भरत और शत्रुघ्न सब मिलकर राम के पास आये और धीरज बँधाया।

तब ही सुग्रीव और हनुमान राम के पास आये और कहा कि बाली और सुग्रीव दो सगे भाई हैं, बाली राजा हुआ और सुग्रीव युवराज परन्तु बाली ने लोभ के कारण सुग्रीव को निकाल दिया है, हनुमान सुग्रीव का सखा है, हमको ब्रह्मचारी नारद ऋषि ने भेजा है कि राम की स्त्री को रावण लेगया है तुम जाकर उनकी सहायता करो वह सुग्रीव को उसका राज्य दिला देंगे, फिर हनुमान ने कहा मैं सीता के पास जाता हूँ कोई निशानी दो, रामने अँगूठी दी, हनुमान लङ्का गया और सीता से मिलकर आया, फिर रामने हनुमान को दूत बनाकर रावणके पास भेजा परन्तु रावण ने एक न मानी, तब यह सब लङ्का पर चढ़े, चित्रकूट पर ठहरे वहाँ बालीने दूत भेजा कि मैं बहुत बलवान हूं, अगर तुम सुग्रीव को अपने साथ से अलग करदो तो मैं अकेला लङ्का जाकर और रावण को जीतकर तुम्हारी सीता ला दूं, राम ने कहा कि सीताको वापिस लानेकेबाद तुम्हारा कहा करेंगे, अब तो तुम भी साथ चलो, अङ्गद सुग्रीव का बेटा था उसने ही राम को यह सब सलाह दी थी; बाली ने यह बात न मानी बल्कि बहुत क्रोध किया, तब रामने अव्वल बाली पर ही चढ़ाई करी, खूब लड़ाई हुई, लक्ष्मण ने बाली को मारा और सुग्रीव को उसका राज्य दिया, फिर लक्ष्मण ने वहां एक विद्या सिद्ध की फिर लङ्का पर चढ़े।

इसके विरुद्ध पद्मपुराण में यह लिखा है कि जब राम को मालूम होगया कि सिंहनाद के धोके से सीता हरी गई है, तो वह बहुत घबराया लक्ष्मण ने राम को बहुत धीरज बँधाया, राम वृक्षों से पूछता फिरने लगा, लक्ष्मणने विराधित को पाताललङ्का का राज्य दिया, उसने अनेक विद्याधर सीता की तलाश में भेजे, लेकिन कुछ पता न लगा, तब विराधित राम लक्ष्मण को पातालङ्का में लेगया।

किहकन्धापुर का राजा बाली था वह अपने भाई सुग्रीव को राज्य देकर मुनि होगया था, सुग्रीव का विवाह सुतारा से हुआ था, साहसगति उस सुतारा पर आशक्त था, जब उसको सुतारा न व्याही गई तो उसने एक विद्या सिद्ध की जिसके द्वारा वह सुग्रीव का रूप बनाकर सुग्रीव के महल में जा घुसा, परन्तु सुतारा ने उसकी चालढाल से जान लिया कि यह सुग्रीव नहीं है, लोगों ने दोनों की एक सी शकल देखकर आधी २ सेना दोनों को बांट दी, सुग्रीव के पुत्र अङ्गद ने अपनी माता

के महल पर पहरा लगा दिया, दोनों में से किसी को भी रनवास में न जाने दिया, सुग्रीव भटकता फिरने लगा और आखिर को पाताललङ्का जाकर राम से मिला, राम ने कहा कि मैं तेरे वैरी को मारकर तेरा राज्य तुझे दिला दूंगा, सुग्रीव ने कहा कि इस कार्य्य के होने के बाद अगर मैं सात दिन के अन्दर सीता का पता न लाऊं तो आग में जल मरूगा, जिनेन्द्र मन्दिर में दोनों मे प्रतिज्ञा होगई।

राम लक्ष्मण कहकन्धापुर आये, सुग्रीव साहसगति से लड़ा, सुग्रीव हारा क्योंकि सुग्रीव और साहसगति का एक रूप देखकर राम सुग्रीवकी सहायता न कर सके, अगले दिन सुग्रीवको तो लक्ष्मण ने अपने पास रखा और राम ने साहसगति के साथ युद्ध ठाना, राम का देखने ही साहसगति की वेतांली विद्या निकल कर भाग गई और साहसगति का असली रूप निकल आया, तब सारी सेना उसके खिलाफ होगई, तो भी वह युद्ध को तय्यार हुआ और रामके हाथसे मारा गया, सुग्रीव को राज्य भी मिल गया और सुतारा भी।

नोट।

महापुराण और पद्मपुराण इन दोनों जैन ग्रन्थों के कथनमें इतना भारी अन्तर होने का बहुत शोक है और सब से ज़्यादा शोक इस बात का है कि ऐसी दशा में भी यह दोनों ग्रन्थ श्रीसर्वज्ञ भाषित जिनवानी कहे जाते हैं; इस कथन में महापराक्रमी राम का धीरज छोडकर वृक्षों तक से सीता का पता पूछते फिरना बहुत ही बुरा पाठ सिखाता है,-शोक है इन काव्य ग्रन्थों पर जिन्होंने अगर किसी की बड़ाई करी है तो आसमान से भी ऊपर चढ़ा दिया है और जब उस ही की बुराई करी है तो पाताल से भी नीचे गिरा दिया है, यह ही हाल राम का बताया गया है, साहसगति का विद्याबल से सुग्रीव जैसा रूप बना लेना बिल्कुल असम्भव है, क्योंकि इस हमारे औदारिक शरीर का परिवर्त्तन तो शरीरके सब परमाणु छिन्नभिन्न होकर फिर गर्भ आदि द्वारा शरीर बनने से ही हो सकता है, राम को देखकर साहसगति की विद्या का भाग जाना भी विश्वास के योग्य नहीं है, यदि वह ऐसे ही प्रतापी होते तो राम के साथ युद्ध में भी रावण की सब विद्यायें इनकी शकल देखते ही भाग जातीं; परन्तु वहां तो रावण की विद्याओं ने राम के विरुद्ध ऐसे २ पराक्रम दिखाये हैं कि उनके होश गुम कर दिये हैं, इन दोनों जैन ग्रन्थों के कथन को रामायण के कथन से मिलाने पर साफ़ मालूम होता है कि दोनों ग्रन्थों में कुछ बदल कर रामायण का ही कथन लिया गया है।

सीता की तलाश।

रामायण के कथनानुसार बरसात के कारण सीता की खोज न होसकी और सुग्रीव भोगों में ऐसा फँसा कि बरसात बीतने पर भी उसको सीता की तलाश का खयाल न आया, इस पर राम को चिन्ता हुई, लक्ष्मण क्रोध में आकर सुग्रीव के महल में घुस गया, सुताराने बहुत बहुत खुशामद करके लक्ष्मण का क्रोध ठण्डा किया लक्ष्मण ने सुग्रीव को बहुत धमकाया, तब सुग्रीव ने सब बानर बुलाये लाखों करोड़ों वानर आये, वह सारी पृथिवी पर सीता की खोज में भेजे गये, हनुमान, अङ्गद, जामवन्त, नल, नील आदि दक्षिण की तरफ गये, जब इनको भी कुछ पता न मिला और यह बिल्कुल निराश होगये तब इनको सम्पाति नाम का एक गृद्ध मिला जो जटायु का भाई था, उसने कहा कि वृत्रासुर संग्राम में हम दोनों भाई सूर्य्य के निकट पहुंच गये थे, हमको १०० योजन से भी अधिक दूर की वस्तु दीखती है सूर्य्य के ताप से जटायु बिकल हुआ तब मैंने उसको अपने परों में छिपा लिया, मेरे पर जल गये और मैं यहां पहाड़ पर गिर पड़ा, फिर उसने कहा कि सीता को रावण लेगया है वह लङ्का में रहता है, बीच में १०० योजन समुद्र है, हमने रावण को सीता को आकाश मार्ग से लेजाते देखा है, हमारा पुत्र हमारे वास्ते आहार लेने को गया था उस समय रावण सीता को ले जारहा था उसने उन्हीं को हमारे आहार के वास्ते लाना चाहा मगर रावण उसको धमकाकर चला गया, यह सुनकर सब बानर समुद्र किनारे गये परन्तु समुद्र को देखकर कहने लगे कि १०० योजन कूदना हमारे वास्ते अति कठिन है, तब जामवन्त ने हनुमान से कहा कि तुम पवनके पुत्र हो इस वास्ते तुम जरूर कूद सकते हो तब हनुमान कूदकर लङ्कामें गया।

पद्मपुराण का कथन है कि सुग्रीव की १३ कन्या राम के गुण सुनकर उसको बरने की इच्छा करने लगी तब सुग्रीव ने उनको राम से व्याह दी, उनकी सुन्दरता से आकाश में उद्योत होगया, रामको फिर भी सीताकी ही तड़प रही, सुग्रीव भोगों में मग्न होगया और अपनी प्रतिज्ञा भूल गया, राम को चिन्ता हुई, लक्ष्मण नङ्गी तलवार लेकर सुग्रीव के महल में घुस गया और उसके मारने को चढ़ा, सुग्रीव की स्त्रियों ने लक्ष्मण का क्रोध ठण्डा किया, लक्ष्मण ने सुग्रीव को उसकी प्रतिज्ञा याद दिलाई जिस तरह पर कि एक मुनिने यज्ञदत्त को उसकी माता बताई थी, वह कथा इस तरह पर है कि बन्धुदत्त एक बनियां अपनी स्त्री को गुप्त रीति से गर्भ रख कर परदेश चला गया, पीछे सासू ने उसको दुराचारिणी जानकर घर से निकाल दी,

वह एक वन में रहने लगी, वहीं उसके पुत्रका जन्म हुआ, पुत्रको कुत्ता उठा लेगया, किसी ने इस बालक को छुड़ाकर राजा को दिया, राजाने पाला यक्षदत्त नाम रखा, जवान होने पर वह वन में अपनी माता को देखकर उस पर आशक्त होगया और रातको उसके पास चला; मुनिने मना किया और समझाया कि यह तो तेरी माता है।

सुग्रीव ने जल थल सारी पृथिवी पर सीता को ढूंढने के लिये विद्याधर भेजे और सीता के भाई भामण्डल को भी खबर करी, सुग्रीव स्वयम् भी तलाश को निकला और विमान में बैठकर ज्योतिष चक्रके भी ऊपर गया और वहा से सब पृथिवी देखी, फिर वहां से महेन्द्र पर्वत पर उतरा वहा रत्नजटी नाम का एक विद्याधर पड़ा हुआ था वह भामण्डल का नौकर था उसने कहा कि रावण सीता को हरकर लङ्का लिये जारहा था मैं उससे लडा उसने मेरी विद्या हरली, तब से यहा पडा हूं, सुग्रीव उसको लेकर राम के पास आया, रामने चढ़ाई करने का इरादा किया, यह सुनकर सब घबराये क्योंकि रावण बहुत बलवान था उससे सब डरते थे, राम को समझाया कि सीता की हठ छोड दो, एक कथा सुनाई जो इस तरह पर है कि एक विनयदत्त था जिसका मित्र विशालभूत उसकी स्त्री पर आशक्त था, स्त्री के कहने से वह विनयदत्त को वन में एक वृक्ष से बाध आया, परन्तु किसी परदेशी मनुष्य ने विनयदत्त को खोल दिया, विनयदत्त उस मनुष्य के साथ घर आया, विशालभूत भाग गया, वह मनुष्य जिसने विनयदत्त को वृक्ष से छुड़ाया था विनयदत्त के यहां रहने लगा, एक दिन उस मनुष्य का एक कागज का मोर उडकर राजा के घर जापड़ा, वह मनुष्य ज़िद करने लगा कि मेरा मोर लादो, विनयदत्त ने कहा कि वह कागज का मोर तो नहीं आ सकता है किन्तु उससे भी अच्छा मोर लो चाहे सोने का बनवा लो परन्तु उसने कहा मैं तो वह ही लूंगा, यह कथा कहकर वह राम से कहने लगे कि सीता से भी सुन्दर स्त्री लो और सीता का ख़याल छोड़ दो और ज़िद मत करो।

इसके उत्तर में लक्ष्मण ने कहा कि यह कथा ठीक नही है बल्कि एक और कथा सुनो कि एक पुरुष के पास महामन्त्र संयुक्त बडा शक्तिशाली कडा था, उस कड़े को गोह उठा लेगई और एक बिल में जापडी, उस पुरुष ने उस बिल को उखाड़ा, वहा से वह कडा भी मिला और अन्य भी बहुत धन मिला, इस ही प्रकार लङ्का में जाने से हमको सीता भी मिलेगी और लाभ भी होगा, इस पर इन लोगों ने कहा कि हमने मुनि से ऐसा सुना है कि जो कोई कोटशिला को उठावेगा वह ही रावण को मारेगा, तब लक्ष्मण ने उनके साथ जाकर उनको कोटशिला उठाकर दिखाई (महापुराण के अनुसार रावण को मारने और लङ्का को जीतने के बाद ही ल-

लक्ष्मण ने कोटशिला उठाई थी) तब यह सलाह ठहरी कि रावण के पास दूत भेजो, विभीषण धर्मात्मा है वह रावण को समझा कर सीता को वापिस दिला देगा, तब इस कार्य्य के वास्ते हनुमान पसन्द किया गया, वह अपनी राजधानी से बुलाया गया, हनुमान बहुत बड़ी सेना सहित आया, हनुमान के विमान के प्रकाश से सूर्य्य की प्रभा भी मन्द होगई, राम ने उसको अपनी अँगूठी दी।

हनुमान बड़ी सेना सहित आकाश मार्ग से लङ्का की तरफ चला, रास्ते में राजा महेन्द्र से लड़ाई हुई, हनुमान जीता, फिर चलते २ उसने एक वन में दो मुनियों को ध्यान लगाये और तीन कन्याओं को विद्या सिद्ध करते देखा, वन में अग्नि लग रही थी, हनुमान ने समुद्र के जल से वह अग्नि बुझाई, कन्याओं से पता पूछा उन्होंने कहा कि हम यहां के राजा की कन्या हैं, अनेक विद्याधर हमारी चाहना करते हैं, अङ्गारक ने हमारे लेने के वास्ते बहुत ही ज्यादा कोशिश करी परन्तु हमारे पिता को मुनि से यह मालूम होगया कि इन कन्याओं का पति वह होगा जो साहसगति को मारेगा, इस वास्ते उसने अङ्गारक को इनकार कर दिया तब से वह अङ्गारक हमारा बैरी होगया है, हम विद्या साधने को इस वन में आई थीं, उसने बैर से आग लगादी, इस पर हनुमान ने राम के द्वारा साहसगति के मारे जाने का हाल सुनाया, राजा यह खबर पाकर उन कन्याओं को राम को दे आया हनुमान लङ्का पहुंच गया।

नोट।

मालूम नहीं जैन कथा ग्रन्थों में ही यह इतनी काम कथा क्यों इकट्ठी होगई है और वह भी बिलकुल बेजोड़, जब सीता के वास्ते राम इतना विह्वल होरहा था कि वृक्षों तक से पूछता फिरता था तो उसका सुग्रीव की १३ पुत्रियों का और विद्या सिद्ध करती हुई इन तीन कन्याओं को व्याहना बिलकुल ही बेजोड़ और अनुचित है, सुग्रीव की कन्याओं की सुन्दरता से आकाश में उद्योत होगया इस कथन से साफ मालूम होता है कि कन्याओं के व्याहने की यह बात कामरस का कामरस के वास्ते ही लिखी गई है, यक्षदत्त की कथा बिलकुल बेजोड़ है और उसमें कामरस के सिवाय और कुछ भी नहीं है, जिस प्रकार रामायण के गृद्ध का उड़कर सूर्य्य तक पहुंच जाना और १०० योजन से भी ज्यादा दूर की चीज़ को देख लेना गप्प है इस ही प्रकार सुग्रीव का ज्योतिषचक्र अर्थात् सूर्य्य आदि के भी ऊपर पहुंच जाना और वहां से पृथिवी पर सीता को देखना केवल गप्प ही नहीं है बल्कि महागप्प है, मालूम होता है कि रामायण के गृद्ध पक्षी के स्थान में ही पद्मपुराण में रत्नजटी का कथन किया

गया है, हनुमान के विमान के प्रकाश से सूर्य्य की प्रभा भी मन्द होगई थी यह बात भी मानने योग्य नहीं है, इसके अलावा महापुराण के कथन से तो यह सारा ही कथन असत्य सिद्ध होता है क्योंकि उसके अनुसार तो सीता के हरे जाने पर ही दशरथ को सुपना आया और उसका फल पूछने से मालूम होगया कि सीता को रावण हर लेगया है और तुरन्त ही दशरथ ने यह खबर राम को करदी।

हनुमान पर लङ्कासुन्दरी की आशक्ति।

रामायण का कथन है कि जब हनुमान समुद्र के ऊपर को जारहा था तो समुद्र के सर्प और मगर मच्छ आदि सब जन्तु खलबला रहे थे और आकाश में लाल और काले बादल चमक रहे थे, नागों की माता सुरसा ने महाराक्षसी का रूप बनाकर हनुमान को डराना चाहा, हनुमान उसके मुख में प्रवेश करके और फिर छोटा शरीर बनाकर निकल आया, फिर सिंहिका राक्षसी ने उसको भक्षण करना चाहा, हनुमान उसके भी मुख में घुस गया और उसके अङ्ग को फाड़कर निकल आया, और उसको मार डाला, रावण ने लङ्का को अनेक यन्त्रों के द्वारा रक्षित कर रखा था और करोड़ों राक्षस रक्षाके वास्ते नगर के द्वार पर बिठा रखे थे, जब हनुमान लङ्का के द्वार पर पहुंचा तो लङ्का राक्षसी ने हनुमान को रोका और एक लात मारी, हनुमान ने घूंसा मारा जिससे वह बेहोश होकर गिर पड़ी और हनुमान की खुशामद करके कहने लगी कि मैं स्वयम् लङ्का हूं, ब्रह्माजी ने मुझ से पहिले ही कह रखा है कि जब कोई बन्दर आकर तुमको बस करले तो तुम समझ लेना कि राक्षसों पर भारी विपत्ति आने वाली है।

पद्मपुराण का कथन है कि सीता को हर लेजाने के बाद रावण ने लङ्का के चारों तरफ एक मायामय यन्त्र बना दिया था जिसके कारण देव भी लङ्का के अन्दर न आसकें, यह यन्त्र महाभयानक था जिसमें सर्वभक्षी पुतलियां लगी हुई थीं, भयानक सर्प फुंकार मारते थे और विषरूप अग्नि बरसाते थे, हनुमान ने अपनी सेना तो आकाश में रखी और आप मायामय पुतली के अन्दर घुस गया, पुतली को बिदारी, मायामय कोट तोडा, तब मायामय विद्या भाग गई, कोट के अधिकारी वज्रमुख ने हनुमान से युद्ध किया, दोनों तरफ की सेना खूब लड़ी, वज्रमुख मारा गया, तब उस की पुत्री लङ्कासुन्दरी लडनेको आई, हनुमानका और उसका खूब युद्ध हुआ, लडते २ वह कन्या हनुमान पर आशक्त होगई और हनुमान भी उसके रूपपर मोहित होगया, युद्ध बन्द होगया और आकाश में नगर बसा कर हनुमान उस लङ्कासुन्दरी से रमा।

नोट।

रामायण का यह सारा कथन साफ़ तौर पर अलङ्कार है परन्तु पद्मपुराण में यह सब अलङ्कार इकट्ठे होकर कामरस की एक अद्भुत कथा बन गये हैं, पुत्र के मरने के महाशोक में व्याकुल चन्द्रनखा का राम लक्ष्मण पर आशक्त होजाना और भानजे के मारनेवालों से युद्ध करने के लिये रावण का आना और युद्धस्थल में पहुंच कर सीता पर आशक्त होजाना और यहां लङ्कासुन्दरी और हनुमान का युद्ध करते करते ही आपस में आशक्त होजाना, यह सब कामरस के अति उत्कृष्ट दृष्टान्त हैं जो एक सीताहरण के कथन में इकट्ठे होगये हैं और जिनको वर्णन करने का सौभाग्य पद्मपुराण को ही प्राप्त हुआ है जिसके द्वारा सतयुग की यह बढ़िया बातें सुनने में आई हैं, परन्तु पद्मपुराण के इस कथन में हम जैसे कलिकाल के लोगों को लङ्का का ऐसा कोट बनाया जाना जिसमें भयानक सर्प फुकार मारते हों और अग्नि उगलते हों और हनुमान का उस यन्त्रकी सर्व भक्षी पूतलीके मुंहमें प्रवेश कर जाना और उस पूतली को विदारकर उस महायन्त्रको तोड डालना बिलकुल ही अप्राकृतिक मालूम होता है।

रामायण में हनुमान आदि बन्दरों को देवताओं की सन्तान और देवता ही वर्णन किया है, परन्तु पद्मपुराण में उनको मनुष्य सिद्ध करते हुए भी उनसे ऐसे अद्भुत कृत्य कराये हैं जो शायद देवताओं से भी न हो सकते हों।

मन्दोदरी का सीता को समझाना।

रामायण का कथन है कि रावण सीता को अव्वल तो अपने महल में लेगया और उसको हर तरह से फुसलाया और डराया परन्तु वह किसी तरह भी राज़ी न हुई, तब लाचार होकर रावण ने उसको बाग़ में रख दिया और कुछ बांदियां उसके पास छोड़ दीं जो समझा बुझाकर या डरा धमका कर उसको ढब पर ले आवें, एकबार रावण ने रम्भा अप्सरा से ज़बरदस्ती भोग किया था जिस पर नलकूबर ने रावण को श्राप दिया था कि वह किसी स्त्री से ज़बरदस्ती भोग न कर सके यदि करे तो उसके सिर के टुकड़े २ होजावें, इस ही श्राप के कारण रावण सीतासे ज़बरदस्ती भोग न कर सका।

पद्मपुराण का कथन है कि रावण के सीता को बाग़ में टिका कर अपनी पटरानी मन्दोदरी से कहा कि मैं सीता को हरकर लाया हूं परन्तु वह मुझसे राज़ी ही नहीं होती है, यदि वह मुझ से राज़ी न होगी तो मैं जीता न रहूंगा, मन्दोदरी ने कहा कि तुम क्यों उससे ज़बरदस्ती भोग नहीं कर लेते हो, रावण ने कहा कि पर-

स्त्री से जबरदस्ती भोग करने की प्रतिज्ञा मैं केवली भगवान के सामने कर चुका हूँ, मैंने तो यह प्रतिज्ञा इस खयाल से की थी कि ऐसी कोई भी परस्त्री नहीं हो सकती है जो मुझ से राजी न होजावे इस वास्ते मुझे तो कभी किसी भी स्त्री से जबरदस्ती भोग करने की जरूरत न पड़ेगी, परन्तु यह सीता तो किसी तरह भी राजी नहीं होती है, तब मन्दोदरी रावण की आज्ञानुसार रावण की १८ हजार रानियों को साथ लेकर सीता के पास गई और उसको रावण से राजी होजाने के वास्ते बहुत कुछ कोशिश की परन्तु सीता ने एक न मानी, रावणने भी सीता की बहुत खुशामद करी और बहुत कुछ डरावा भी दिखाया, आग के अंगारे बरसाये, जीभ निकालते हुए भी सांप और अजगर आये अनेक प्रकार के भय दिखाये परन्तु सीता किसी तरह भी राजी न हुई।

इसके विरुद्ध महापुराण का कथन है कि रावण ने सीताको बाग में ठहराकर और अपना असली रूप दिखाकर बहुत समझाया, चतुर बांदिया उसके पास छोड़ीं जो समझा बुझाकर उसे राजी कर देवें परन्तु सीताने एक न मानी, रावण ने सीता से ज़बरदस्ती भोग नहीं किया क्योंकि उसको श्रद्धा थी कि शीलवती स्त्रियों के साथ जबरदस्ती करने से विद्याधरों की सब विद्या भाग जाती हैं, उस ही दिन रावण की आयुधशाला में सुदर्शनचक्र पैदा हुआ और बहुतसे उत्पात भी हुये, मन्त्रियों ने रावण को समझाया कि सीताके ही कारण यह सब उत्पात होते हैं इस वास्ते इसको वापस करदो परन्तु रावण ने कहा कि इसके आने ही पर तो मेरे यहां चक्र उत्पन्न हुआ है इस वास्ते इसका आना तो मेरे वास्ते बहुत ही शुभ है, रातको रावण अपनी रानियों के साथ सीताके पास गया और बहुत कुछ समझाया परन्तु वह न मानी तब रावण को क्रोध आया, इसपर मन्दोदरी ने रावण को समझाया कि जो कोई शीलवती स्त्री को सतावेगा उसकी विद्या नाश होजावेगी, रावण चला गया, मन्दोदरी सीताको देख-कर मनमें कहने लगी कि यह तो मेरी बेटी मालूम होती है जिसको सन्दूक में रखकर धरती में गढ़वाई थी, फिर उसने सीताको भी यह सारी बात कह सुनाई और कहा कि तू तो मेरी बेटी है, उस ही वक्त मन्दोदरी की छातियों में दूध भी पैदा होगया, सीताने भी उसको अपनी माता जाना, फिर मन्दोदरी सीताको समझा बुझाकर और भोजन कराकर चली गई।

नोट ।

दोनों जैनग्रन्थों के कथन में ऐसा भारी अन्तर होने के अलावा पद्मपुराण का यह कथन बड़ा ही भयानक है कि रावण जैसे धर्मात्मा की धर्मात्मा स्त्री स्वयम् अपने

पति से यह कहे कि तुम सीता से क्यों जबरदस्ती भोग नहीं कर लेते हो और फिर रावण का अपनी पटरानी और अन्य १८ हज़ार रानियों को सीता के पास इस गरज़ से भेजना कि वह एक शीलवान स्त्रीको समझा बुझाकर पर पुरुष से भोग करने पर राज़ी करें और उन सब रानियों का सीताके पास जाना और इस महापाप के वास्ते सीता को हर तरह से समझाना, पद्मपुराण का महाधर्मात्मा रावण तो यहां तक पर-स्त्री लम्पट था ही कि केवली भगवान के सामने भी उसने यह प्रतिज्ञा करी कि जो परस्त्री मुझसे राज़ी न होगी उससे जबरदस्ती भोग न करूंगा अर्थात् परस्त्री सेवन तो करूंगा परन्तु उसे फुसलाने या डराने के द्वारा राज़ी करके करूंगा और यह प्रतिज्ञा भी उसने इस आशा पर की थी कि ऐसी कोई स्त्री ही नहीं हो सकती है जो मुझसे राजी न हो अर्थात् मुझको तो किसीसे जबरदस्ती करनेकी जरूरत ही नही पड़ेगी अर्थात् इस प्रतिज्ञा से तो मेरे परस्त्री भोगमें कुछ भी बाधा न आवेगी, परन्तु शोक तो यह है कि रावण की स्त्रियां भी महापापिनी होगई; क्योंकि यदि जैन सिद्धान्त के अनुसार कृतकारित और अनुमोदना इन तीनों ही प्रकार से पाप होता है तो रावण की १८ हजार स्त्रियां सीताको परपुरुष के साथ राज़ी होजाने की कोशिश करने से कुशील की दोषी होगई।

परन्तु महापुराण के कथन से पद्मपुराण का यह सारा कथन बिल्कुल ही झूठ और बनावटी सिद्ध होता है, कैसे तमाशे की बात है कि एक जैनग्रन्थ में तो मन्दोदरी सीता को समझा रही है कि तू मेरे पति से भोग कर इसमें कोई बुराई नहीं है और दूसरे जैनग्रन्थ में वह ही मन्दोदरी सीता से कह रही है कि तू तो मेरे पेट से पैदा हुई रावण की बेटी है और मन्दोदरी यह बात केवल ज़बान से ही नही कर रही है बल्कि सीताको देखकर उसकी छातियों में दूध भी पैदा होगया है और इस प्रकार के अत्यन्त विरोधी कथन होने पर भी यह दोनों ग्रन्थ श्रीसर्वज्ञ भाषित और जिनवाणी माने जारहे हैं।

इसके अलावा सीताको डराने के वास्ते अङ्गारे बरसना, सांपों और अजगरों का सीताको डराना बिल्कुल ही अप्राकृतिक है, आश्चर्य है कि सीता को जबरदस्ती डराने और अपने से राज़ी करने के लिये ऐसे २ भारी डरावे दिखाने पर भी रावण की वह प्रतिज्ञा जो उसने केवली भगवान के सामने ली थी नहीं टूटी अर्थात् इतनी जबरदस्ती करना भी जबरदस्ती नहीं है, आयुधशाला में आप से आप सुदर्शनचक्र पैदा होजाना भी असम्भव है, यदि हथियार भी आप से आप बिना बनाये पैदा हो सकते हैं तो फिर दुनियां में कोई भी कथन असम्भव नहीं हो सकता है और दुनियां से सच झूठ की परीक्षा भी उठ जाती है।

हनुमान का सीता से मिलना।

रामायण का कथन है कि हनुमानने अपना सूक्ष्म शरीर बनाकर रातभर सारी लङ्का की सैरकी, फिर सीता वाले बाग़ में जाकर एक वृक्षके पत्तोंमें छिप रहा, तबके ही रावण अपनी रानियों को लेकर वहां आया और सीता को अपने से राजी करने की कोशिश की परन्तु वह न मानी तब वह राक्षसों को यह आज्ञा देकर चला गया कि खूब भय दिखाओ और त्रास दो, उन्होंने ऐसा ही किया, फिर हनुमान अपना रूप बदलकर आहिस्ता २ सीताके सामने गया, राम की दी हुई अँगूठी दी सब हाल सुनाया और कहा कि हमारी पीठ पर चढ़ चलो, सीता ने कहा कि जब तुम समुद्र के ऊपर को दौड़ोगे तो मैं गिर जाऊंगी इसके सिवाय मैं अपने पतिके सिवाय किसी पुरुष के शरीर को छूना भी नहीं चाहती हूं. इस वास्ते राम ही यहां आकर और रावण को जीतकर मुझे लेजावें, हनुमान ने उससे निशानी मांगी, सीता ने अपनी और राम की अनेक गुप्त बातें बताईं और अपने सिर का चूडामणि दिया।

पद्मपुराण का कथन है कि रातभर लङ्कासुन्दरी से रमणके बाद हनुमान सुबह ही विभीषण के पास गया, विभीषणने कहा कि मैंने तो रावणको बहुतेरा समझाया है परन्तु वह एक नहीं मानता है, फिर हनुमान अपना रूप बदलकर आहिस्ता २ सीता के आगे गया और राम की अँगूठी सीता के आगे डाली, वह देखकर बहुत खुश हुई, रावण की बांदियां उसको हर्षित देखकर तुरन्त रावण के पास गईं, रावण को आशा बँधी, उसने मन्दोदरी को सब रानियों सहित सीता के पास भेजी उन्होंने जाकर सीता को राजी करने की बहुत कोशिश की, परन्तु सीता ने कहा कि आज मुझको मेरे पति की खबर मिली है मैं तो इस वास्ते हर्षित हुई हूं।

सीता ने कहा कि अँगूठी लाने वाला प्रत्यक्ष दर्शन देवे, तब हनुमान अपने असली रूपमें सीता के सामने आया सब हाल सुनाया, सीता ने हनुमान से पूछा कि रामके साथ तुम्हारे जैसे कितने आदमी हैं, मन्दोदरी ने कहा कि इसके बराबर तो भरतक्षेत्र में भी कोई नहीं है, यह तो रावण का भनज जमाई है; इसने तो रावण को युद्धमें कई बार सहायता दी है, यह तो सारी पृथिवी में प्रसिद्ध है; परन्तु यह शोक है कि अब यह भूमगोचरियों का दूत बनकर आया है, इसपर हनुमान ने मन्दोदरी से कहा कि तू ऐसे बड़े महाराजा की पटरानी होकर सीताको परपुरुष के साथ राजी करने के वास्ते यहां आई है क्या तुझे लज्जा नहीं आती है, इसपर मन्दोदरी को क्रोध आया, रावण की तरफ से हनुमान को डरावा दिखाया, सीता ने अपने पति के

बल की तारीफ़ करी और कहा कि मेरा पति शीघ्र ही यहां आकर रावण को मार डालेगा, यह सुनकर रावण की १८ हजार रानियां सीता के मारने को उठीं, हनुमान ने उनको रोका, वह सब रानियां रावण के पास गईं, हनुमान ने अपने लश्कर से भोजन मँगाकर सीता को भोजन कराया और कहा कि मेरे कन्धे पर चढ चलो मैं शीघ्र ही तुमको राम के पास ले जाऊंगा, सीता ने कहा कि पति की आज्ञा के बिना मेरा जाना ठीक नहीं है, फिर सीता नें अपनी पहिचान के वास्ते हनुमान को अपनी और राम की बहुत सी पिछली बातें बताईं और अपने सिर का चूड़ामणि दिया।

महापुराण में लिखा है कि हनुमान बन्दर का रूप बनाकर और रक्षकों को नींद दिलाकर सीता के पास गया और डिबिया उसके आगे डाली, सीता ने वह डिबिया उठाई उसमें से अँगूठी निकालकर उसके अक्षर पहिचाने, राम की दी हुई चिट्ठी पढ़ी, हनुमान ने कहा कि मैं तुझे अभी ले चलने की शक्ति रखता हूं परन्तु राम की आज्ञा नहीं है, रावणको जीतकर वह अवश्य तुमको ले जावेंगे, सीताको सन्तोष हुआ, बाग़ की नागरियां हनुमान को देखकर कहने लगीं कि यह तो साक्षात् कामदेव ही है, उनमें से कोई तो कामसे व्याकुल होकर बीन बजाने लगीं और कोई दर्पण में हनुमान का प्रतिबिम्ब देखने लगीं और देख २ कर आशक्त होने लगीं।

नोट।

हनुमान का कभी बन्दर बनजाना और कभी मनुष्य बिलकुल अप्राकृतिक है, यह तो रामायण में भी लिखा है कि यह वानर कभी २ मनुष्य का रूप भी धारण कर कर लेते थे, फिर रामायण और जैनग्रन्थ के कथन में क्या भेद रहा और जैनग्रन्थों ने रामायण की गप्प को कहां दूर किया, बल्कि रामायण में तो इन वानरों को देवता बताकर कुछ बात बना भी दी है परन्तु जैनग्रन्थों में इनको मनुष्य सिद्ध करके ही इनके अप्राकृतिक कार्य्य दिखाये हैं इस वास्ते जैनग्रन्थों ने तो गप्प को महागप्प बना दिया है।

रामायण के अनुसार हनुमान अकेला ही कूदकर लङ्का में गया था इस वास्ते उसका सीताको यह कहना ठीक भी हो सकता है कि मेरी पीठपर चढ़ चलो, परन्तु पद्मपुराण में तो हनुमान का यह कहना कि मेरे कन्धे पर चढ़ चलो किसी तरह भी ठीक नहीं बैठता है क्योंकि पद्मपुराण के अनुसार तो वह लङ्कामें अकेला नहीं आया था बल्कि बडा भारी लावलश्कर और दैदीप्यमान विमान आदि लेकर आया था, इससे साफ़ सिद्ध है कि यह पद्मपुराण रामायण से ही बनाया गया है; और जो कुछ

कथन बदला है वह साफ बेजोड नजर आरहा है, इस कथन में कामरस न रह जाय इस वास्ते पद्मपुराण में वन की स्त्रियों का ही हनुमान के रूप पर आशक्त होना दिखा दिया है।

हनुमान का लङ्का को विध्वंस करना।

पद्मपुराण के कथनानुसार रावण ने हनुमान को मारने के वास्ते बाग़ में अपने योद्धा भेजे, हनुमान उनके सामने आया तब वह डरकर भाग गये, तब और योद्धा आये, हनुमान ने बड़े २ वृक्ष उपाड़े, पर्वत की वडी २ शिला उखाडी और उनसे इन योद्धाओं को मारा, बहुत योद्धा मरे, हनुमान ने वन के सब ही भवन और वापिका तोड दीं, सब वृक्ष उपाडकर मैदान कर दिया, फिर बाजार की सब दूकानें तोडी, लात मारकर शहर के महल-मकान ढादिये, हजारों योद्धा मारे, रत्नों के महल गिराये, तब मेघवाहन और इन्द्रजीत वडी भारी सेना लेकर आये, बडा युद्ध हुआ, आख़िर इन्द्रजीत ने हनुमान को नागफास से बांध लिया, रावण ने हनुमान को लोहे की साकलों से बंधवाकर नगरमें फिरवाया, कुत्ते और बालक पीछे लगाये, जब लोग हनुमान को ले चले तो वह बन्धन तुडाकर आकाशमें उड गया और फिर नीचे उतर-कर लङ्काके द्वार लातोंसे ढाये, रावणके महल ढाये और रत्नके कोट ढाये, फिर लङ्का से चला आया।

रामायण मे भी यह सब कथन प्राय इस ही तरह लिखा है और मिलान करने से साफ़ मालूम होता है कि यह सारा कथन रामायण से ही लिया गया है, परन्तु रामायण में इतना विशेष है कि लङ्का में फिराते समय हनुमान की पूछमें आग लगाई गई और उसने अपनी पूंछसे लङ्का को फूंक दिया, महापुराण में भी लङ्काके विध्वस करने का कथन है परन्तु उसके अनुसार जब सीता से मिलकर हनुमान वापिस राम के पास आ लिया और रामने लङ्का पर चढ़ाई करदी तब हनुमान ने राम से लङ्का में जाने की आज्ञा लेकर अपनी विद्याके बलसे वानरों की सेना बनाई, रावण के बाग़ के रक्षक मारे, बाग़ को उजाडा, शहरमें उपद्रव किया, वनके वृक्ष उपाड २ उनसे लोगों को मारा, फिर लङ्कामें आग लगाई और रामके पास वापिस आगया।

नोट।

शोक है कि रामायणकी इस गप्पको भी जैनग्रन्थोंने वास्तविक बना दिया है कि हनुमानने वृक्षों और पर्वतोंको उखाड़ २ कर रावण के योद्धाओंको मारा और लात और मुक्कों से सारा शहर और रत्न के महल ढा दिये, परन्तु रामायण ने तो अपनी

गप्पको सही बनानेके वास्ते हनुमानको पवनदेवता का पुत्र बताया है और जैनग्रन्थों ने हनुमानको मनुष्य सिद्ध करके भी रामायण की इस गप्पको ज्यों का त्यों नक़लकर दिया है और महापुराण में तो रामायण की बातको सिद्ध करनेके लिये यहां तक कह दिया है कि हनुमान ने अपनी सेनाके मनुष्यों को भी बन्दर ही बना दिया और लङ्का को फूंका, इन तमाम बातों से साफ़ सिद्ध है कि यह सब कहानी रामायण से ही ली गई है।

---

* छटवां अध्याय *

राम की सेना का समुद्र पार करना।

रामायण के कथनानुसार हनुमान के रामके पास पहुंचने पर लङ्का पर चढ़ाई करदी गई और समुद्र के किनारे आकर और समुद्र पार करने की सोच करने लगे, इधर विभीषण ने रावण को समझाया कि सीताको वापिस दे दो परन्तु इन्द्रजीत ने इस बात का विरोध किया, विभीषण ने उसको झिड़का रावण ने विभीषण से कहा कि तू मेरी बढ़ती नहीं देख सकता है-तब ही ऐसी बातें कहता है, इसपर विभीषण लङ्का को छोड़कर राम से आ मिला, राम ने विभीषण को लङ्का का राज्य देने का इक़रार किया, फिर विभीषण की सलाह से राम समुद्र के किनारे तीन दिनतक कुश बिछाकर बिना भोजन किये मौन धारण करके पड़े रहे, परन्तु इस प्रकार उपासना करने पर भी समुद्रने दर्शन नहीं दिये, तब रामने क्रोध करके कहा कि समुद्र घमण्ड करता है आज हम इसको अपने बान से मारेंगे और सारे समुद्र को सुखा देंगे, यह कहकर रामने धनुष उठाया और समुद्रमें बाण छोड़ने लगे, समुद्रमें क्षोभ होगया और समुद्र किनारे से भी एक योजन परे आगया, फिर समुद्र में से सोने के दिव्य आभूषण पहिने हुए सागर निकला, पुष्पोंकी माला उसके सिरमें थी, गङ्गा, सिन्ध आदि नदियोंसे वह घिरा हुआ था, वह सागर रामके पास आया और हाथ जोड़कर बोला कि अथाह रहना तो हमारा स्वभाव ही है इस वास्ते हम अपनी थाह कैसे देदें, तुम नल के द्वारा हमारे ऊपर पुल बनालो क्योंकि नल को विश्वकर्मा का वर है, तब राम नलके द्वारा पुल बनवाकर अपनी सेना को समुद्र पार कराकर लङ्का लेगया, रामकी सेना सुवेल पर्वत पर ठहरी, रात को सुग्रीव रावण के पास पहुंचा और उससे युद्ध करके और उसका मुकुट धरती पर गिराकर चला आया।

पद्मपुराण में यह कथन इस प्रकार लिखा है कि हनुमान के लंका से वापिस आनेपर राम महासेना लेकर वेलन्धरपुर पहुंचे, वहाके राजाका नाम समुद्र था, समुद्र और नल में वडा भारी युद्ध हुआ, नल ने समुद्र को बांधा और राम से मिलाया, राम ने समुद्र को मुआफ करके छोड दिया, समुद्र ने अपनी कई कन्या लक्ष्मण से ब्याहीं, फिर वहां से सुवेल पर्वत पर गये, वहा राजा सुवेल को संग्राम में जीता, रात को वही रहे, वहां से चले लङ्का नजर आई, हंसद्वीप में डेरे किये वहां के राजा को युद्ध में जीता, इधर रावण ने भी युद्ध की तय्यारी की, विभीषण ने रावण को समझाया कि सीताको वापिस देदो, इन्द्रजीत ने कहा तुमसे कौन सलाह लेता है, विभीषण ने उसको झिड़का, रावण विभीषणके मारनेको उठा और उसको नगरसे निकाल दिया, वह रामसे आमिला, रामने इकरार किया कि मैं तुमको लंकाका राजा बनाऊंगा।

महापुराण में भी विभीषण का रावण को सीता वापिस कर देनेके लिये समझाना और फिर रावण से नाराज होकर राम से आ मिलने और रामका सेना सहित लंका में पहुंच जाने का तो कथन किया है परन्तु यह नही लिखा है कि समुद्र को किस तरह पार किया।

नोट।

शोक है कि समुद्र पार करने के लिये रामायण के अलंकृत कथन को पद्मपुराण में वास्तविकता रूप दे दिया गया है और समुद्रको मनुष्य बनाकर उससे नल का युद्ध करा दिया है, वेशक पाठकों को राम का समुद्र की उपासना करना, फिर समुद्रमें तीर मारना और समुद्रके देवताका भय खाकर सन्मुख आना आदि रामायण का कथन असम्भव ही मालूम होता होगा और शायद इस ही ख़याल से पद्मपुराण में यह कथन बदला गया होगा, परन्तु जब हमारे भाई महापुराण को देखेंगे तो फिर उनको यह कथन असम्भव मालूम न होगा, क्योंकि महापुराणमें राम लक्ष्मणकी इस कथामें ही आगे चलकर लिखा है कि लङ्काको जीतनेके बाद वह दिग्विजय करने को निकले और जहा पर गङ्गा समुद्र में मिलती है वहा पहुंचकर और रथ में बैठकर समुद्र में प्रवेश किया और अपने नाम का बाण समुद्र में मारा जिसपर समुद्र के देव ने आकर इनको आभूषण भेंट दिये, इस ही प्रकार दक्षिण समुद्रपर जाकर और फिर वहा पहुंचकर जहा सिन्ध नदी समुद्र में मिली है समुद्र देवता को वस किया और उनसे भेंट ली।

इस ही महापुराण में राम लक्ष्मण के इस कथन से पहिले भरत महाराज की दिग्विजय के विषयमें साफ लिखा है कि जब भरत समुद्र किनारे पहुंचा है तो उसने

अव्वल तीन दिन तक कुशासन पर बैठकर उपवास किया फिर समुद्र में तीर मारा जिससे समुद्रका देवता भय खाकर सन्मुख आया और कई दिव्य आभूषण भेंट देगया।

हमको तो पद्मपुराण के इस कथन पर बड़ा अफसोस होता है जिसमें सीता के हरे जाने पर एक बड़े भारी युद्ध पर जाते हुए भी लक्ष्मण का विवाह कर दिया गया है, इस ही प्रकार इस ग्रन्थ में कदम कदम पर मौके बेमौके विवाहों और काम-कथाओं की इतनी भरमार कीगई है कि यह ही इस ग्रन्थ की विलक्षणता होगई है।

राम रावण का युद्ध।

पद्मपुराण के अनुसार जब दोनों तरफ की सेना युद्ध के वास्ते आई तो उन दोनों सेनाओं में अनेक रथ सिंहोंके अनेक व्याघ्रों के और अनेक घोड़े हाथियों के थे, और योद्धाओं के वाहन भी सिंह, सूअर, भैंसा, मृग, अष्टापद, मगर, मच्छ और नाना प्रकार के पक्षियों के रूप के थे, हनुमान के वान से जम्बूमाली के रथ के सिंह गिर पड़े जिनकी विकराल दाढ़ और विकराल वदन था, वह गिरकर अपनी सेना में लोटते फिरने लगे जिससे सेनाका बहुत नुक़सान हुआ, सेना चारों तरफ भागी, तब योद्धाओं ने वह सिंह वश किये, इन्द्रजीत ने मेघवाण चलाया, सब तरफ पानी ही पानी होगया, सुग्रीव ने पवनवाण चलाया सारे मेघ उड़ गये, मेघवाहन ने अग्निवाण चलाया, सारी सेनामें अग्नि ही अग्नि होगई, तब भामण्डलने मेघवाण चलाया जिससे अग्नि बुझ गई, इन्द्रजीत नें नागवाण चलाया जिससे लक्ष्मण के रथ को नाग लिपट गये, लक्ष्मण नें उनको गरुणवाण से हटाया।

नोट।

ऐसा ही अप्राकृतिक कथन रमायण में भी किया गया है जो कवि की काव्य-कला और कल्पनाशक्ति को दिखाने के सिवाय और कुछ भी नहीं है परन्तु शोक है कि पद्मपुराण में रामायण के ऐसे कथनों का अनुकरण करनेमें कुछ भी आगा पीछा नहीं विचारा गया है और सम्भव असम्भव का कुछ भी खयाल नहीं किया गया है।

रामके पास चमरेन्द्रका दिव्यशस्त्र भेजना।

रामायण में लिखा है कि स्वर्ग के इन्द्र ने राम को युद्ध में दबा हुआ देखकर अपने मातलि नामके सारथी के हाथ अपना दिव्यरथ और अनेक दिव्यअस्त्र राम के पास भेजे और राम ने उस रथमें बैठकर उन दिव्य अस्त्रों से युद्ध किया और मातलि सारथी ने उस रथ को चलाया।

पद्मपुराण में इसके स्थान में यह लिखा है कि जब युद्ध में रावण प्रबल होने लगा तो चमरेन्द्र का आसन कांपा जिसने देशभूषण और कुलभूषण मुनियोंके उपसर्ग दूर करने पर राम लक्ष्मण को वर दिया था कि जरूरत पड़ने पर सहायता दूंगा, उसने एक देव के साथ इनके पास अनेक दिव्य अस्त्र शस्त्र भेजे जिसमें जलबाण और अग्निबाण आदि भी थे।

नोट।

मालूम नहीं यह चमरेन्द्र महाहिंसा के अस्त्र शस्त्र भेजकर क्यों लाखों मनुष्यों की हत्या कराने का भागी हुआ, कहा जाता है कि राम लक्ष्मण ने जो देशभूषण और कुलभूषण मुनियोंका उपसर्ग दूर किया था उस ही से खुश होकर चमरेन्द्र ने उनको यह वर दिया था, परन्तु अव्वल तो यह ही समझ में नहीं आता कि चमरेन्द्र ने यह उपद्रव स्वयम् ही क्यों दूर नहीं कर दिया था, दूसरे परमवीतरागी मुनियों की रक्षा करने के कारण चमरेन्द्र के खुश होने का यह अर्थ नहीं हो सकता है कि वह मनुष्य हत्याके लिये उनका सहायक होजावे, बल्कि यदि यह कथा सत्य होती तो सीताहरण के बाद जब राम वृक्षों तकसे सीता का पता पूछता फिरता था उस वक्त चमरेन्द्र को याद करता और चमरेन्द्र उसको सीता का पता बताकर धैर्य बँधाता, वा जब खर-दूषण के युद्ध में लक्ष्मण का सिंहनाद सुनकर राम को उसकी सहायता के वास्ते जाना पड़ा था और सीता को फूलों में दबाकर एक गृद्ध पक्षी को उसका रक्षक बनाना पड़ा था उस वक्त चमरेन्द्र को याद करके सीता की रक्षा के वास्ते छोड़ जाता, इस ही प्रकार की और बहुत सी सहायता थी जो चमरेन्द्र से ली जा सकती थी, परन्तु ऐसी तो एक भी सहायता नहीं लीगई बल्कि जहां रामायण में इन्द्र का राम के पास दिव्य अस्त्र शस्त्र भेजना लिखा है वहीं पद्मपुराण में चमरेन्द्र का कथन कर दिया है जिससे साफ साबित है कि रामायण के इन्द्र के नाम की जगह यह चमरेन्द्र का कथन बनाया गया है।

परन्तु नहीं मालूम कि पद्मपुराण को रामायण के इस कथन को बदलने की क्या जरूरत हुई, क्योंकि जैन हरिवंशपुराण ने रामायण का यह कथन ज्यों का त्यों लेकर जरासन्ध और कृष्ण के युद्ध कथन में लिख दिया है कि श्रीनेमिनाथ तीर्थङ्कर भी उस युद्ध में गये और इन्द्र ने अपना मातलि नाम का सारथी अपना दिव्य रथ और अनेक अस्त्र शस्त्र श्रीनेमिनाथ के पास भेजे और तीर्थङ्कर भगवान ने उस रथपर चढ़कर उन अस्त्रों से हजारों मनुष्यों का वध किया, हरिवंशपुराण का यह कथन महापुराण और नेमिपुराण के कथन से बिलकुल असत्य सिद्ध होता है क्योंकि इन

ग्रन्थों के कथनानुसार तो श्रीनेमिनाथ भगवान युद्ध ही में नहीं गये बल्कि द्वारिका ही में रहे हैं, इससे साफ सिद्ध है कि जैन ग्रन्थकार हिन्दू ग्रन्थों का कथन लेते हुए जरा भी आगा पीछा नहीं देखते हैं, और ज्योंकात्यों वा कुछ बदलकर कथन ले लेते हैं।

लक्ष्मण के शक्ती का लगना।

रामायण का कथन है कि मेघनाद के बाण के लगने से लक्ष्मण मुर्दे के समान होगया, राम विलाप करने लगा, इतने में गरुड़ महाराज ने आकर लक्ष्मण के शरीर में से बाण निकाले, शरीर पर हाथ फेरा जिससे उसके सब घाव भर गये और शरीर पहिले की तरह सुन्दर होगया, फिर रावण ने लक्ष्मण को शक्ती मारी जिससे लक्ष्मण बेहोश होगया, थोड़ी देर बाद होश आया, फिर मेघनाद के बाणों से राम लक्ष्मण मृतक समान होगये, जाम्बवान के कहनेसे हनुमान ऋषभ और कैलाश पर्वत के बीच में जो औषधि पर्वत है उससे सञ्जीवनी और विशल्या आदि बूटी लेने गया परन्तु हनुमान के जाने पर वह औषधियां छिप गईं तब हनुमान उस पर्वत को ही उठा लाया, उन औषधियों की सुगन्धि से सब मरे हुए जिन्दा होगये, फिर हनुमान उस पर्वत को जहां का तहां रख आया, रावण की शक्ती के लगने से लक्ष्मण फिर गिरा और हनुमान दोबारा औषधी लेने गया, परन्तु औषधियों को न पहिचानने के के कारण पर्वत को ही उठा लाया, औषधी को सूंघते ही सब विशल्य होगये, अर्थात् भले चङ्गे होगये।

पद्मपुराण का कथन है कि रावण ने धरणेन्द्र की दी हुई शक्ती लक्ष्मण पर चलाई जिससे लक्ष्मण की छाती बिदारी गई और वह मुर्दे के समान भूमि पर गिर पड़ा, राम ने बहुत विलाप किया और कहा कि मैं भी भाईके साथ अग्नि में जलूंगा, जाम्बवान ने समझाया कि यह दिव्य अस्त्र से बेहोश होगया है मरा नहीं है, परन्तु रात रात में ही इसका कोई उपाय होना चाहिये, सुबह होने पर फिर कुछ न हो-सकेगा इतने में एक विद्याधर आया उसने कहा कि एक कन्या को मैंने व्याह लिया था जिसको सहस्रविजय भी मागता था, इस वास्ते वह मेरा बैरी होगया, आकाश में मेरा उसका बड़ा भारी युद्ध हुआ, उसने मुझे एक शक्ती मारी जिससे मैं अयोध्या में जापड़ा वहां राजा भरत ने मुझे जल के छींटे दिये जिससे वह शक्ती निकल गई, भरत ने इस जल की यह कथा सुनाई थी कि एक समय हमारा सारा देश रोग से पीडित होगया था और किसी भी इलाज से आराम नहीं होता था, तब राजा द्रोणमेघ ने आकर जल के छींटे से सबको अच्छा कर दिया था, राजा द्रोणमेघ की पुत्री

विशल्या जब गर्भ में आई थी तब ही उसके राज्य की अनेक बीमारियां जाती रही थीं, फिर उस कन्या के स्नान के जल से रोग दूर होने लगे, यह जल भी उस ही के स्नान का है।

मुनि महाराज के पूछने से मालूम हुआ था कि पहिले जन्म में यह कन्या एक चक्रवर्ती की बेटी थी और बहुत रूपवान थी, एक राजपुत्र उसको देखकर कामबाण से बींधा गया और उसको विमान में बिठाकर ले उड़ा, चक्रवर्ती ने उसके पकड़ने को योद्धा भेजे जिन्होंने उसका विमान काट डाला, जिससे यह कन्या एक भयानक बन में आपड़ी, कुछ दिन तो वह विलाप करती रही फिर वृक्षों के सूखे फल खाकर तप करने लगी, उसको एक अजगरने खाई और वह समाधिमरण करके तीसरे स्वर्ग गई, वहां से आकर द्रोणमेघ की बेटी विशल्या हुई और वह राजपुत्र जो इसको उड़ा लेगया था वह इसके न मिलने पर मुनि होगया था जो अब लक्ष्मण हुआ है, उसने इस कन्याकी प्राप्तिके वास्ते निदान किया था इस वास्ते अब वह ही इसको वरेगा।

यह बात सुनकर राम ने हनुमान और अङ्गद आदि को अयोध्या भेजा, उन्होंने रातों रात अयोध्या जाकर भरत को जगाया और सब हाल सुनाया, भरत ने युद्धकी तय्यारी की, अनेक राजा सेना लेकर भरत के द्वार पर आ पहुंचे, तब हनुमान आदि ने भरत को समझाया कि तुम्हारी सेना का वहां तक पहुंचना बहुत मुश्किल है, हम तो विशल्या का स्नानजल लेने आये हैं, तब भरत ने तुरन्त ही राजा द्रोणमुख को खबर करी वह भी युद्ध के वास्ते तय्यार हुआ तब भरत ने खुद जाकर उसको समझाया और उसकी कन्या विशिल्या को लङ्का भेजा, एक हजार से अधिक राजकन्या उसके साथ गईं, यह सब रातोंरात ही लङ्का पहुंचे, ज्यों ही विशिल्या रामके लश्कर में दाखिल हुई त्यों ही लक्ष्मण को आराम होना शुरू होगया, लक्ष्मण के शरीर से शक्ती निकली, वह अग्निके चमकते हुये फुलिङ्गों के समान थी, हनुमान ने उस शक्ती को पकड़ लिया, दिव्य स्त्री का उसका रूप था, वह हाथ जोड़कर हनुमान से कहने लगी कि हमारा इसमें कुछ क़सूर नहीं है क्योंकि हमको तो जो कोई सिद्ध कर लेता है हम उस ही के बशमें होजाती हैं, हमारा यह ही स्वभाव है कि जिसको लगू उसके प्राण हरलूं, परन्तु इस विशल्या के प्रभाव से मैं शक्तिहीन होगई हूं, तब हनुमान ने उसको छोड़ दिया, विशल्या लक्ष्मण के पास गई और उसके पांव पलोटने लगी, उसने लक्ष्मण के सारे अङ्ग में चन्दन लगाया और जो हजार राजकन्या उसके सङ्ग आईं थीं उन्होंने विशल्या के स्नानजल के छींटों से सेना के सब घायलों को अच्छा किया, लक्ष्मण जागा और विशल्या से उसका विवाह होगया, आगे चलकर पद्म-

पुराण में यह भी लिखा है कि विशल्या के विवाह होने पर उसकी यह अद्भुत् शक्ति जाती रही और फिर वह मामूली स्त्रियों जैसी होगई, क्योंकि यह शक्ति उसके पूर्व जन्म के ब्रह्मचर्य के ही प्रभाव से थी।

नोट।

कन्या की मांग पर पुरुषों में वैर होजाना और कन्या को जबरदस्ती ले उडना यह तो जैनकथा ग्रन्थों की टकसाली कथा हैं ही परन्तु हमको आश्चर्य इस बातका है कि सतयुग की कोई भी बात बिना कामकथा के नहीं कही जा सकती है, लक्ष्मण के शक्ति लगने की इस कथा का मिलान जब पद्मपुराण के पहिले कथनों से किया जाता है तो सबसे ही ज्यादा आश्चर्य होता है जहा राम लक्ष्मण के प्रभाव को इतना उत्कृष्ट दिखाया है कि यक्ष देवोंके राजा ने तो उनकी शक्ल देखते ही उनके वास्ते एक अति शोभायमान नगर बसाया और इतना द्रव्य उनके हाथ में दिया, जिसको दान करके उन्होंने महादरिद्रयों को भी राजाके समान धनवान बना दिया और पहाडपर जो असुर मुनियोंपर महा उपद्रव कर रहा था वह इनकी शकल देखते ही भाग गया और जितपद्मा के पिता से लक्ष्मण ने हँसते २ एक की जगह पाच शक्ती की चोट खाई तौ भी लक्ष्मण का कुछ न हो सका परन्तु यहां रामायण में रावण की शक्ती से लक्ष्मण का मृत प्रायः हो जाने का कथन आनेसे पद्मपुराण में भी लक्ष्मण का वह ही हाल होगया है, इससे साफ़ साबित है कि यह कथन रामायण से ही लिया गया है और यह विचार नही किया गया है कि यह कथन पद्मपुराणके पूर्व कथनोंके बिल्कुल विरुद्ध हो जायगा।

पद्मपुराण की इस कथा में अव्वल तो उस विद्याधर के लङ्कामें आने का कोई कारण मालूम नही होता है जिसको विशल्या के स्नानजल से आराम होगया था और शक्ती निकल गई थी, दूसरे दिन लक्ष्मणको शक्ती लगते ही उसका आना कथा के बनावटी होने को सिद्ध करना है, तीसरे विशल्या के स्नानजल में इतनी शक्तिका होना भी असम्भव है, कैसे आश्चर्य्य की बात है कि तप तो किया था विशल्या ने इस जन्म से भी दो जन्म पहिले और यह प्रभाव पैदा हुआ उसके इस जन्म के शरीर में कि उससे स्पर्शा हुआ पानी दुनियां भरके रोग दूर करदे और अब तो विवाह होते ही उसका यह प्रभाव जाता रहै परन्तु स्वर्ग में जहा लाखों, करोड़ों, अर्बों, खर्बों वर्ष तक अनेक प्रकार के भोग भोगने होते हैं और जहा एक देवके मरजाने पर दूसरे देव से नियोग कर लेना पडता है अर्थात् जहा एक ही जन्ममें अनेक देवोंकी पत्नी बनना

पड जाता है वहा उसका यह प्रभाव दूर न हुआ जो उसने स्वर्ग में जाने से पहिले अपने पहिले जन्म में तप करके प्राप्त किया था।

इसके सिवाय जैनकथा ग्रन्थों के अनुसार ही अनेक धर्मात्मा पुरुषों ने ऐसे २ दुद्धर तप किये हैं कि जिसके कारण वह सर्वार्थ सिद्धि तक पहुंचे हैं और वहा से आकर तीर्थंकर तक हुए हैं, जिनके गर्भ में आने से पहिले ही देवताओं ने उनको पूजना शुरू कर दिया है परन्तु उनके शरीरमें भी इतना प्रभाव नहीं हुआ है कि उनके स्नानजल से दुनियां भरके सर्व रोग दूर होजावें, फिर इस वेचारी ने तो इतना ही तप किया था कि तीसरे स्वर्ग के देव की देवागना हुई और वहां से आकर भी निकृष्ट स्त्री पर्याय ही पाई, अपने तप से यह अपने महापापी स्त्री लिङ्ग को तो छेद ही नहीं सकी भला फिर वह उस तप से ऐसी शक्ति तो क्या प्राप्त सकती थी जिससे दुनियां भरके सब रोग जाते रहे और महा शक्तिशाली विद्यादेवियां भी शकल देखते ही भाग जावें, इससे साफ जाहिर है कि रामायण में घाव को भरने वाली जिस विशल्या वूटी का कथन किया गया है और विशल्या अर्थात् शल्य को दूर करने वाली घाव को भरने वाली यह सार्थक नाम जिस वूटी का वताया गया है उसकी जगह पद्मपुराण में कथा को रसिक बनाने के वास्ते विशल्या एक कन्या बनादी है और ऐसे महायुद्ध में भी जहा साक्षात् जानकी वाजी लग रही थी विवाह का धन्धा फैला दिया है, विद्वानों का कथन है कि अति सब जगह बुरी होती है इस ही प्रकार पद्मपुराण की काम कथाओं की अति ने भी इस पुराण की शोभा को वट्टा लगा दिया है।

क्या कोई इस वात को यकीन कर सकता है कि हनुमान के लङ्का पहुंचने पर भरत महाराजने उनकी आधी वात सुनकर और लङ्का जानेका मार्ग निश्चित किये विदून युद्ध की तय्यारी का हुक्म दे दिया हो और रातों रात जव हजारों राजा अपनी २ सेना लेकर लङ्का चलने के वास्ते आखडे हों तव अर्थात् इतनी देर पीछे हनुमान ने कहा हो कि हम तो विशल्या का स्नानजल लेने आये हैं और रातों रात ही लङ्का वापस पहुंच जाना चाहते हैं और आपकी सेना तो लङ्का पहुंच भी नहीं सकती है, इस ही प्रकार जब भरत ने राजा द्रोणमेघ के पास खबर भेजी तो वह भी सेना सहित तय्यार होगया, फिर विशल्या को हनुमान के साथ भेजा तो रातों रात एक हजार कन्या भी साथ चलने को तय्यार होगईं और रातों रात ही लङ्का पहुंच भी गईं, ऐसी वातें शायद पुतलियों के तमाशे मे या वच्चों के गुडागुडी खेल में तो होजाती हैं परन्तु वास्तव में तो कदाचित भी नहीं हो सकती हैं।

आश्चर्य है कि पद्मपुराण में एक हजार राजाओं की कन्याओं के लङ्का जाने का कथन तो कर दिया परन्तु यह न बताया कि वह क्यों गईं और वहां जाकर कहां रहीं और विशल्या की तरह किसको ब्याही गईं या कुवारी ही रहीं, रही रावण की इस शक्ती की बात वह भी नही बन सकी है क्योंकि पद्मपुराण का कथन है कि कैलाश-पर्वत को उठा लेने के बाद जब रावण ने भगवान की स्तुति गाई और अपनी बाह की नस निकालकर बजाई तब धरणेन्द्र का आसन कांपा और उसने रावण की इस भक्ति से खुश होकर रावण को यह शक्ति दी, परन्तु वीतराग भगवान की राग द्वेष रहित परम वैराग्यरूप स्तुति गाने से प्रसन्न होकर क्या धरणेन्द्र ऐसी शक्ति दे-सकता है जिसका काम ही मनुष्यों को मारडालना हो, ऐसी शक्ति देना तो मानो वीतरागरूप भगवान और उनके गुणगान और स्तुति का मखौल उडाना है, इससे स्पष्ट सिद्ध है कि धरणेन्द्र ने रावण को शक्ति नहीं दी थी बल्कि रामायण में जो रावण को महादेव का शक्ति देना लिखा है उसको बदलकर यह कथन कर दिया है परन्तु बात बन नहीं सकी है।

इस ही प्रकार रामायण की विशल्या बूटी की जगह विशल्या स्त्री बनाई गई है और उसके साथ अनेक कामकथा जोड़कर उसको रसीली बनाने की कोशिश की गई है, इस स्थान पर शायद हमारे भाई यह कहने लगें कि रामायण का यह कथन तो बिल्कुल ही असम्भव है कि हनुमान बूटी न मिलने पर पर्वतको ही उठा लाया, परन्तु क्या विशल्या के साथ हजारों राजकन्याओं को रातों रात अयोध्या से लङ्का ले जाना और रावण का कैलाश पर्वत को उठा लेना वा हिला देना असम्भव नहीं है, गरज पद्मपुराण में भी असम्भव बातों की कमी नहीं है।

रावण का विद्या सिद्ध करना।

रामायण का कथन है कि राम की जीत होती हुई देखकर इन्द्रजीत यज्ञ करने के वास्ते निकुम्भिला में चला गया और वहां जाकर होम करने लगा, विभीषण ने राम से कहा कि इन्द्रजीत को मारना चाहिये यदि वह यह हवन कर चुकेगा तो फिर कोई भी उसको न जीत सकेगा और वह सबको मार डालेगा, इस वास्ते उसका हवन पूरा होने से पहिले ही उसको मार डालना चाहिये, इसपर लक्ष्मण उसके मारने को चला, दोनों तरफ की सेना में खूब युद्ध हुआ, राक्षस सेना मारी गई और अपनी सेना को मरी हुई देखकर इन्द्रजीत हवन समाप्त किये बिदून ही उठ खड़ा हुआ और खूब युद्ध किया, आखिर लक्ष्मण ने इन्द्रजीत को मारडाला।

महापुराण का कथन है कि जब रामने लङ्का पर चढाई की थी तब ही रावण विद्या सिद्ध करने के वास्ते सूर्यपाद पर्वत पर चला गया था और इन्द्रजीत उसकी रक्षा करने लगा था, विभीषण ने रामसे कहा कि उसके विद्यासाधन में विघ्न करना चाहिये तब राम की आज्ञा से जवान २ लडके इन्द्रजीत से जालड़े, इस पर रावण ने क्रोध करके अपनी विद्यासे कहा कि इन्द्रजीत की पक्ष लेकर वैरी से खूब लड़ो, इस-पर विद्याओं ने कहा कि अबतक तो हमने तुम्हारा हुक्म माना क्योंकि तुमने हमको साधी थी परन्तु अब तुम्हारा पुण्य घट गया है इस वास्ते अब हमारा जोर नहीं चलता है, यह सुनकर रावण को गुस्सा आया, वह इन्द्रजीत को साथ लेकर घर आया और राम से लडाई शुरू करदी।

पद्मपुराण का कथन है कि रावण ने अपनी हार देखकर बहुरूपिनी विद्या के साधने का इरादा किया और श्रीशान्तिनाथ के मन्दिर में जाकर ध्यान लगाकर बैठ गया और आज्ञा दे दी कि कोई भी किसी प्रकार की कषाय न करे, यदि वैरी उपद्रव करे तो भी क्रोध न किया जावे, रामके लश्कर वालों ने जब यह बात सुनी तब वहा यह सलाह ठहरी कि उसके विद्यासाधन में विघ्न करना चाहिये, क्योंकि यदि वह विद्या सिद्ध कर लेगा तो फिर किसी से भी जीता न जावेगा, इसपर अनेक वानर-वंशीकुमार रावण को कोप उपजाने के वास्ते चले, सिंह, व्याघ्र, वाराह आदि पर चढ़कर गये, उन्होंने लङ्का में बड़ा भारी उपद्रव किया, सब लोग व्याकुल होगये, तब जिनशासन के देव श्रीशान्तिनाथ मन्दिर के सेवक जिनशासन का प्रभाव दिखाने को तय्यार हुए और महा भयङ्कर आकार बनाकर श्रीशान्तिाथ के मन्दिर से निकले, वानरवंशीकुमार उनको देखकर डरे, वह देव क्षण में अग्नि क्षणमें मेघ क्षण में हाथी क्षणमें सर्प क्षणमें वायु क्षणमें वृक्ष और क्षण में पर्वत बनने लगे, वानरवंशी कुमारों का डरा हुआ देखकर राम की सेना के देव इनकी मदद को आये और देवों देवों में आपस में खूब लडाई हुई, तब यक्षों के स्वामी पूर्णभद्र और मणिभद्र को वानरों पर बड़ा क्रोध आया कि यह लोग रावण की तपस्या में विघ्न डालते हैं, यह दोनों देव वानरवंशी कुमारों से लडने को तय्यार हुए, इसपर कुमारों के पक्ष में जो देव आये थे वह भाग गये, फिर यह दोनों यक्षराज राम के पास उलाहना देने को आयें, इस पर राम ने इनको समझाया कि रावण सीता को हर लाया है तुम ऐसे का पक्ष क्यों करते हो, फिर सुग्रीव ने उन यक्षों से कहा कि रावण विद्या सिद्ध कर रहा है, यदि वह विद्या सिद्ध कर लेगा तो फिर किसी से भी जीता न जावेगा इस वास्ते हम उसकी तपस्या में अवश्य विघ्न करेंगे, परन्तु लङ्का में कोई उपद्रव न करेंगे, तब यक्ष-राजों ने कहा कि बहुत अच्छा परन्तु लङ्का वालों को कुछ दुख न पहुंचाओ।

वानरवंशीकुमार श्रीशान्तिनाथ के मन्दिर में गये जहा रावण ध्यान लगाये बैठा था, इन्होंने वहां जाकर रावणको दुर्वचन कहे, उसका उत्तरासन उतारा, उसके सामने उसकी रानियों को कूटा छेता, रावण के हाथ में से माला छीन ली, रावण की स्त्रियों का बुरा हाल किया अर्थात् उनका नाना प्रकार का स्वांग वनाया, मन्दोदरी को रावण के सामने चोटी पकडकर खींचा, उसने बड़ा विलाप किया परन्तु रावण जरा भी चलायमान न हुआ, उस ही समय वहुरूपिनी विद्या जयजयकार करती हुई हुई और प्रकाश करती हुई रावण के पास आई और कहा कि चक्री और अर्धचक्री को छोड़कर जिसको कहो वश करलूं, वानरकुमार चले आये, रावण ने विद्या की परीक्षा के वास्ते अपने हाथ के घात से भूकम्प किया जिससे राम के लश्कर में वडा भारो भय हुआ, रावण ने उस विद्या से मायामय सेना वनाई और खूब युद्ध किया।

नोट।

पद्मपुराण और महापुराण के कथन मे वहुत कुछ अन्तर होने के सिवाय यह कथन वैसे भी विश्वास के योग्य नहीं है, कैसे तमाशे की बात है कि इस कथन में तो दोनों तरफ से कई प्रकार के देव लड़ने झगड़ने को निकल आये परन्तु जव रावण ने सीता हरी, जब हनुमान ने आकर लङ्का को विध्वंश किया और जव रामने लङ्का पर चढ़ाई करके यह महायुद्ध छेड़ा जिसमें लाखों मनुष्यों का वध होरहा था तव कोई भी देव और यक्ष न निकला, साफ़ ज़ाहिर है कि यह सारी कथा कल्पित है और यह वात कथाकार के इख्तियार में है कि जब जैसी चाहे कथा जोड दे मगर हमको तो अफसोस इस वात का है कि राम की सारी सेना को विध्वश करने के वास्ते रावण को जो विद्या सिद्ध कराई गई वह जैनमन्दिर ही में वैठाकर सिद्ध कराई गई और विशेषकर श्रीशान्तिनाथ के मन्दिर मे वैठकर कराई गई जहां शान्ति और वैराग्य के सिवाय और कुछ भी न होना चाहिये था, जैन सिद्धान्त के अनुसार तो जैनमन्दिर वीतरागता की ही प्राप्ति के वास्ते होते हैं, इस ही वास्ते उसमें श्रीवीतराग भगवान की शान्ति प्रतिमा विराजमान की जाती हैं और इस ही कारण हिन्दू मन्दिरों और उनके देवताओं की मूर्त्तियों की वुराई की जाती है कि वह रागी द्वेषी होते हैं, शोक है कि जैनकथा ग्रन्थों की ऐसी ही कथाओं से जैनमन्दिरों की शान्ति भङ्ग होगई है और अव इन्ही जैनमन्दिरों में आपस के झगड़े रहने लगे हैं और खूब मुकद्दमेबाज़ी होती हैं, हमें सबसे बड़ा आश्चर्य इस बात का है कि जिनशासन के देवताओं ने जो श्रीशान्तिनाथ के मन्दिर के सेवक थे रावण को जिनमन्दिर में वैठकर क्यों विद्या

करने दी और क्यों वानरवशी कुमारों को ऐसा भारी उपद्रव करने दिया जिससे रावण की स्त्रियों को महादुख हुआ और उन्होने भारी विलाप किया।

लक्ष्मण पर आसक्त आठ कन्याओं का आकाश में बैठकर युद्ध देखना।

पद्मपुराण के कथनानुसार विद्या सिद्ध होजाने के बाद रावण और लक्ष्मण में खूब युद्ध हुआ गन्धर्व आदि देव और अप्सरायें भी युद्ध देखने को आये, उस समय चन्द्रवर्धन विद्याधर की आठ पुत्रियां आकाश में बैठी हुई युद्ध देख रही थीं उनको अप्सराओं ने पूछा तुम कौन हो, उन्होंने कहा कि जब सीता का स्वयम्बर हुआ था तब हमारा पिताभी हमको वहां लेकर गया था, वहां लक्ष्मण को देखकर हमें उसको देनी करी और हम भी लक्ष्मण पर मोहित होगईं, अब यह युद्ध कर रहा है इस वास्ते हम देख रही हैं कि क्या होता है, इनकी बातें सुनकर लक्ष्मण चौंक कर उधर को देखने लगा, तब वह आठों कन्या उसको देखकर बहुत हर्षित हुईं और कहने लगीं कि हे नाथ हमारा कार्य सिद्ध हुआ।

नोट।

यह कथन रामायण में नहीं है और न हो सकता है क्योंकि यह खूबी पद्मपुराणमें ही है जिसमें युद्ध करते २ भी कामरस का बखान किया जाता है, हां रामायण में गन्धर्व और अप्सराओं का युद्ध देखने आना अवश्य लिखा है और अप्सराओं आदि के आने का यह कथन पद्मपुराण में रामायण से ही लिया गया है क्योंकि रामायण के अनुसार देवी देवताओं की प्रार्थना पर ही विष्णु भगवान ने रावण आदि राक्षसों के मारने के वास्ते राम के रूपमें अवतार लिया था और इस ही युद्ध से देवताओं का कार्य सिद्ध होरहा था, परन्तु पद्मपुराणके अनुसार युद्ध देखनेके वास्ते गन्धर्व और अप्सराओं के आनेका कोई कारण नहीं हो सकता है विद्याधर की आठ कन्याओं के आने का कथन भी पद्मपुराणमें बिल्कुल बेजोड नजर आरहा है क्योंकि जब सीता के स्वयम्बर में इनके पिता ने लक्ष्मण को देनी चाही तो इनका उससे विवाह क्यों नहीं होगया और यदि उसने इनको स्वीकार नहीं किया तो फिर इनको लक्ष्मण से वास्ता ही क्या पैदा हुआ, अप्सराओं से इन कन्याओं की वार्तालाप को लक्ष्मण ने सुनी और उनकी तरफ देखा और वह कन्यायें इस बातसे अति हर्षित हुईं यह कथन ही साफ़ सिद्ध कर रहा है कि यह एक कल्पित रसिक कथन है।

एक अद्भुत सिद्धान्त।

पद्मपुराण में लिखा है कि इस युद्ध में नल ने हस्त को मारा और नील ने प्रहस्त को, पहिले भव में हस्त प्रहस्त के जीव ने नल नील के जीव को मारा था, अब नल नील ने इनको मारा, क्योंकि जो जिसको मारे वह ही उसका मारने वाला होता है, जो जिसको छुडावे वह ही उसका छुडाने वाला होता है, जो जिसको पाले वह उसको पाले किसी से उदासीन रहे तो दूसरा भी उससे उदासीन रहता है।

नोट।

यह कथन जैनसिद्धान्त के बिलकुल ही विरुद्ध है, इसको मानने पर तो जैनधर्म का कर्म सिद्धान्त बिलकुल ही रद्द होजाता है और कभी कोई संसारसे मुक्त हो ही नहीं सकता।

रावण का एक सिर कटने पर दो दो सिर पैदा होजाना।

रामायण का कथन है कि युद्ध में जब रावण का सिर काटा गया तो तुरन्त ही दूसरा शिर जम गया और जब वह भी काट दिया गया तो फिर और जम आया, इस तरह सौ बार सिर काटा गया और प्रत्येक बार नवीन शिर जमता रहा, तब रामने मातलि सारथी के कहने से अगस्त्य मुनि के दिये हुए अस्त्रसे रावण को मारा, रावण के मरने पर देवताओं ने आकाश में नगारे बजाये, मन्द सुगन्ध पवन चली, आकाश से फूलों की वर्षा हुई और देवता लोग जयजयकार करने लगे।

सिर कट जाने पर तुरन्त ही दूसरा शिर जम आना बिलकुल ही असम्भव है और हमारे पाठक भी रामायण के इस कथन को बिलकुल असम्भव और महागप्प ही मानते होंगे परन्तु ऐसा मालूम होता है कि पद्मपुराण में रामायण के इस कथन को बहुत घटिया और फीका समझा है क्योंकि पद्मपुराण में लिखा है कि जब लक्ष्मण ने रावण को शिर काटा तो रावण के एक सिर की जगह दो शिर उग आये और जब वह दोनों शिर काट दिये तो चार शिर जम आये, इस ही प्रकार दो भुजा काटने पर चार भुजा उग आईं और चार काटी तो आठ जम आईं इसी तरह जितने शिर और जितनी भुजा कटती जाती थीं उससे दुगनी २ उगती जाती थीं, यहां तक कि हजारों सिर और हज़ारों भुजायें होगईं, रावण के कटे हुए हजारों सिर और हजारों

भुजाओं से रणभूमि भर गई, आखिर रावण ने चक्र चलाया, वह चक्र तीन प्रदक्षणा देकर लक्ष्मण के हाथ पर आया फिर लक्ष्मण ने उस ही चक्र से रावण का मारा।

नोट।

एक २ शिर के दो २ शिर उगते जाने की यह कथा जैनग्रन्थ में लिखी होने के कारण शायद कोई भाई इसको सच सिद्ध करने की कोशिश करें और कहें कि जो नवीन शिर उगते थे वह मायामय होते थे परन्तु उनको समझना चाहिये कि अगर यह शिर मायामय होते अर्थात् असल में पैदा हुए न होते बल्कि सिर्फ दिखाई ही देने वाले होते तो वह शिर लक्ष्मण के हथियार चलाने पर कट भी न सकते परन्तु ग्रन्थकार ने तो लक्ष्मण का बाहुबल सिद्ध करने के वास्ते यह कथन किया है कि जितने शिर उगते रहे लक्ष्मण हथियार से उनको काटता रहा और इन शिरों को सचमुच के शिर सिद्ध करने के वास्ते ग्रन्थकार ने यहांतक भी कह दिया है कि रावण के उन कटे हुए हजारों शिरों और भुजाओं से सारी संग्रामभूमि भर गई थी, इसके सिवाय यदि इस प्रकार मायावी हजारों शिर और हजारों भुजा पैदा हो सकती हैं और असली शिर और भुजा की तरह कटती और भूमि में पड़ी रह सकती हैं तो रावण के दस शिर और बीस भुजा का होना असम्भव क्यों कहा जाता है, क्या जन्म दिन से उसके मायावी दस शिर और बीस भुजा पैदा नहीं हो सकती थीं, गरज पद्मपुराण के ऐसे असम्भव कथनों को सच मानने से संसार में कोई भी बात असम्भव नहीं रह जाती है।

युद्ध की समाप्ति और राम का अयोध्या जाना।

रामायण का कथन है कि रावण के मरने से विभीषण को बहुत रञ्ज हुआ, राम ने समझा बुझाकर उसका रञ्ज दूर किया और उसको लङ्का का राजा बनाया, फिर राम ने सीता को बुलाकर कहा कि तुम बहुत दिनों तक रावण के यहां रही हो इस वास्ते हम तुमको ग्रहण नहीं कर सकते हैं तुम जहां चाहो चली जावो, सीता ने कहा कि मैं निर्दोष हूं परन्तु राम ने एक न मानी, तब सीता ने लक्ष्मण से कहा कि मेरे वास्ते अग्नि की चिता बनाओ मैं उसमें प्रवेश करूंगी, तब लक्ष्मण ने राम की मंशा लेकर चिता बनाई, फिर सीता यह कहकर अग्निमें घुस गई कि अगर मैं पूरी पतिव्रता हूं तो अग्निदेव मेरी रक्षा करे, तुरन्त ही सब देवता अपने २ विमान

पर चढ़कर आये और हाथ जोड़कर राम से बोले कि तुम तो सब कुछ जानने वाले और तीन लोक के कर्त्ता हो तुम सीता को अग्नि में प्रवेश होते हुए देखकर बेपरवाह क्यों होरहे हो, ब्रह्मा ने राम की बहुत स्तुति करी, अग्निदेव सीता को गोद में लिये हुए चिता में से निकले सीता राम को सौंपी और कहा कि सीता निर्दोष है, राम ने सब देवताओं से कहा कि बेशक सीता निर्दोष है परन्तु यदि हम ऐसा न करते तो लोग हमारा अपवाद करते, महादेव ने राम की बहुत तारीफ़ की कि आपने रावण को मारकर दुनियां का बहुत उपकार किया, अब अयोध्या जाकर अपनी माता को राज़ी करो और राज्य करो, इन्द्र आदिक सब देवता और राजा दशरथ जो इन्द्रलोक में चले गये थे रामसे मिले, रामचन्द्र पुष्पक विमान में बैठकर विभीषण और सुग्रीव आदि के साथ अयोध्या गये, रास्तेमें सीता को सब स्थान दिखाते चले अयोध्या के पास पहुंचकर भारद्वाज ऋषि के आश्रम में ठहरे, हनुमान को भरत के पास भेजा, भरतने अयोध्या सजाई, राम अयोध्या पहुंचे और वहां राम का राज्याभिषेक हुआ।

महापुराण का कथन है कि रावणको मारकर और विभीषण को राज्य देकर और सीता को साथ लेकर राम लक्ष्मण दिग्विजय को निकले, कोटिशिला उठाई, समुद्र के किनारे गङ्गा द्वार पर जाकर लक्ष्मण रथ में बैठकर समुद्र के अन्दर गया अपने नाम का बाण मारा, मागध नाम के समुद्र देव को जीता उसने आकर हरी का अभिषेक किया और आभूषण भेट दिये, इसही तरह समुद्रके दूसरे द्वारपर समुद्र के वर्तनु देव को जीता और उससे भेट ली फिर जहां सिन्धु नदी समुद्र में मिली है वहां समुद्रके देव को जीतकर उससे भेंट ली, फिर सिन्ध नदीके किनारे २ जाकर पश्चिम के राजा वश किये फिर उत्तर की तरफ़ गये वहां के राजाओं से कन्या आदि लीं, फिर पूर्वखण्ड के सब म्लेक्ष जीते, इस प्रकार १६ हजार राजाओं को जीतकर तीन खण्ड के राजा हुए, फिर अयोध्या आये आठ हजार कलशों से अभिषेक हुआ, फिर भरत और शत्रुघ्न को राजाधिराज बनाकर आप बनारस आये और सुख से रहने लगे।

पद्मपुराण का कथन है कि रावण के मरने पर विभीषण को बड़ा रञ्ज हुआ, रामने समझाया, इतने में वहां ५६ हजार मुनियों का सङ्घ आगया, उस ही रात उनमें से अनन्तवीर्य मुनि को केवलज्ञान होगया, सब प्रकार के देव जो एक तीर्थंकर भगवान के जन्म कल्याणक से लौटकर आरहे थे वहां आये, हाथी, घोड़े, सिंह, व्याघ्र आदि अनेक वाहनों पर वह देव चढ़े हुए थे, राम लक्ष्मण भी केवली भगवान की बन्दना को गये, इन्द्रजीत, कुम्भकरण अनेकों ने दीक्षा ली, मन्दोदरी और चन्द्रनखा

आर्यका होगई, उस ही दिन ४८ हजार स्त्रिया आर्यका हुई, फिर राम सीतासे मिले, गले में खूब बाह डालकर मिले, आकाश से देवों ने फूल डाले, सुगन्ध जल की वर्षा करी और सीताके शीलकी सराहना करी, विभीषण आदि सब मिलकर राम लक्ष्मण का राज्याभिषेक करने को तय्यार हुए, उन्होंने कहा कि अयोध्या में हमारे पिता ने भरत को राज्य दिया है इस वास्ते भरत ही हमारा प्रभू है, लेकिन लोगों ने कहा कि हमने तो सुना है कि भरत भी आपकी ही सेवा करता है, तब सबने राम लक्ष्मण का अभिषेक किया, उनकी आज्ञा से विभीषण राज्य करने लगा।

जो २ कन्या मार्ग में लक्ष्मण को देनी की गई थी और विवाह नहीं हुआ था वह सब वहाँ बुलाई गई और विवाह किया गया, राम लक्ष्मण ६ वर्ष तक लङ्का में रहे, खूब भोग भोगे, इन्द्रजीत, मेघवाहन और कुम्भकरण को केवलज्ञान हुआ, मोक्ष गये, विन्ध्याचल के वनमें इन्द्रजीत और मेघनाद ठहरे थे इस वास्ते वह स्थान मेघरव तीर्थ कहलाया, राजामय राज्य अवस्था मे मायाचारी और कठोर परिणामी था वह भी जिनधर्म के प्रसाद से रागद्वेष रहित हुआ।

पद्मपुराण के अनुसार जब श्रीगौतम स्वामी यहां तक कथा सुना चुके तो राजा श्रेणिकने प्रार्थना की कि मैं राजामय और शीलवन्ती स्त्रियोंका चरित्र सुनना चाहता हूं जिसपर श्रीगौतम स्वामी ने इस तरह सुनाना शुरू किया।

एक ब्राह्मण की स्त्री का नाम अभिमाना था, उस स्त्रीको बड़ा भारी अभिमान था, वह ब्राह्मण बड़ा दरिद्री था, इस वास्ते भूख से लाचार होकर उसने अपनी स्त्री को तज दिया, वह स्त्री वन में राजा कररुह को मिली वह राजा लम्पटी था, इस वास्ते वह उस ब्राह्मणी को रूपवन्ती देखकर अपने साथ लेगया और अपनी स्त्री बनाकर रखी, एक दिन भोगके समय उस स्त्री का पैर राजा के मस्तक को लग गया, सुबह ही राजा ने पण्डितों से पूछा कि अगर किसी का पैर राजा के मस्तक को लग जावे तो उसका क्या करना चाहिये, किसी ने कहा उसका पैर काट डालना चाहिये, किसी ने कहा कि उसको मार डालना चाहिये परन्तु एक ब्राह्मण ने कहा कि उसके पैर में आभूषण पहिनाने चाहियें, राजा ने कहा कि तूने यह बात कैसे जानी उसने कहा कि स्त्री के दांतों के निशान तुम्हारे होंट पर होरहे हैं इससे जानी, राजा उससे बहुत खुश हुआ और उसका पद बढ़ाया।

उस ब्राह्मण के घर के पास एक विधवा ब्राह्मणी रहती थी, वह बड़ी दरिद्री थी, उसने अपने बेटे श्रीवर्धन को कहा कि अगर तू भी विद्या सीख ले तो इस पड़ोसी ब्राह्मण की तरह राजा का कृपापात्र बने, तब वह विद्या सीखने को बाहर

गया और वहां शस्त्र और शास्त्र विद्या सीखकर उस नगर के राजा की कन्या को ले भागा, राजा के बेटेने उसपर चढ़ाई करी परन्तु हारकर वापस आगया, श्रीवर्धन राजकन्या को लेकर घर आया, उसकी माता बहुत खुश हुई, फिर श्रीवर्धनने अपनी शस्त्रविद्या से राजा करुरुह का राज्य जीता, जिस राजा की कन्या को यह श्रीवर्धन भगा लाया था वह राजा मर गया था और उसके पुत्र पर शत्रु चढ़ आये थे, जो अपनी स्त्री को साथ लेकर सुरङ्ग के रास्ते से निकल भागा था, वह अपनी स्त्री को लिये हुए यहां अपनी बहिन के पास आरहा था कि रास्ते में उसकी स्त्री को सांप ने काटा, वह अपनी स्त्रीको कन्धे पर रखकर राजामय के पास लाया जो अब मुनिराज होगये थे, मुनिराज की ऋद्धि के प्रभाव से ज़हर दूर होगया और वह स्त्री भली चङ्गी होगई।

राजामय की यह कथा कहकर फिर पद्मपुराण में राम लक्ष्मण की कथा इस तरह वर्णन की है कि एक दिन राम की माता कौशल्या महल की छत पर बैठी हुई राम को याद कर रही थी और काग को कह रही थी कि मेरा रामचन्द्र आवे तो तुझे खीर का भोजन खिलाऊं, इतने में नारद आकाश मार्ग से वहीं छत पर उसके पास आये और पूछने लगे कि क्यों रोती है, जिसने तुझे दुखी किया हो उसे राजा दशरथ दण्ड देवें, तब रानी ने दशरथ के मुनि होजाने भरत को राज्य मिलने और राम के परदेश जाने आदि का सारा हाल सुनाया, जिसको सुनकर नारद भी अपनी बीन जो कन्धे पर धर रखी थी धरती पर पटककर बेहोश होगया और फिर राम की ख़बर लाने के वास्ते लङ्का गया और वहां जाकर राम से उनकी माता का सब हाल सुनाया और कहा कि शीघ्र वहां चलो।

राम लक्ष्मणने बड़ा अफसोस किया कि हम अपनी माताओंको बिल्कुल ही भूल गये, फिर उन्होंने तुरन्त अयोध्या जाने की तय्यारी की, भरत के पास खबर भेजी और सबको साथ लेकर आकाशमार्ग से अयोध्या पहुंचे पुष्पक विमानमें बैठकर आये और रास्ते में सीता को सब स्थान दिखाते हुए आये और अयोध्या पहुंचकर आकाश से रत्नों की इतनी वृष्टि की कि एक २ के घर में स्वर्ण और रत्नों की राशि होगई फिर नगर में घोषणा करा दी कि जिसको जो चाहे लो।

नोट।

इस कथन में भी दोनों जैनग्रन्थों के कथन में बहुत अन्तर है जिसका बहुत अफसोस है, राजामय की कथा के नाम से जो अनेक कामकथा वर्णन कर दी गई हैं

वह बिल्कुल ही बेमौके हैं और खासकर राजा कच्छह की कथा बहुत भद्दी है, श्रीतीर्थंकर भगवान के जन्म कल्याणक में और केवली के समोशरण में देवताओं का सिंह, व्याघ्र आदि भयङ्कर पशुओं और हंस आदि पक्षियों पर चढ़कर आना बहुत खटकता है और साफ तौर पर हिन्दू देवताओं की नक़ल मालूम होती है, जिन्होंने अपने देवताओं को अद्भुत् और आश्चर्यकारी बनाने के वास्ते ही उनका यह रूप बनाया है, जो कुछ भी हो अर्थात् देवताओं के सचमुच यह ही वाहन हों तो भी श्रीतीर्थंकर भगवान के जन्म कल्याणक में और केवली भगवान के समोशरण में तो उनको बहुत ही नम्रता और आधीनताई के साथ अपने सौम्यरूप में ही आना चाहिये था।

यह कथन केवल रामायण का ही है पद्मपुराण का नहीं है कि राजा दशरथ ने भरत को राज्य दिया और राम को वन में निकाला और फिर भरत राम की खड़ाऊं लाकर राम की तरफ से उसका सेवक बनकर राज्य करने लगा, इस वास्ते पद्मपुराण में जो यह लिखा है कि जब रावण के मरने पर लोग राम का राज्याभिषेक करने लगे तब उन्होंने यह कहा कि अयोध्या में हमारे पिताने भरत को राज्य दिया है इस वास्ते भरत ही हमारे प्रभू हैं और इसपर लोगों ने यह कहा कि हमने तो सुना है कि भरत आपकी ही तरफ से राज्य कर रहे हैं, पद्मपुराण के इस कथन से साफ साबित है कि यह पद्मपुराण रामायण से ही बना है जिससे इसमें रामायण की धुन आये बिदून नहीं रहती है, विचारने की बात है कि पद्मपुराण के कथन के अनुसार तो राम दक्षिण देश में अपना नवीन राज्य स्थापन करने के वास्ते ही अयोध्या से निकले थे राम को बनोवास नहीं हुआ था बल्कि वह अपनी खुशी से अयोध्या छोड़कर आये थे इस वास्ते भरत उनका प्रभू भी नहीं हो सकता था और पद्मपुराण के कथन के अनुसार तो भरत भी हर्गिज राम की तरफसे राज्य नहीं कर रहा था, इस वास्ते पद्मपुराण की कथा के अनुसार तो लङ्का जीतने पर राम के राज्याभिषेक के विषय में यह वार्तालाप कदाचित् भी नहीं होनी चाहिये थी जो इस मौके पर पद्मपुराण में लिखी गई है, यह वार्तालाप तो रामायण के ही कथानुसार ठीक बैठती है और साफ सिद्ध करती है कि यह पद्मपुराण रामायण से ही बना है, लङ्का जीतने के पीछे राम लक्ष्मण का छः वर्ष तक अयोध्या न जाना तो अधिक आश्चर्यजनक नहीं है परन्तु छः वर्ष तक अपनी माताकी बिल्कुल सुध न लेना, न उनको अपने पास बुलाना और न अपने क्षेमकुशल और लङ्का जीतने की खबर उनके पास भेजना बहुत ही आश्चर्यकारी है और राम लक्ष्मण जैसे महान् पुरुषों के चरित्र को गिराकर कथा के पढ़ने सुनने वालों को बुरी शिक्षा देने वाला है।

नारद को पद्मपुराण में छुल्लक कहा है परन्तु जैन छुल्लक का बीन कान्धे पर रखे फिरना और दुनियां के लोगों का सुख दुख सुनकर वेहोश तक होजाना और उसकी माता से मिलाने के वास्ते राम को लङ्का से बुलाने जाना जैनसिद्धान्त के अनुसार किसी तरह भी नहीं वन सकता है, इसके अलावा पद्मपुराण के कथन से मालूम होता है कि नारद बहुत वर्षों से अयोध्या नहीं आया था और न उसको यहां का कुछ हाल मालूम था यहां तक कि वह यह भी नहीं जानता था कि भरत को राज्य देकर दशरथ तो मुनि होगये हैं और राम लक्ष्मण वन को निकल गये हैं इस वास्ते अचानचक उसका कौशल्या के महल की छत पर आना भी ठीक नहीं वैठता है, इस कथन में कौशल्या का काग को यह कहना भी बहुत खटका है कि मेरा राम यहां आवे तो तुझे खीर का भोजन खिलाऊं, भला राम के आने से और काग से क्या सम्बन्ध।

इस कथन में जो यह लिखा गया है कि आकाश से स्वर्ण और रत्नों की इतनी वर्षाकी गई कि अयोध्याके सब ही घरोंमें रत्नोंके ढेर लग गये इससे सिद्ध है कि यह श्रीसर्वज्ञभाषित धर्मग्रन्थ नहीं है जिसका एक २ अक्षर सत्य की तराजू में तुला हुआ होना चाहिये था बलिक काव्य वा महाकाव्य ग्रन्थ है जिसमें काव्यरस पैदा करने के वास्ते अनेक गप्पें भरी गई हैं।

इस कथा के सुनने का लाभ।

इतनी कथा कह चुकने पर रामायण में लिखा है कि बालमीक कृत इस आदि काव्य को जो कोई श्रद्धा से सुनता है वह ससार से पार होजाता है, वह परदेश से वापिस आकर अपने बन्धु बान्धवों का सुख भोगता है, जिस घर में यह रामायण होती है वहां कोई विघ्न करने वाला देव नहीं रहता, इसको सुनकर राजा भूमि जीतते हैं, परदेशी सुख पाते हैं, यदि रजस्वला स्त्री सुने तो उत्तम पुत्र जनती है, इसके सुनने से मनुष्य पापों से छूट जाता है और दीर्घायु पाता है, इसके सुनने से मनुष्य ऐश्वर्यवान और पुत्रवान होता है, कुटुम्ब और धन धान्यकी वृद्धि, श्रेष्ठ स्त्रीकी प्राप्ति उत्तम सुख और अर्थ की सिद्धि इस काव्य के सुनने से होती है।

पद्मपुराण में इस मौके पर यह लिखा है कि राम लक्ष्मण का अयोध्या में आगमन और माताओं और भाइयों से मिलाप यह अध्याय जो कोई पढ़े सुने, शुद्ध है बुद्धि जिसकी वह मनुष्य वांच्छित सम्पदा को पावे पूर्ण पुण्य उपार्जे।

नोट।

पद्मपुराण में यहां तो इतना ही लिखना काफी समझा है परन्तु ग्रन्थ की समाप्ति पर इस ग्रन्थ के पढ़ने से उन सब बातों की प्राप्ति लिख दी है जो रामायण में लिखी हैं, बात यह है कि असल में रामायण की कथा तो ६ काण्डों में इस ही स्थान पर समाप्त होगई है क्योंकि देवताओं की प्रार्थना पर विष्णु भगवान का जन्म लेने और राक्षसों के मार डालने का सब कार्य यही समाप्त होजाता है, इस वास्ते राक्षसों के मारने की इस पुण्य कथा को सुनने से रामायण में अपनी धर्मश्रद्धा के अनुसार अनेक कार्यों का सिद्ध होजाना वर्णन किया है परन्तु जैनसिद्धान्त के अनुसार तो यह बात किसी तरह भी ठीक नहीं बैठती है इससे स्पष्ट सिद्ध है कि यह पद्मपुराण रामायण से ही बनाया गया है और तब ही उसका यह पुण्य प्राप्ति का कथन जैनसिद्धान्त के विरुद्ध होने पर भी पद्मपुराण में आगया है।

---

* सातवां अध्याय *

भरत का वैराग्य।

आगे चलकर पद्मपुराण में लिखा है कि भरत को वैराग्य हुआ और त्रैलोक्य-मण्डन हाथी को भी वैराग्य हुआ, इतने में श्रीदेशभूषण और कुलभूषण केवली भी यहां आगये, सब लोग वन्दना को गये और हाथी भी गया, लक्ष्मण ने केवली भगवान से हाथी का हाल पूछा, केवली भगवान ने कहा कि एक समय राजा सूर्योदय और चन्द्रोदय मिथ्यामार्ग पर चलते हुए और चारों गतियों में भ्रमण करते हुए एक तो इनमें से राजा कुलङ्कर हुआ और दूसरा उसका पुरोहित, एक दिन राजा तापसियों के पास जाता था, एक मुनि ने कहा कि तेरा दादा सर्प होकर तापसियों के काठ में है, काठ चीरने पर यह बात सच निकली, राजा दीक्षा लेने को तय्यार हुआ, पुरोहित ने रोका और समझाया कि वेदोक्त धर्म ही पालन करना चाहिये, राजा की रानी परपुरुष से फँसी हुई थी, उसने समझा कि राजा ने मेरा व्यभिचार देख लिया है इस वास्ते मुनि होता है, ऐसा न हो कि वह क्रोध में आकर मुझे मारडाले, ऐसा विचार करके उस रानी ने राजा और पुरोहित दोनों को विष देकर मारडाला,

वह दोनों अनेक त्रियंञ्च योनि में भ्रमते रहे फिर एक ब्राह्मण के यहां विनोद और रमण नाम के दो पुत्र हुए, रमण विद्या पढ़ने को परदेश गया और विद्या पढ़कर वापिस घर आते हुए रात को शहर के बाहर जङ्गल में एक मन्दिर में ठहर गया विनोद की स्त्री अशोकदत्त से फँसी हुई थी और उस ही मन्दिर में मिलने को ठहरा रक्खी थी, विनोद को इस बात का पता लग गया वह अशोकदत्त को मारने के वास्ते इस ही मन्दिर में आया और रमण को ही अशोकदत्त समझकर मारडाला, फिर घर आकर खुद भी मरगया, यह दोनों भाई अनेक योनियों में भ्रमते हुए एक तो एक ब्राह्मण का पुत्र हुआ जो बडा दुष्ट था, इसको उसके पिता ने निकाल दिया और वह एक वेश्या से जा फँसा, फिर मुनि हुआ और छटे स्वर्ग गया, दूसरा भी मुनि होकर इस ही स्वर्ग में गया, दोनोंमें बडा स्नेह हुआ, उनमें से एक तो यह राजा भरत हुआ है और दूसरा यह त्रैलोक्यमण्डन हाथी, यह सुनकर भरत मुनि होगया, हाथी ने श्रावक के व्रत लिये और बड़े २ उग्र तप किये आखिर समाधिमरण करके छटे स्वर्ग गया, भरतको केवलज्ञान हुआ और मोक्ष गया, राम लक्ष्मण अयोध्या के राजा हुए।

नोट।

हरएक ही कथन में कामकथा और व्यभिचार कथा को पढ़ने २ तो हमारे भाई अवश्य उकता गये होंगे और ऐसे सतयुग का वर्णन सुनने से घबराने लगे होंगे जिसकी कोई बात भी कामकथा बिदून नहीं कहा जा सकती है परन्तु हमारी समझ में तो सतयुग ऐसा बुरा नहीं हो सकता है इस वास्ते यह ही ख्याल होता है कि कथा को अधिक मनभावनी बनाने और काव्यरस को भरपूर करने के वास्ते ही ऐसी कथा वर्णन की गई हैं।

जैनकथा ग्रन्थों में अनेक जगह त्रियञ्चों को भी वैराग्य उत्पन्न होना और अनुव्रत धारण करके तप करना और समाधिमरण करके स्वर्ग जाना लिखा है, जैनधर्म सब ही जीवों का कल्याण करता है, जैनधर्म का यह महागौरव दिखाने के वास्ते ही यह कथा वर्णन की गई मालूम होती हैं और इस मौके पर भी इस हाथी के वैराग्य का वर्णन रामायण की एक बिलकुल इससे उलटी कथा के विरोध में ही कहा गया मालूम होता है, रामायण की वह कथा यह है कि रामके राज्य में अयोध्या में किसी को कोई भी तकलीफ़ नहीं थी, अचानक एक ब्राह्मण का बालक मर गया, वह ब्राह्मण अपने मरे हुए बालक को लेकर राम के पास आया और कहा कि तुम्हारे राज्य में अवश्य कहीं न कहीं कोई अधर्म होरहा है जिसके कारण मेरा बालक मरा है, राम ने

अपने सारे राज्यमें इस बातकी बडी ढूढ कराई कि कही पाप तो नही होरहा है, बडी भारी खोज के बाद यह मालूम हुआ कि एक पहाड पर एक शूद्र तपस्या कर रहा है, राम ने शूद्र के तपस्या करने को महापाप समझकर उसका शिर काट डाला तब ही वह ब्राह्मण का बालक जिन्दा होगया, बेशक रामायण की इस भयानक कथाको पढ़-कर सबके हृदय हिल गये होंगे और शूद्रों को धर्म कर्म से बिल्कुल ही वञ्चित रखने के वास्ते ऐसी २ कथाओं का जोडना महा जुल्म समझने होंगे, बेशक जैनधर्म में यह एक महान् गौरव की बात है कि वह सब ही जीवों के वास्ते धर्म का कल्याणकारी मार्ग खोलता है और इस उदार सिद्धान्त को लोगों के हृदय में ठसा देने के लिये ही जैन कथाओं में हाथी, घोडे, कुत्ता, बिल्ली आदि पशुओं तक के धर्म ग्रहण करने और तप करके स्वर्ग जाने की कथा वर्णन की गई है, परन्तु शोक है कि यह सब होते हुए भी आखिर को जैनियों ने भी हिन्दूधर्म के इस महाअन्यायपूर्ण कठोर सिद्धान्त को ग्रहण कर लिया है और यह कथन करना शुरू कर दिया है कि शूद्र को उत्कृष्ट धर्म पालन करने का अधिकार नहीं है, जैनियों के ऐसा मान लेने से जैनधर्म की बहुत बड़ी उदारता और महान् महिमा धूल में मिल गई है और इसका सारा गौरव जाता रहा है, आजकल तो कोई २ जैनी यहां तक कहने लगे हैं कि शूद्रों को पूजन करने तक का भी अधिकार नहीं है।

तापसियों के जलाने के काठ में सर्प निकलने का कथन अन्य जैनकथा ग्रन्थों में भी पाया जाता है जो हिन्दू तापसियों की निन्दामें ही कहा गया मालूम होता है।

राजा मधु से शत्रुघ्न का युद्ध।

रामायण का कथन है कि च्यवन आदि जो यमुना के किनारे पर रहते थे वह राम के पास आये और कहने लगे कि तुम हमारा भय दूर करो, मधु दैत्य ने धर्मात्मा होने के कारण महादेवजी से एक त्रिशूल प्राप्त कर लिया था, उस मधु के लवण नाम का एक अति दुष्ट पुत्र हुआ है, मधु उसको त्रिशूल देकर और उससे नाराज होकर वरुणालय चला गया है, अब वह लवण-तपस्वियों को बहुत दुख देता है वन में रहता है और लाखों जीवों को मार २ कर खाता है, रामने कहा कि हम उस राक्षस को मारेंगे, भरत ने कहा मुझको भेजो, शत्रुघ्न ने कहा यह काम मुझको सौंपो, आखिर शत्रुघ्न को ही यह काम सौंपा गया और कहा गया कि लवण को मारकर मधुबन अर्थात् मथुरा का राज्य तुम ही करो और यमुना किनारे नगर बसावो, रामने उसको एक बाण दिया जिसको नारायण ने मधुकैटभ के मारने के वास्ते बनाया था, और

कहा कि लवण के पास महादेव का शूल है, जब वह बिना शूल लिये घर से बाहर जावे तब तुम उसके दरवाजे पर जा डटो और जब वह आवे, तो दरवाजे पर ही उससे लड़ो और त्रिशूल लेने के वास्ते घर के अन्दर मत जाने दो, इस तरह तुम उसको मार डालोगे ।

शत्रुघ्न बहुत सेना लेकर इस प्रकार गया जिससे लवण यह न समझे कि कोई मुझपर चढकर आया है, रास्ते में वह ऋषि के आश्रम में ठहरा, ऋषि ने कहा कि मधु का बेटा लवण ऐसा बलवान है कि राजा मानधाता जिसने इन्द्र को भी जीत लिया था वह भी लवण को नहीं जीत सका था, सुबह ही लवण जङ्गल में शिकार करने गया, शत्रुघ्न उसके दरवाजे पर जा डटा, लवण के आने पर दोनों में खूब युद्ध हुआ, लवण ने अपना त्रिशूल अपने घर के अन्दर से लाना चाहा परन्तु शत्रुघ्न ने नहीं लाने दिया, लवण ने शत्रुघ्न को दबा लिया, शत्रुघ्नने राम का दिया हुआ बाण उठाया, सब देवता घबराये, ब्रह्माने तसल्ली दी कि वह बाण लवणको ही मारेगा, लवण मारा गया, लवण का त्रिशूल महादेवजी के पास चला गया, देवताओं ने शत्रुघ्न की बड़ाई की और वर दिया, शत्रुघ्न ने मथुरापुरी बसाई ।

पद्मपुराण का कथन है कि राम ने शत्रुघ्न से पूछा कि तुमको जो राज्य रुचे वह लो उसने कहा कि मुझे मथुरा का राज्य दो, रामने कहा कि वहां मधु का राज्य है जिसको चमरेन्द्र ने त्रिशूल दे रखा है, उसका पुत्र लवणार्णव विद्याधरों से भी नहीं जीता जा सकता है और मधु रावण का जमाई है, इस वास्ते तुम मथुरा को छोड़कर और कोई राज्य लो, शत्रुघ्न ने कहा कि मुझको तो मथुरा का ही राज्य दो, मधु को मैं आप जीत लूंगा, तब राम ने कहा कि बहुत अच्छा परन्तु मधु से उस समय युद्ध करना जब उसके हाथ में त्रिशूल न हो, लक्ष्मण ने शत्रुघ्न को एक महा-दिव्य धनुषबाण दिया, शत्रुघ्नने यमुना किनारे डेरे किये, उसके मन्त्री आपस में बात करने लगे कि इस राजा मधु ने तो मानधाता को भी जीत लिया था इस वास्ते वह तो किसी से भी नहीं जीता जा सकता है, इतने में हरकारों ने आकर खबर दी कि आजकल राजा मधु शहर के बाहर एक बाग में अपनी रानी के साथ भोगविलास में लग रहा है उसे आजकल राजपाट की कुछ सुध नहीं है इस वास्ते अब मथुरा को लेलो, अगर वह मथुरा में आगया तो फिर वह किसी प्रकार भी नहीं जीता जावेगा, शत्रुघ्न ने रात को ही मथुरा पर क़ब्ज़ा कर लिया और खुद हथियार लेकर राजा के महल पर जा डटा ।

जब मधु ने यह हाल सुना तो वह लडने को आया, त्रिशूल उसके पास नहीं था तो भी वह लड़ा, उसका बेटा लवणार्णव भी लड़ा और मारा गया, आखिर मधु अपने वरुणेन्द्र नामके हाथी पर चढ़कर लडा, फिर हार देखकर उसको लडने २ ही वैराग्य आगया, हाथी पर बैठे ही बैठे उसने युद्धस्थल में ही अपने केशलोंच किये और मुनि होगया, स्वर्ग की अप्सरा जो युद्ध देखने को आई थी उन्होंने आकाश से फूलों की वर्षा करी, मथुरा में शत्रुघ्न का राज्य होगया।

त्रिशूल के अधिष्ठाता देव त्रिशूल को लेकर चमरेन्द्र के पास गये, मधु की मृत्यु सुनकर चमरेन्द्र को बडा क्रोध आया, वह मथुरा आया परन्तु वहां उसने लोगों को उस ही तरह उत्सव करते देखा जिस तरह वह मधु के समय में करते थे इस प्रकार लोगों को कृतघ्न समझकर उसको उनपर बहुत क्रोध आया, उसने मथुरा में अनेक रोग फैलाये, लोग तडातड मरने लगे, भारी मरी पडी, शत्रुघ्न चमरेन्द्र से भय खाकर अयोध्या आया परन्तु मथुरा के वास्ते ही बहुत तडपता रहा, शत्रुघ्न को मथुरासे अति प्रीति का कारण यह था कि उसके अनेक पूर्वभव मथुरा ही में बीते थे, पहिले तो उसने अनेक त्रियञ्च भव धारण किये फिर वह कुलन्धर नाम का अति रूपवान ब्राह्मण हुआ, राजा की रानी ने उसपर आशक्त होकर उसको महलमें बुलवाया, दोनों एक आसन पर बैठे थे कि इतने में राजा आगया, रानी ने अनेक बहाने बनाये परन्तु राजा ने एक न मानी और ब्राह्मण के अङ्ग काट डालने का हुक्म दे दिया, फिर एक मुनिने उसको मुनि बनाकर छुडवा, महातप करके स्वर्ग गया, फिर वह मनुष्य हुआ और फिर स्वर्ग गया, इस प्रकार अनेक भव के बाद यह शत्रुघ्न हुआ।

मथुरा में चरणमुनि आये जिनके प्रभाव से चमरेन्द्र की फैलाई हुई मरी ऐसी भागी जैसे ससुर को देखकर व्यभिचारिणी स्त्री भागती है, लोग ऐसे प्रसन्न हुए जैसे नववधु पति को पाकर प्रसन्न होती है, मुनि महाराज ने दान और पूजा का उपदेश दिया और कहा कि जिस घरमें अंगूठे के बराबर भी जिन प्रतिमा होगी उसके घर से मरी भाग जावेगी, शत्रुघ्न ने अनेक जिनमन्दिर बनवाये लोग सुखी हुए [illegible] वी

नोट-१

के युद्ध का यह कथन रामायण और पद्मपुराण में बहुत कुछ मिलता है, पद्मपुराण के इस कथन में मधु का युद्ध करते ही करते और संग्रामभूमि मे हाथी पर बैठे ही बैठे केशलौंच करना बहुत खटकता है और एक नाटक का-सा कथन मालूम होता है क्योंकि मुनि महाराजके पास जाकर दीक्षा लेते समय ही केशलौंच करना ठीक होता है न कि दीक्षा लेने का विचार आते ही पहिले ही पहिले केशलौंच करने लग जाना।

स्वर्गकी अप्सरा सब ही युद्धोंको देखने आजाती हैं यह बात बहुत ही आश्चर्यकारी है और भारी सन्देह होता है कि वह वास्तव में ही मनुष्यों का युद्ध देखती फिरा करती थीं या कथा को मनोरञ्जन बनाने के वास्ते ही इन स्वर्ग की सुन्दरियों का कथन किया गया है और पद्मपुराण की कथनशैली से तो यह ही मालूम होता है कि कथा को रसीली बनाने के वास्ते ही इनका कथन किया गया है जैसा कि मुनि महाराज के तप के प्रभाव से चमरेन्द्र की फैलाई हुई मरी के दूर होने के विषय में यह अटकलपच्चू और बेमौके का दृष्टान्त लिख मारा है कि वह मरी ऐसी भागी जैसे ससुर को देखकर व्यभिचारिणी स्त्री भागती है, ऐसे दृष्टान्तों को पढ़कर हम तो यह बात मानने को किसी तरह भी तय्यार नहीं हैं कि यह ग्रन्थ बाह्य अभ्यन्तर सर्व परिग्रह रहित परम वैरागी महामुनियों के भी सर्दार श्रीजैन आचार्य का बनाया हुआ है, पाठकगण! विचार करें कि मरी के दूर होने से जो प्रसन्नता मथुरा के लोगों को हुई उसको प्रगट करने के लिये क्या दुनियां में कोई और दृष्टान्त या उपमा की बात नही रही थी जो आचार्य महाराज को यह लिखना पड़ा कि मरीके दूर होने से उन लोगों को ऐसी प्रसन्नता हुई जैसे नव वधू को पति के मिलने से होती है, क्या जैनआचार्य को जिनके वैराग्य की तारीफ़ में धरती आकाश एक किया गया है ऐसे दृष्टान्तों का देना किसी तरह शोभा देता है, ऐसे कथनों से साफ सिद्ध होता है कि पद्मपुराण मे क़दम २ पर जो अनेक कामकथा और व्यभिचार की कहानियां वर्णन की गई हैं वह सब ग्रन्थ को मनोरञ्जन बनाने के वास्ते ही कही गई हैं और इस प्रकार यह कहानियां वर्णन करके ख्वामख्वाह ही सतयुग को बदनाम किया गया है।

इसमें कोई सन्देह नही है कि जिस समय में यह पद्मपुराण लिखा गया है उस समय में हिन्दू कवि भी अपने काव्य ग्रन्थों में काम कथन को अति आवश्यक समझते थे और वह अपने धर्म ग्रन्थों को भी काम कथाओं से ही सुशोभित करते थे परन्तु उनके धर्म को और जैनधर्म को धरती आकाश का अन्तर है, वह तो अपने ऋषियों और मुनियों के साथ भी स्त्रियो को लगाते हैं और किसी २ ग्रन्थ में तो वह अपने अनेक देवताओं को भी कामी और व्यभिचारी सिद्ध करते हैं इस वास्ते उनके

ग्रन्थों में कामकथाओं का होना और उनके ऋषि मुनियों के द्वारा इन कामकथाओं का गूंथा जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है परन्तु उनकी देखादेखी जैनकथा ग्रन्थों में भी कामकथाओं की भरमार करना और यह कहना कि यह कथा जैन आचार्यों के द्वारा वर्णन की गई हैं वास्तव में जैनधर्म को बट्टा लगाना है और ऐसा करने का फल भी यह ही हुआ है, अर्थात् जबसे जैन कथाकारों ने हिन्दू ग्रन्थकारों का अनुकरण करके कामकथाओं का वर्णन करना शुरू कर दिया है तब ही से जैनधर्म घटना शुरू होगया है और बड़ी शीघ्रता के साथ जैनी लोग कम होने शुरू होगये हैं।

इस मौके पर हमको यह बता देना जरूरी मालूम होता है कि यद्यपि जैन-कथाकारों ने काम कथाओं का लिखना हिन्दू ग्रन्थों से ही सीखा है परन्तु शोक है कि जैन कथाकारों ने काम कथाओं की इतनी अधिक भरमार करनी शुरू कर दी है कि हिन्दू ग्रन्थोंमें उसका पासङ्ग भी नहीं है, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण वाल्मीक रामायण और पद्मपुराण है, जिनके मिलान करने से साफ मालूम होता है कि वाल्मीक रामायण के २५ हजार से भी अधिक संस्कृत श्लोक हैं इस कारण वह पद्मपुराण से दुगनी और उसकी अपेक्षा महाकाव्य ग्रन्थ है परन्तु तो भी जितनी कामकथायें पद्म-पुराण में भरी हुई हैं उनका चौथाई हिस्सा भी रामायण में नहीं है।

चमरेन्द्र के द्वारा मरी फैलने का कथन हिन्दुओं की तरह जैनियों में भी अनेक देवी देवताओं के पूजन को फैलाने वाला है और ऐसे ही ऐसे कथनों से देवी देवताओं के मानने की प्रवृत्ति जैनियों में भी हिन्दू भाइयों के समान ही होगई है, क्योंकि जब देवगण मनुष्यों से नाराज होकर ऐसी मरी फैला सकते हैं जिससे लोग तडातड मरने लगें तो स्तुति और भेंट आदिक के द्वारा उनका राजी रखना भी जरूरी है, यह ही कारण है कि जैन पण्डितों और उपदेशकों के बहुत कुछ चिल्लाने और जैनसि-द्धान्त को अनेक युक्तियों के साथ समझाने पर भी आजकल जैनी लोग देवी देवताओं का पूजन नहीं छोड़ते हैं, भला श्रीसर्वज्ञभाषित और श्रीआचार्यों द्वारा रचित कथा-ग्रन्थों के ऐसे कथनों के मुकाबिले में पण्डितों और उपदेशकों का चिल्लाना और देवी देवताओं के पूजने को मिथ्यात्व क्रिया बताना क्या असर रख सकता है।

जिस घर में एक अँगुली की भी जिनेन्द्र प्रतिमा होगी वहां मरी बिल्कुल भी न रहेगी, यह कथन भी जैनसिद्धान्त के विरुद्ध ही है और जैनियों में जड़ पूजा को फैलाकर उनको जड़बुद्धि बनाने वाला है, जैनधर्म के अनुसार तो जो कोई पुरुष अपने भाव वीतरागरूप करना चाहे वह ही जिनेन्द्र प्रतिमा से लाभ उठा सकता है, और वह भी सिर्फ वीतराग भाव की प्राप्ति का, इस कारण घर में केवल जिनेन्द्र-

प्रतिमा का मौजूद होना ही कोई कार्यकारी नहीं हो सकता है, यदि प्रतिमा में ही कोई शक्ति हुआ करती तो कमसे कम जैनियों में जैनमन्दिर मे बैठे हुए तो आपसमें किसी प्रकार का तकरार न हुआ करता और श्रीसम्मेद आदि जैनतीर्थों पर जैनियों में नित्य की मार पिटाई और मुकद्दमेबाजी न होने पाती, देखो जैनकथा ग्रन्थों की कैसी अनोखी महिमा है कि वह साक्षात् श्रीपार्श्वनाथ आदि तीर्थंकरों पर तो देवों द्वारा अनेक प्रकार के उपसर्गों का होना वर्णन करते हैं और उनकी ही जडमूर्त्ति के घर में मौजूद होने से इन्द्र द्वारा फैलाई हुई बीमारी के दूर होजाने का निश्चय दिलाते हैं, ऐसी ही ऐसी कथाओं के कारण जैनियों में वीतराग प्रतिमा के दर्शन और वीतराग भगवान के गुणगान के द्वारा अपने भावों को शुद्ध करने का रिवाज तो हटता जाता है बल्कि अपने भावों की दुरुस्ती का ज़रा भी ख्याल न रखकर सिर्फ बाह्यरूप से प्रतिमा के आगे अष्ट द्रव्य के चढ़ाने और अर्थ की तरफ ज़रा भी ध्यान न देकर सिर्फ मुख से स्तोत्र उच्चारण कर देने का रिवाज फैलता जाता है।

लक्ष्मण का मनोरमा से विवाह।

पद्मपुराण में लिखा है कि जब रत्नपुरके राजा की पुत्री मनोरमा व्याहने योग्य हुई तो राजा ने जैन छुल्लक श्रीनारदजी से सलाह करी, नारदजी ने उसको लक्ष्मण से विवाह देने की सलाह दी, राजा के पुत्र इस बात से नारदजी पर बहुत नाराज़ हुए और उन्होंने उसको धक्के देकर निकलवा दिया, नारदजी लक्ष्मण के पास आये और उसको मनोरमा का चित्र दिखाया जिससे वह कामवश होकर उस कन्या पर आशक्त होगया और विचार करने लगा कि अगर यह स्त्री न मिली तो मेरा जीना ही निष्फल है, ऐसा विचार कर उसने भारी सेना के साथ रत्नपुर पर चढ़ाई कर दी और भारी युद्ध करके राजा को हराया, नारदजी लक्ष्मण की इस जीत पर बहुत खुश हुए और उसने राजा के पुत्रों की बहुत हँसी उड़ाई और उनको बहुत खिजाया, लक्ष्मण का मनोरमा से विवाह होगया।

नोट।

हमको बड़ा आश्चर्य है कि हिन्दुओं के नारद मुनि को ग्यारहवां प्रतिमाधारी जैन छुल्लक बनाकर और उसके बड़े ही घटिया कार्य दिखाकर इस पद्मपुराण में क्यों छुल्लक पद को भ्रष्ट किया गया है, इस ही तरह जैन महापुराण में इस ही नारद को जैन ब्रह्मचारी बताया है और जगह २ उसको मुनि वा ऋषि लिखकर उससे कृत्य ऐसे ही ऐसे घटिया कराये हैं जो पहिली प्रतिमाधारी वा पाक्षिक श्रावक को भी

शोभा नहीं देते हैं, जिससे स्पष्ट सिद्ध है कि जन कथाकारों को जितना ध्यान अपनी कथाको अलकृत करने का रहा है उतना ध्यान जैनधर्म के सिद्धान्तों की रक्षा का नहीं रहा है, मालूम नहीं यह नारद महाराज चटपट स्त्रियों का चित्र किस तरह खींच लेते थे क्योंकि सीता के महल से निकाले जाकर भी इन्होंने भामण्डल को सीता का चित्र दिखाया था और इस ही तरह यहां मनोरमा का चित्र लक्ष्मणको दिखा दिया, ऐसी बातों से कथा का बनावटी होना स्पष्ट सिद्ध है।

यदि रत्नपुर के राजपुत्र अपनी बहिन लक्ष्मण को नहीं देना चाहते थे तो लक्ष्मण का क्या अधिकार था कि वह भारी सेना लेकर उनपर चढ़ जावे और हजारों लाखों मनुष्यों की हत्या करने के बाद जो युद्ध में होती ही है मनोरमा को ब्याह कर लावे, अफसोस है कि जैन कथाकारों ने कन्या के ऊपर ऐसे २ अनगणित अन्यायों से जैनकथा ग्रन्थों को भरकर सतयुग को एक महा अशान्ति का भयानक समय बना दिया है, सम्भव है कि जैन कथाकारों ने अपने ग्रन्थ को कामरस से भरपूर करने के वास्ते ही ऐसी कथा लिखी हों परन्तु इसका परिणाम बहुत खराब हुआ है और एक ही प्रकार का रस ज्यादा होजाने के कारण कथा भी बेमजा होगई है।

---

* आठवां अध्याय *

राम का सीता को घर से निकाल देना।

रामायण का कथन है कि कुछ दिन बाद रामचन्द्रजी सीता को गर्भवती देख बहुत खुश हुए और पूछा कि तुम्हारा जी किस बात को चाहता है, सीता ने कहा कि गङ्गा के किनारे तपोवन देखने को, रामने कहा कि अच्छा सुबह ही दिखा देंगे, अगले दिन रामने दर्बार में आकर पूछा कि लोग हमारी बाबत क्या चर्चा करते हैं, एक पुरुष ने कहा कि शहर में यह चर्चा होरही है कि जिस सीता को रावण लेगया था उसको रामने अपने घर में कैसे रख लिया, यह सुनकर राम ने इस अपवाद को दूर करने के वास्ते लक्ष्मण को आज्ञा दी कि सीता को गङ्गा के तटपर तमसा नदी के किनारे वाल्मीकजी के आश्रम मे छोड आओ, इसमें सीता की भी इच्छा पूरी होजावेगी सीता को ऋषियों के दर्शन कराने के बहाने से लेचला, सीता खुशी २ चली गई परन्तु वहां पहुंचकर लक्ष्मण उसको सब हाल कहकर वहीं छोड आया।

पद्मपुराण का कथन है कि सीता को सुपने आये जिससे राम ने जाना कि वह गर्भवती है और उसके दो प्रतापी पुत्र होंगे, फिर राम ने सीता से कहा कि तेरी जो अभिलाषा हो वह पूरी करूं, सीता ने कहा कि मेरी अभिलाषा अनेक चैत्यालयों के दर्शनों की है, इसपर राम ने दुनियां भर के सब जिन मन्दिरों में उत्सव कराये और धर्मक्षेत्रों में जाने के इरादे से उनमें शोभा कराई, फिर वर्षाऋतु आजाने के कारण सब रानियों के साथ वनमें गये, सीता ने भण्डारी को आज्ञा दी कि जब तक मेरे बालक जन्मे तब तक जो कोई जो कुछ मांगे उसको वह ही दान दो, इतनेमें प्रजा के मुखिया लोग रामके पास आये और कहने लगे कि सब प्रजा मर्यादा रहित होगई है और लोग पराई स्त्रियों को जबरदस्ती हरकर लेजाने लगे हैं और स्त्रियों के घर के लोग उन शीलवन्ती स्त्रियों को फिर अपने घर लेआते हैं और कहते हैं कि जब राम ही अपनी सीता को लेआया तो औरों की तो बात ही क्या है, राम को इस बात से बड़ी चोट लगी और लक्ष्मण से कहा कि यद्यपि सीता बिलकुल शीलवती है तो भी इसके रहनेसे हमारी कीर्त्ति पर बट्टा लगता है इस वास्ते सीताको तज देना चाहिये, लक्ष्मण ने बहुतेरा समझाया परन्तु राम ने एक न मानी और सेनापति को आज्ञा दी कि सीता को सम्मेदशिखर आदि तीर्थक्षेत्रों और रास्ते के सब जिनमन्दिरों के दर्शन कराकर उसको महा भयानक वनमें अकेला छोड़ आओ, सेनापति ने ऐसा ही किया।

नोट ।

साफ़ ज़ाहिर है कि पद्मपुराण में यह कथन रामायण से ही लिया गया है परन्तु रामायण में तो सीता बाल्मीक ऋषिके आश्रम में छोडी गई है जहां वह अच्छी तरह से अपने दिन बिता सकती थी और उसके बच्चा जनने के समय की भी पूरी रक्षा हो सकती थी क्योंकि हिन्दू ऋषियों के आश्रम में उनकी स्त्रियां भी रहती हैं परन्तु पद्मपुराण में तो सीता को तो निर्दोष बताते हुए भी और यह मालूम होते हुए भी कि वह गर्भवती है और दो बच्चों को जन्म देने वाली है उसको सिंहों के भरे हुए वन में अकेली ही छोडी गई है, नहीं मालूम बिना कारण यह कठोर दण्ड (जो वास्तव में दण्ड नहीं बल्कि साक्षात् महाहिंसा थी) तद्भव मोक्षगामी श्रीरामचन्द्रजी ने दिया या ग्रन्थकर्त्ता ने ही अपनी कथा को रोचक बनाने के वास्ते ऐसा लिख दिया है, क्योंकि कथाकारों का यह ख्याल अवश्य रहता है कि जिसकी कथा लिखी जावे उसको बड़े २ भयानक कष्टों में फंसाने और फिर उन कष्टों से निकाल देने से ही कथा अधिक रोचक बना करती है, कुछ हो परन्तु इतना हम अवश्य कहेंगे कि यद्यपि

पद्मपुराण में यह दिखलाकर कि राम ने जैनमन्दिरों में उत्सव कराये और दुनिया भरके जैनमन्दिरों में पूजन कराई राम को महा धर्मात्मा सिद्ध करने की कोशिश की गई है परन्तु सीताके विषय में राम का ऐसा अन्यायपूर्ण व्यवहार उन सब धर्म कर्म को पानी में बहा देता है और उनको अत्यन्त कठोर चित्त और महापाप का भागी सिद्ध कर देता है और अपनी कीर्त्ति की रक्षा के वास्ते पूर्ण स्वार्थी बनकर महाधर्मात्मा और निर्दोषियों पर भी महा अन्याय कर बैठने की प्रवृत्ति चलाता है।

इस कथा से साफ तौर पर सब लोगों को यह कहने का मौका होगया है कि जब श्रीरामचन्द्र जैसे महाबली और चरम शरीरी पुरुषों ने अपनी ख्वामख्वाह की बदनामी दूर करने के वास्ते बेचारी निर्दोष सीता पर इतना भारी जुल्म किया कि उसको घर से निकाल दिया बल्कि अकेली को एक महा भयानक वन में छोडा तो हम जैसे कमजोर और मामूली आदमी तो अपने स्वार्थसाधनके वास्ते जो भी अन्याय करलें वह थोडा है, इस कथा में सबसे भारी गजब तो इस बात का है कि राम ने गर्भ स्थित बालकों पर भी कुछ दया नहीं की और उनको भी सीता के साथ काल के गालमें ही छोडा, सतयुग के श्रीराम से तो ज्यादा दयावान इस कलिकाल के हमारे अंग्रेज हैं जो गर्भवती स्त्री को महादोषा होने पर भी फासी नहीं देते हैं।

सच तो यह है कि जिस समय का यह कथन किया गया है उस समय तो कदाचित् भी ऐसा अन्याय न होता होगा और तद्भव मोक्षगामी किसी प्रकार भी ऐसे स्वार्थी और अन्यायी नहीं हो सकते हैं किन्तु जिस समय यह ग्रन्थ लिखा गया है उस समय बेशक इस हिन्दुस्तान में स्त्रियां इस ही प्रकार घास फूंस के समान समझी जाने लगी थीं और उनपर ऐसे हो ऐसे महान् अत्याचार होने लगे थे, उस समय के ही ऐसे २ अमानुषीकृत्यों से यह हिन्दुस्तान रसातल को पहुंचा था और शीघ्र ही इसको मुसलमानों का गुलाम बनना पड़ा था।

राम के अयोध्या में आते समय स्वर्ण और रत्नों की ऐसी वर्षा करना कि घर घर रत्नों के ढेर लग जावें वा सीताके गर्भवती होने पर सीता की तरफ से भण्डारी को यह आज्ञा जारी होना कि जो कोई जो कुछ मागे उसको वह ही दान दो, द्रव्य लुटाने के यह दो दोनों तरीके जैनसिद्धान्त के अनुसार किसी प्रकार भी दान नहीं हो सकते हैं बल्कि दान की प्रथा को नष्ट भ्रष्ट करके द्रव्य का दुरुपयोग सिखाने वाले हैं, जैनधर्म में तो दान करुणा से वा भक्ति से हो दिया जाता है, दुखिया पर करुणा होती है और मुनि वा श्रावक पर भक्ति, परन्तु कथा-ग्रन्थों के ऐसे २ कथनो से प्रेरित होकर दुखियाओं पर करुणा करना वा पात्र की भक्ति करना तो बिल्कुल

छूटता जाता है और विवाह शादी के समय बहू के डोले पर वा बूढ़े मां बाप के मर-जाने पर उसके विमान पर रुपये पैसों का खूब बखेर की जाती है और इस प्रकार अपने द्रव्य को नष्ट करके वह द्रव्यदान में लगा देना समझा जाता है, इस ही प्रकार और भी अनेक रीतियां प्रचलित होरही हैं जिनके द्वारा रुपये को बरबाद करके दान करना समझा जारहा है और असली दान का द्वार बिल्कुल बन्द होरहा है और यह सब इन कथाग्रन्थों के ऐसे कथनोंसे ही होरहा है और जैनकथा ग्रन्थोंमें यह सब कथन हिन्दूग्रन्थों की रीस करके ही लिखा गया है।

सीता के पुत्रों का जन्म और उनकी पालना।

रामायण का कथन है कि सीता ऋषि के आश्रम में बहुत अच्छी तरह से रहती रही वहीं उसके लव और कुश नाम के दो पुत्र जन्मे, वहीं वह पले और वहीं उन्होंने सर्व प्रकार की विद्या सीखी और फिर वह वाल्मीक की आज्ञा से राम के दर्बार में गये और वहां वाल्मीक रामायण सुनाई और आखिर को वाल्मीक ऋषि ने राम को बताया कि यह दोनों तुम्हारे पुत्र हैं।

पद्मपुराण का कथन है कि जिस वन में सीता छोड़ी गई थी वहां अकस्मात् पुंडरीकपुर का राजा वज्रजंघ हाथी पकड़ने के वास्ते आनिकला और वह दया करके सीता को अपनी बहिन बनाकर अपने साथ लेगया और बड़ी खातिरदारी से रखी, वहीं उसके अनङ्गलवण और मदनाकुश नाम के दो पुत्र जन्मे वहीं वह पले और वहीं सिद्धार्थ नाम के एक महाज्ञानी और ऋद्धिधारी क्षुल्लक ने उन दोनों को शस्त्र और शास्त्र विद्या सिखाई।

महापुराण में सीता को घर से निकाल देने आदि का कोई कथन नहीं है और विजयराम आदिक उसके आठ पुत्रों का होना वर्णन किया है।

नोट।

रामायण में सीता के इन दोनों पुत्रों का नाम लव और कुश रखने का कारण यह बताया है कि वाल्मीक ऋषिने इनका जन्म सुनते ही भूत आदिक से इनकी रक्षा करने के वास्ते एक मुट्ठी कुश लेकर उसके दो टुकड़े किये जो ऊपर का भाग अर्थात् नोक की तरफ का भाग था वह कुश था इस वास्ते उस भाग से जिस बालक को

मन्त्रित किया उसका नाम कुश रखा और लव अर्थात् जड़ की तरफ के भाग से जिसको मन्त्रित किया उसका नाम लव रखा।

परन्तु पद्मपुराण में उनका यह नाम रखने का कोई कारण नहीं बताया गया है, अनङ्गलवण और मदनांकुश यह नाम भी अनोखे ही हैं, मालूम होता है कि रामायण के लव और कुश को ही बदलकर पद्मपुराण में यह नाम वर्णन किये गये हैं, पद्मपुराण में यह सारा कथन रामायण से ही लिया गया है इसका सबसे मजबूत सबूत यह है कि जिस प्रकार रामायण में बाल्मीक ऋषि द्वारा इन बालकों को शस्त्र और शास्त्रविद्या सीखने का कथन किया गया है उस ही तरह पद्मपुराण में ग्यारहवीं प्रतिमाधारी एक ज्ञानी और ऋद्धिधारी छुल्लक द्वारा ही इन बालकों को शस्त्र और शास्त्रविद्या के सिखाये जाने का कथन कर दिया गया है और यह विचार नही किया है कि हिन्दू ऋषियों की तो वृत्ति ही ऐसी विलक्षण होती है जिससे वह शस्त्रविद्या भी सिखा सकते हैं परन्तु जैन छुल्लक के द्वारा तो ऐसा होना बिल्कुल ही असम्भव है।

लवण और अंकुश का विवाह।

पद्मपुराण के कथनानुसार जब लवण और अङ्कुश जवान हुए तो राजा वज्रजन्घ को उनके विवाह की फिक्र हुई, उसने अपनी कन्या शशिचूला तो ३२ अन्य कन्याओं के साथ लवण को देनी चाही और राजा पृथु की कन्या अङ्कुश के वास्ते मांगी परन्तु राजा पृथु ने इस कारण कन्या देने से इन्कार कर दिया कि यह बालक अनजान हैं इनके वंश और कुल आदि का कुछ पता नहीं है, इसपर वज्रजन्घ ने उसपर चढ़ाई कर दी, खूब युद्ध हुआ, राजा पृथु हारकर भागा, लवण और अङ्कुश ने कहा कि अब कहां भागता है आ तुझे अपने कुल का पता बतावें, आखिर वह उसकी कन्या लेकर आये, फिर यह दोनों भाई दिग्विजय को चले गये और उन्होंने दूर २ तक के हजारों राजा वश किये।

नोट।

इस कथा पर कोई नोट लिखना फिजूल है क्योंकि कन्याओं को मांगने और न दे तो युद्ध करके लाखों मनुष्यों की हत्या के द्वारा जबरदस्ती कन्याओं के लेने की कथा तो जैनकथा ग्रन्थों की टकसाली कथा हैं जिनसे जैनग्रन्थ भरे पडे हैं और चौथेकाल के घोर अन्धकार और असमानुपता को दरशाते हैं और इस कथामें तो राजा पृथु का इन्कार बहुत ही ठीक था क्योंकि सीता के इन बालकों का कुल और गोत्र जाने बिदून वह अपनी कन्या किस तरह दे देता परन्तु फिर भी उस पर चढाई की गई और

युद्ध करके जबरदस्ती उसकी कन्या लाई गई, जिस काल में ऐसे महाअन्याय होते होंगे उस समय की अशान्ति का क्या ठिकाना होगा।

सीता के पुत्रों का राम से युद्ध।

पद्मपुराण के कथनानुसार एक दिन नारद ने अयोध्या में आकर सेनापति से पूछा कि तू सीता को कहां छोड़ आया, सेनापति ने सब पता बता दिया, नारद खोजता हुआ उस ही वन में पहुंचा जहां सीता छोड़ी गई थी, अकस्मात् उस ही दिन सीता के दोनों पुत्र वन-क्रीड़ा के अर्थ उस वन में आये हुए थे, नारदने उनको आशिष दी कि राम लक्ष्मण के समान तुम्हारी लक्ष्मी हो, उन्होंने पूछा कि राम लक्ष्मण कौन हैं, तब नारदने उनका सब हाल सुनाया, नारद से सब हाल सुनकर इन दोनों कुमारों ने राम लक्ष्मण पर भी चढ़ाई करनेकी तैयारी की क्योंकि यह तो सब ही को जीतकर दिग्विजय करना चाहते थे और यह निश्चय कर बैठे थे कि हमने सबको जीत लिया है, युद्ध की तैयारी सुनकर सीता रोने लगी, कुमारों ने रोने का कारण पूछा, सीता ने कहा कि अपने पिता से ही तुम्हारे युद्ध करने का इरादा सुनकर रोती हूं, तब कुमारों ने माता से पूछा कि हमारा पिता कौन है, सीता ने सब वृतान्त सुनाया और कहा कि तुम राम के पुत्र हो वह बहुत बलवान है, अपने पिता को बलवान सुनकर वह कुमार बहुत खुश हुए परन्तु कहने लगे कि उन्होंने तुमको वनमें तजी यह अच्छा नहीं किया, इस वास्ते हम उनका मान भङ्ग करेंगे, सीता ने बहुतेरा मना किया परन्तु उन्होंने एक न मानी और अयोध्या पर चढ़ाई कर दी।

राम ने भी सुग्रीव और भामण्डल आदि को सहायता के वास्ते बुलाया, नारद और सिद्धार्थ ने भामण्डल को कह दिया कि यह दोनों कुमार तो सीता के पुत्र हैं, इसपर भामंडल सीता से जाकर मिला, आखिर दोनों तरफ की फौज लड़ने को तैयार हुई ग्यारह हज़ार राजा युद्धमें आये, खूब लड़ाई हुई, भामण्डल युद्ध से अलग रहा, हनुमान को भी मालूम होगया कि यह बाप बेटों का युद्ध है इस वास्ते वह भी अलग रहा, दोनों कुमार राम लक्ष्मण को बचाकर शस्त्र चलाते थे तो भी उन्होंने राम लक्ष्मण के बकतर तोड़ डाले और शस्त्र बेकार कर दिये, राम लक्ष्मण इनको वैरी समझ कर इन पर तान तान कर अपने दिव्य अस्त्र चलाते थे परन्तु वह कुछ भी काम नहीं आते थे, आखिर नारद और सिद्धार्थ छुल्लक ने राम को बताया कि यह तो तुम्हारे पुत्र हैं, इसपर तुरन्त ही युद्ध बन्द होगया और आपस में खूब मिलाप हुआ।

नोट ।

यह सब कथन अव्वल से आखिर तक ऐसी बेजोड़ कहानी है जैसी कि छोटे छोटे बच्चे जोड़ लिया करते हैं सीता के बनमें छोड़ने से २०, २५ वर्ष पीछे नारदजी का अयोध्या में आना और सेनापति से पूछना कि तू कहा छोड़ आया फिर इतने वर्ष बीत जाने पर भी उस ही भयङ्कर निर्जन वन में ढूढ़ने जाना मानो अब तक वह वहां रहकर भी जीवित ही रही होगी और फिर बिना कारणही ढूढ़ने जाना और छुल्लक होकर भी ढूढने जाना और जिस दिन नारदजी इस वन में पहुंचे उस ही दिन सीता के पुत्रों का भी उस ही वन में आना और उनको जानने पहिचानने बिदून ही यह आशिष देना कि राम लक्ष्मण जैसी तुम्हारी सम्पदा हो यह सारी बातें बिलकुल बेजोड़ हैं और कहानी का बनावटी होना सिद्ध करती हैं।

कैसे तमाशे की बात है कि सीता के पुत्र जवान भी होगये, हजारों राजाओं को जीत कर दिग्विजय भी कर आये परन्तु आजतक उनको यह मालूम न हुआ कि हमारे पिता कौन हैं कहा रहते हैं और क्या करते हैं और सबसे विशेष बात यह है कि राजा पृथु ने इनको अपनी कन्या इस ही कारण देने से इन्कार कर दिया कि इनका कुल और गोत्र आदिक का कुछ पता नहीं है, इसपर इन्होंने राजा पृथु पर चढ़ाई भी कर दी और क्रोध करके राजा को धमकाया भी कि आ तुझे अपना कुल और वंश बतावें परन्तु तब भी अपने को यह मालूम न हुआ कि हमारे पिता कौन हैं और कहां के राजा हैं, ऐसी कहानियां भी यदि बच्चों की कहानियां नहीं हैं तो और क्या हैं।

इस कथामें तो इससे भी ज्यादा तमाशा यह है कि नारदके द्वारा राम लक्ष्मण का सब हाल मालूम होने पर भी उनको यह मालूम न हुआ कि वह हमारे पिता हैं बल्कि जब सीता ने कहा कि तुम अपने पिता से युद्ध करने जाते हो तब उन्होंने पूछा कि हमारे पिता कौन हैं और तब ही सीता के बताने पर उनको यह मालूम हुआ कि राम हमारे पिता हैं इसके अलावा क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इन कुमारों ने दिग्विजय करके दूर दूर देश के हजारों राजाओं को जीत लिया है और समझ बैठे कि हम सब कुछ जीत चुके हैं परन्तु रामचन्द्र, भामण्डल हनुमान और सुग्रीव आदिक जिनका अब बाप बेटों के युद्ध में काम पड़ा है उनमें से किसी का नाम तक भी न जाना।

फिर जब भामण्डल और हनुमान आदिक को यह मालूम होगया कि यह दोनों कुमार राम के बेटे हैं तो उन्होंने वा नारद और सिद्धार्थ आदि छुल्लक महाराजों ने युद्ध से पहिले ही राम से यह क्यों न कह दिया कि यह तो तुम्हारे पुत्र हैं जिससे

लाखों और करोड़ों मनुष्यों की हिंसा तो बचती, इससे स्पष्ट सिद्ध है कि कथा का जोड़ बिलकुल भी नहीं मिल सक्ता है और कहानी बिलकुल बेतुकी ही रही है।

सीता का अग्नि कुण्ड में प्रवेश।

रामायण का कथन है कि लव और कुश से बाल्मीकि रामायाण सुनकर जब राम को यह मालूम हुआ कि यह दोनों हमारे ही पुत्र हैं तब राम ने कहा कि सीता सबके सामने आकर अपनी शुद्धताई सिद्ध करे, अगले दिन सब लोग इकट्ठे हुये, बाल्मीकजी सीता को लेकर आये, बाल्मीकजी ने कसम खाई कि सीता शुद्ध है, फिर देवता भी सभामें आये, उन्होंने भी कहा कि सीता शुद्ध है, फिर सीताने कहा कि अगर हमने मनसे भी कभी पर पुरुष का विचार किया हो तो पृथिवी फट जाय और हम उसमें समा जावें, और यदि हम शुद्ध हों तो पृथिवी हम को विवर देवे, तब ही पृथिवी में से एक दिव्य सिंहासन निकला जिसको नाग उठाये हुये थे, पृथिवी देवी ने सीता को उसपर बिठाया और फिर वह सीता सिंहासन समेत पृथिवी में प्रवेश कर गई, इसपर राम ने धरती से कहा कि या तो सीता को निकाल दो या हमको भी विवर में ले चलो, यदि ऐसा नहीं करोगी तो हम सारी पृथिवी का नाश कर देंगे तब ब्रह्माजी आये और राम को समझाया कि सीता धरती से ही पैदा हुई थी और धरती में ही समा गई है, तुम इस बात पर क्रोध मत करो।

पद्मपुराण का कथन है कि युद्ध बन्द होने पर विभीषण सुग्रीव और हनुमान आदि ने रामसे सीताको घर ले आने की प्रार्थना करी, रामने कहा कि मैंने अपवाद के कारण सीता को निकाला था इसवास्ते जब तक वह अपवाद दूर न हो तब तक मैं उसको घरमें किस तरह रखूं इस वास्ते यदि सीता सबके सामने दिव्य लेकर शुद्ध होवे तब ही वह मेरे घर में आ सकेती है इस पर सीता अयोध्या गई राम के सामने गई, रामने कहा कि तू परे चली जा मैं तुझे देखना नहीं चाहता हूं क्योंकि तू बहुत दिनों तक रावणके यहां रही है, सीताने कहा कि तुमने मुझ गर्भिणीको भयानक वन में छोडा, यदि छोड़ना ही था तो आर्यकाओं के पास भेज देते, रामने कहा कि मैं भली भांति जानता हूं कि तू निर्दोष है परन्तु यह जगत् के लोग कुटिल स्वभाव के है, इन्होंने वृथा ही तुम्हारा अपवाद किया है परन्तु अब तू वह काम कर जिससे उनका सन्देह दूर हो, सीता ने कहा कि जगत् में जितने दिव्य (अचम्भे की बातें) हैं वह सब करने को तैयार हूं, ज़हर खाने को मैं तैयार हूं, अग्नि में पडने को मैं तैयार हूं और जो तुम कहो उसके करने को तैयार हूं, तब राम ने सोचकर कहा कि अग्नि-कुण्ड में प्रवेश करो, सीता ने यह बात खुशी से मंजूर कर ली।

नारद विचारने लगा कि यद्यपि सीता महासती है परन्तु अग्नि का क्या विश्वास वह तो जलावेगी ही, इस ही तरह भामण्डल और लवण और अंकुश आदिक ने भी यह ही विचार किया और बहुत घबराये, सिद्धार्थ छुल्लकने कहा कि मैं अपनी ऋद्धि के बल से सुमेरु पर्वत पर जिनवन्दना को जाया करता हूं मैं हर जगह मुनियों से यह ही सुनता हूं कि सीता महासती है, इस वास्ते सीता को अग्नि में प्रवेश करने की आज्ञा मत दो, और भी सब लोग यह ही बात कहने लगे, परन्तु रामने एक न मानी और एक बहुत बडा गढा खुदवाकर अग्नि जलाने का हुक्म दिया, उस ही रात को श्रीसकल भूषण मुनिको केवल ज्ञान हुआ था, अनेक देव, सिंह, बघेरा, मेंढ़ा आदि पशुओं और पक्षियों पर चढ़कर आये थे, अग्निकुण्ड तैयार होता हुआ देखकर एक देव ने इन्द्र से कहा कि सीता महासती को यह उपसर्ग आया है, तब इन्द्र ने उस को ही उस उपसर्ग के दूर करने की आज्ञा दी, जब अग्निकुण्ड तैयार होगया तो रामने भी विचार किया कि यद्यपि सीता महा शीलवती है परन्तु वह तो अग्नि के स्पर्श से ही भस्म हो जावेगी।

ऐसा विचार आने पर भी रामने सीता को अग्निकुण्ड में प्रवेश करने से नहीं रोका, सीता ने अरिहन्त सिद्ध का ध्यान करके सब जीवों से क्षमा कराकर कहा कि यदि मैंने मन से वचन से वा काया से सुपने में भी परपुरुष का खयाल किया हो तो अग्नि मुझे भस्म करियो और यदि मैं सती हूं तो भस्म न करियो, ऐसा कहकर और नमस्कार मन्त्र को जपकर वह आग में घुस गई, उस ही वक्त देव की माया से वह अग्नि शीतल होगई और वहां एक वापिका बन गई जिसमें कमल खिल गये वहा अग्नि वा ईंधन कुछ भी न रहा, वह जल बढते २ लोगोंके कण्ठ तक आगया और शिर के भी ऊपर को चलने लगा तब सब लोग बहुत घबराये और पुकारने लगे कि हे देवी! हमारी रक्षा कर और हमको बचा, तब जल उतरा और लोग बचे, देवों ने एक सहस्र दल कमल पर सिंहासन बनाया उसपर सीता को बिठाया, अनेक देवों ने आकाश से फूलों की वर्षा की बाजे बजाये और धन्यवाद कहने लगे, लवण और अंकुश जल में घुसकर माता के पास गये, राम भी गये और कहा कि हम पर प्रसन्न होवो फिर हम ऐसा दोष न करेंगे, सीताने कहा कि मेरा किसी पर भी कोप नहीं है, परन्तु अब तो मैं दीक्षा लूगी, यह कहकर उसने उस ही वक्त अपने शिर के बाल उपाड़कर राम के आगे डाल दिये और फिर आर्यका के पास जाकर आर्यका होगई।

सीता के दीक्षा लेने पर राम बेहोश होगये और होश आने पर कहने लगे कि इन देवों ने मेरी सीता को क्यों हर लिया है अगर यह मेरी सीता को वापिस नही

देंगे तो मैं इन से लड़ूंगा, लक्ष्मण ने बहुतेरा समझाया परन्तु कुछ भी असर न हुआ बल्कि क्रोध में भरकर वह केवली भगवान की तरफ चले परन्तु भगवान की गन्ध-कुटी को देखते ही शान्त होगया।

महापुराण के अनुसार सीता को न घर से त्यागी न उसकी अग्नि परीक्षा हुई बल्कि सीता उस समय आर्यका हुई जब रामने दीक्षा ली।

नोट।

रामायण के अनुसार तो जैसा कि हम पीछे लिख आये, लङ्का में रावण को मारने पर ही जब सीता राम के पास आई थी तब ही राम ने उसपर शंका की थी, और वह अपने को निर्दोष सिद्ध करने के वास्ते अग्नि की चिता में घुस गई थी और अग्निदेव उसको उस चिता में से जिन्दा निकाल लाये थे, परन्तु पद्मपुराण में अग्नि में प्रवेश करने का यह कथन अब इस समय वर्णन किया है जो बिल्कुल ही बेजोड़ है क्योंकि हिन्दू तो अग्नि को देवता मानते हैं उस ही देवता के भरोसे पर वाल्मीक ने रामायण में सीता के अग्नि में प्रवेश करने का और अग्निदेव के द्वारा उसके जिन्दा निकल आने का कथन कर दिया है परन्तु यहां जैनग्रन्थ में तो साफ यह लिखा है कि रामचन्द्र, हनुमान, नारद और भामण्डल आदि सब ही को यह निश्चय था कि सीता निर्दोष होने पर भी अग्नि में प्रवेश होकर भस्म होने से नहीं बच सकती है, क्योंकि अग्नि तो पुद्गल पदार्थ है जिसका स्वभाव ही जलाने का है, वह तो दोषी को भी जला देती है और निर्दोषीको भी, इस वास्ते किसीके दोषी वा निर्दोषी होनेकी परीक्षा करनेके वास्ते जैनियोंमें यह परीक्षा अग्नि प्रवेश कराने के द्वारा नहीं हो सकती है।

चुनांचि पद्मपुराण के कथन के अनुसार भी राम और नारद आदि सबही यह बात जानते थे कि इससे सीता के निर्दोष होने की परीक्षा नहीं होगी क्योंकि वह निर्दोष होने पर भी भस्म हो जावेगी, इससे स्पष्ट सिद्ध है कि अग्नि में प्रवेश कराकर परीक्षा करने का यह कथन किसी तरह भी जैन कथन नहीं हो सकता है बल्कि साफ तौर पर यह कथन रामायण से ही लिया गया है और जैनग्रन्थ में बिल्कुल ऊपरा मालूम होता है, यहां तक कि पद्मपुराण के कथन के अनुसार जब स्वयम् राम को भी यह निश्चय था कि सीता निर्दोष होने पर भी भस्म हो जावेगी तो मानो राम ने सीता को अग्नि में प्रवेश कराकर उसकी परीक्षा नहीं करानी चाहिये थी बल्कि निश्चय रूप उसको अग्नि में भस्म कराकर मूर्ख लोगों में यह प्रसिद्ध कराना चाहा था कि वह वास्तव में दोषी ही थी, परन्तु सीता को निर्दोष जानते हुए भी उसको अग्नि में भस्म करके इस प्रकार बदनाम करने की इच्छा रामचन्द्र की किसी

तरह भी नही हो सकती थी, जिससे साफ तौरपर यह बात सिद्ध होती है कि अग्नि के द्वारा परीक्षा करने का यह कथन किसी तरह भी पद्मपुराण में नही खप सकता है और बिल्कुल ही ओपरा मालूम होरहा है।

पद्मपुराण के कथनानुसार यह तो एक आकस्मिक बात थी कि उस ही दिन एक मुनि महाराज को केवलज्ञान होगया और उनकी बन्दना को देव आये और एक देव को सीताकी रक्षा का खयाल आया, यदि इस प्रकार देवों का आना न होता तो बेचारी निर्दोष सीता की किसी भी प्रकार रक्षा न होती और वह अवश्य ही भस्म होजाती, इसके अलावा देव द्वारा इस प्रकार उसकी रक्षा का जो कथन किया गया है और अग्नि का तुरन्त ही जल में परिवर्तन होजाना जो पद्मपुराण में वर्णन किया गया है वह भी वस्तु स्वभाव के विरुद्ध और अप्राकृतिक ही है जो जैनग्रन्थ में शोभा नही देता है, और इस कथन में तो पानी के प्रवाह का इतना बढ़ जाना कि लोगों के शिर के ऊपर तक चढ़ जावे और वही पानी में ही सीता का अपने केश उपाड कर राम के आगे फेंक देना ऐसा कथन है जो नाटक के तमाशों में ही देखने में आ सकता है, इस कथन में यदि यह कहा जाता कि सीता ने आर्यका के पास जाकर आर्यका होते समय केशलोच किया तब तो यह बात कुछ ठीक भी बैठती परन्तु यहां तो आर्यका के पास जाने से पहिले पानी में घुसे घुसे ही सब से पहले केशलोच करके बालों को राम के सामने रख देने का कथन कर दिया है जो बिलकुल बनावटी मालूम होता है।

सीता के आर्यका होजाने पर राम का देवों पर अति क्रोध करना और केवली भगवान की तरफ क्रोध में भरे हुये जाना भी बिल्कुल नाटकी कथन है और रामचन्द्र जैसे महापराक्रमी और तद्भव मोक्षगामी पुरुषों को बदनाम करने वाला है और स्वयम् पद्मपुराण के ही कथन से असम्भव मालूम होता है क्योंकि जिस रामचन्द्र ने सिर्फ अयोध्या के लोगों को खुश करने के लिये सीता को बिलकुल निर्दोष जानकर भी और यह जानते हुए भी कि दो बालक उसके गर्भ में हैं उसको बिल्कुल अकेली महाभयानक बनमें छोडी यद्यपि उसको आर्य्यकाओं आदि के पास छोड देने से भी अयोध्या के लोगों को सन्तोष हो सकता था क्योंकि जब अयोध्या के लोगों को यह मालूम हुआ था कि सीता एक भयानक जङ्गल में छोडी गई है तो वह लोग इतने रोये थे कि उनके आसुओं के पानीसे अयोध्या की गली २ में कीच होगया था और जिस रामचन्द्र ने यह जानते हुए भी कि सीता निर्दोष है और अग्नि में अवश्य भस्म होजावेगी उसको अग्निकुण्ड में प्रवेश होजाने की आज्ञा दी तो यह कैसे सम्भव है कि

देवों की कृपा से उस ही सीता के ज़िन्दा बच जाने पर और उसके आर्यका होजाने पर वह ही राम देवों से लड़ने को तैयार होजाता वास्तव में तो राम जैसे महा पराक्रमी और ज्ञानी पुरुष तो ऐसे कृत्य क्या करते बल्कि बहुत मामूली आदमी भी नहीं कर सकता है और यदि वास्तव में यह कथन सत्य ही है तो सतयुग को बहुत बदनाम करने वाला और कथा सुनने वालोंके सामने एक बहुत ही बुरा दृष्टान्त उपस्थित करके उनको मूर्खता का पाठ पढ़ाने वाला है।

परन्तु असल बात तो यह है कि पद्मपुराण का यह कथन रामायण के उस कथन के बदले में लिखा गया है जहां रामायण में लिखा है कि सीता के धरती में समा जाने पर राम ने क्रोध करके धरती से कहा कि या तो सीता को निकाल दो नहीं तो हम सारी पृथिवी का नाश कर देंगे, फिर ब्रह्माजी के आने और समझाने से ही राम का यह क्रोध शान्ति हुआ था, रामायण के इस कथन के बदले में ही पद्मपुराण में राम का क्रोध उन देवों पर दिखाया गया है जिन्होंने सीता को अग्नि में भस्म होने से बचाया, इस ही तरह ब्रह्माजी की जगह केवलज्ञानी भगवान की गन्धकुटीके पास जाने से रामका शान्ति होना वर्णन किया गया है, ग़रज चाहे बात ठीक बैठे या न बैठे परन्तु पद्मपुराणमें रामायण के ही कथनों का अनुकरण किया गया है।

सीता को मिथ्या अपवाद लगने का कारण।

पद्मपुराण के कथनानुसार श्रीकेवली भगवान से पूछने पर सीता को झूंठा अपवाद लगने का कारण यह मालूम हुआ कि पूर्वभव में जब सीता वेदवती नाम की कन्या थी तब एक समय एक मुनि के पास उनकी बहिन जो आर्यका होगई थी बैठी हुई धर्म सुन रही थी, वेदवती स्त्री को मुनिके पास बैठी देखकर मुनि की निन्दा की कि मैंने मुनिको एक अकेली स्त्री के पास बैठे देखा, जब मुनि को यह बात मालूम हुई तो मुनि ने नियम किया कि यह झूंठा अपवाद दूर होगा तब ही अहार करूंगा, इस पर नगर के देवता ने वेदवती के शिर आकर उसके ही मुंह से नगर के लोगों को यह कहलाया कि मैंने झूंठा अपवाद किया यह तो बहिन भाई थे, फिर वेदवती ने मुनि के पास जाकर क्षमा मांगी, इस प्रकार सीता ने पूर्वभव में मुनि का अपवाद किया था इस वास्ते इस भव में सीता का अपवाद हुआ और उसने मुनि के पास जाकर क्षमा मांग ली थी इस वास्ते वह अपराध दूर हुआ।

नोट।

यह कथा जैनधर्म के विरुद्ध और बनावटी है क्योंकि जब कोई मुनि होगया तो

फिर उसका किसी से भी बहिन और भाई का सम्बन्ध नहीं रहा, बल्कि सब ही स्त्रियां उसके वास्ते समान होगई, इस वास्ते किसी स्त्री को मुनि की बहिन होने के कारण मुनि के पास एकान्त में बैठने का अधिकार नहीं हो सकता है, इसके अलावा जैन मुनियों को तो अपनी निन्दा वा स्तुति की तरफ कुछ भी ध्यान नहीं होता है इस वास्ते किसी जैन मुनि की बाबत यह कहना कि उसने अपनी निन्दा से दुखी होकर आहार छोड दिया और यदि निन्दा दूर न हो तो बिना खाये मर रहने अर्थात् अपघात करने का इरादा किया तो वास्तव में यह जैन मुनियों और जैनधर्म की निन्दा करना है, फिर नगर देवता का जबरदस्ती वेदवती से यह कहलवाना कि मैंने झूठ कहा बल्कि वेदवती के मुख से स्वयम् नगर देवता का ऐसा कहना बिल्कुल ही एक खेल और बच्चों वाली बात है, और इस प्रकार एकबार अनजान में मुनि का अपवाद करने से सीता का अपवाद होना और उसका भयानक जङ्गल में छोडा जाना और मुनि से क्षमा मांग लेने के कारण ही उसका अपवाद दूर होजाना वास्तव में जैनधर्म के कर्म सिद्धान्त का मखौल उडाना है क्योंकि इसके अर्थ साफ़ तौर पर यह ही होते हैं कि मुनि का अपवाद करने से जो पापबन्ध सीता को हुआ उस पाप ने ही अयोध्या के लोगों को उकसाया कि वह सीता का अपवाद करें और राम से जाकर इस बातकी शिकायत करें परन्तु ऐसा कहना सर्वथा जैन सिद्धान्त के विरुद्ध है इस वास्ते यह कथा भी ठीक नहीं बैठी है।

लवण और अंकुश के पूर्वभव।

पद्मपुराण के कथनानुसार श्रीकेवली महाराज ने लवण और अंकुश के पूर्वभव इस प्रकार बताये कि एक राजा रतिवर्धन के मन्त्री की स्त्री राजा से भोग करना चाहती थी परन्तु राजा मंज़ूर नहीं करता था उस स्त्रीने राजा से यहां तक कहा कि मन्त्री तुमको मार डालना चाहता है परन्तु राजा ने उसकी यह बात भी न मानी तब उस स्त्री ने मन्त्री को भड़काया कि राजा मुझे लिया चाहता है, मन्त्री ने रातको राजा के महल में आग लगा दी, राजा सुरङ्ग के रास्ते से अपने दोनों पुत्रों और स्त्री सहित निकल गया और काशी के राजा के पास पहुंचा, इधर मन्त्री राजा होगया और काशी के राजा को भी अपना सेवक बनाने के वास्ते उस पर चढ़ाई कर दी, काशी के राजा ने उसकी फौज में खबर कर दी कि तुम्हारा असल राजा जिन्दा है और यहां काशी में मौजूद है, यह सुनकर सारी फौज मन्त्रीके खिलाफ होकर असली राजासे जा मिली, मन्त्री पकडा गया राजाको फिर राज्य मिला, मन्त्रीकी स्त्री मिथ्या

तप करके राक्षसी हुई, राजा मुनि होगया राक्षसी ने उस पर उपसर्ग किया, राजा के दोनों बेटे भी मुनि होकर स्वर्ग गये और वहां से आकर लवण और अंकुश हुए।

नोट।

कैसे अफसोस की बात है कि पद्मपुराण के अनुसार तो सतयुग की कोई भी कथा कामकथा से खाली नहीं निकलती है, परन्तु सतयुग की ऐसी गिरी हुई दशा नहीं हो सकती इसमें यह कथा ही बनावटी और कामरस दिखाने के वास्ते ही कही गई मालूम होती है बलिक इस कथा से तो हमको यह भी सन्देह होता है कि सीता के अपवाद के विषय में मुनि की निन्दा होने की जो कथा कही गई है वह भी कामरस के वास्ते ही कही गई है।

मधु केटभ का चरित्र।

पद्मपुराण के कथनानुसार सीता ने आर्य्यका होकर महाघोर तप किया और मरकर १६वें स्वर्ग का प्रतीन्द्र हुआ अर्थात् स्त्री के बदले पुरुष होकर लाखों करोड़ों अर्थों सङ्खों वर्षों तक अति सुन्दर हजारों देवाङ्गनाओं के साथ भोग भोगे, पद्मपुराण में लिखा है कि गौतमस्वामी के इतना कथन करने पर राजा श्रेणिक ने पूछा कि उस समय १६वें स्वर्ग का इन्द्र कौन था, गौतम स्वामीने कहा कि केटभ के भाई राजा मधु का जीव इन्द्र था, तब राजा श्रेणिक ने मधु केटभ का चरित्र पूछा और गौतम स्वामी ने इस तरह पर बयान किया कि—

एक सोमदेव ब्राह्मण था अग्निला जिसकी स्त्री और अग्निभूत और वायुभूत दो पुत्र थे, इन दोनों को अपनी विद्या का बड़ा भारी घमण्ड था, एक दिन मुनियों का सङ्घ आया, यह दोनों भाई मुनियों से बाद करने को चले, मार्ग में सात्विक नाम के एक मुनि ने कहा कि तुम हमसे ही बाद करो और बताओ कि तुम किस जन्म से आये हो, उन्होंने कहा कि यह बात तो कोई भी नहीं जानता है, तब मुनि ने कहा कि हम जानते हैं, पहिले तुम दोनों इस ही वन में गीदड़ थे, एक ब्राह्मण खेती करता था, कई दिन बारिश होती रहने के कारण वह खेत पर न जासका, उसके पीछे इन गीदड़ों ने उसका चाम का सांटा आदिक जो वह खेत में छोड़ आया था खा लिया जिससे मरकर तुम सोमदेव के यहां दोनों भाई पैदा हुए, वर्षा बन्द होने पर जब वह ब्राह्मण खेत पर गया तो उसने मरे हुए गीदड़ों का चाम लेकर भाथड़ी बनाई जो अबतक उसके घर में मौजूद है, मुनि के कहने से लोगों ने जाकर वह चाम देखा और उन दोनों ब्राह्मण पुत्रों की हँसी उड़ाने लगे कि तुम तो पूर्वभव में गीदड़ थे, यह दोनों

ब्राह्मण पुत्र रात को मुनि के मारने को आये और तलवार निकालकर मारने लगे, तब ही वन के रक्षक यक्षदेव ने इन दोनों को कील दिया, सुवह को लोगों ने इनको बहुत धिक्कारा, इनके माता पिता ने आकर मुनि की बहुत विनती करी, मुनिने यक्ष से कह-कर इन दोनों को छुड़वाया, दोनोंने श्रावकके व्रत लिये, इनके माता पिता ने भी लिये; परन्तु इनके माता पिता ने तो घर जाकर व्रत छोड दिये और मरकर नरक गये परन्तु इन दोनों ने व्रत पाले और स्वर्ग गये, वहां से आकर सेठ पुत्र हुए फिर श्रावक के व्रत, धारे और स्वर्ग गये, वहां से फिर अयोध्याके राजाके पुत्र मधु कैटभ हुए और इन्होंने सारी पृथिवी वश करी।

एकवार राजा भीम ने वटपुर के राजा वीरसेन का राज उजाड़ा, वीरसेन मधु-कैटभ का सेवक था इस वास्ते राजा मधु ने भीम पर चढ़ाई करी और रास्ते में वीर-सेन के यहां ठहरा और वीरसेन की स्त्री चन्द्राभा को देखकर उसपर आशक्त होगया, फिर भीम को जीतकर और घर आकर उत्सव मनाया, अनेक राजा बुलाये, वीरसेन को भी उसकी स्त्री सहित बुलाया, फिर सबको विदा कर किसी बहानेसे चन्द्राभा को रोक लिया और उसको अपनी पटरानी बना लिया, राजा वीरसेन स्त्री के शोक में पागल होगया, फिर वह मिथ्यात्वी तापसी हुआ, एक दिन एक परस्त्रीगामी का न्याय राजा के पास आया राजाने कहा कि इसको भारी दण्ड दिया जावेगा, चन्द्राभा ने हँसकर राजा से कहा कि परस्त्रीगामी की तो बहुत इज्जत होनी चाहिये - क्योंकि तुम भी परस्त्रीगामी हो, इस बात से राजा को वैराग्य आया और वह मुनि होगया, रानी चन्द्राभा आर्यका हुई मधु का भाई कैटभ भी मुनि हुआ, मधु मरकर सोलहवें स्वर्ग का इन्द्र हुआ और कैटभ पन्द्रवें स्वर्ग का, आगे को मधु का जीव तो कृष्ण का बेटा प्रद्युम्न होगा और कैटभ का जीव उसका भाई शम्भ होगा।

नोट।

इस कथा को पढकर पाठकों को बड़ा आश्चर्य्य होगा क्योंकि इस कथा को तो पद्मपुराण से कोई भी सम्बन्ध नही है इस वास्ते राजा श्रेणिक के पूछने पर गौ-तम स्वामी ने चाहे हजार कथा कही हों परन्तु पद्मपुराण में तो वह ही लिखनी चा-हिये थीं जो उससे सम्बन्ध रखती हों और इस कथा से पद्मपुराण का कुछ सम्बन्ध न मिलने पर पाठकगण यह ही विचार करेंगे कि अन्य मतिओं की बुराई और अपनी प्रशंसा करने और सतयुग के स्वर्गगामी पुरुषों की एक और कामकथा लिखकर इस ग्रन्थ को सुशोभित करने के वास्ते ही यह कथा पद्मपुराण में घुसेड दी गई है परन्तु

इस कथा के लिखने का केवल यह ही कारण नहीं है बल्कि यह पद्मपुराण वाल्मीक रामायण से ही बनाया जाने के कारण इस मौके पर रामायण में भी मधु कैटभ का कथन आनेसे पद्मपुराणमें भी किसी न किसी तरकीब से मधु कैटभ की यह रसिक कथा वर्णन की गई है, परन्तु रामायण में वा अन्य हिन्दू ग्रन्थों में मधु कैटभ का कथन इससे बिल्कुल ही विलक्षण है और पद्मपुराण के कथन से ज़रा भी नहीं मिलता है।

लवण और अंकुश का विवाह।

पद्मपुराण के कथन के अनुसार कांचन नगर के राजा की दो कन्याओं का स्वयम्बर हुआ, दोनो अति रूपवती थीं, एक ने लवण के गले में वरमाला डाली और दूसरी ने अङ्कुश के गले में, लक्ष्मण के २५० पुत्रों को इस बात से बड़ा क्रोध आया लड़ने को तैयार होगये तब इनके अन्य आठ भाइयों ने इनको समझाकर शान्ति किया उन आठों को वैराग्य आया, मुनि होगये और मोक्ष गये, हनुमान भी मुनि हुआ और मोक्ष गया, उसकी रानियां आर्यका हुई।

नोट।

स्त्री के ऊपर स्वयम्बर में चित्रा तारा के भाइयों में भी लड़ाई होना वा लड़ाई करने का इरादा करना और वह इरादा भी लक्ष्मण जैसे बली के पुत्रों को होना किसी तरह भी सतयुग को शोभा नहीं देता है और किसी प्रकार भी विश्वास के योग्य नहीं हो सकता है।

लक्ष्मण की मृत्यु और राम की दीक्षा।

रामायण का कथन है कि एक दिन काल राम के पास आया और कहा कि सिवाय हमारे और तुम्हारे कोई और न हो तब बात करें, यदि कोई हमारे बीच में आजावे तो उसे मार डालें, राम ने इस बात को मंजूर किया और आप एकान्त में बैठकर लक्ष्मण को पहरे पर बिठा दिया कि किसी को भी हमारे पास मत आने देना, तब काल ने राम से कहा कि आपने रावण को मारने के वास्ते ११ हज़ार वर्ष तक पृथिवी पर रहने को कहा था अब वह वर्ष बीतने वाले हैं इस कारण देवलोक में आपकी याद है, इतने में दुर्वासा ऋषि आये, लक्ष्मण ने ऋषि को राम के पास जाने से रोका, ऋषिने कहा कि राम से तुरन्त ही हमारे आने की खबर करो नहीं तो हम श्राप देंगे और सबको मारेंगे, लक्ष्मण ने सोचा कि सबके मरने के बदले मेरा एक का

मरना अच्छा है इस वास्ते लक्ष्मण ने राम के पास अन्दर जाकर ऋषि के आने की खबर दी, राम ने काल को विदा किया और ऋषि से मिले, ऋषि भोजन लेकर चले गये, फिर राम उस प्रतिज्ञा को याद करके बहुत दुखी हुआ जो उसने कालसे की थी कि एकान्त में बात करते हुए जो कोई हमारे बीच में आवेगा उसको मार डालेंगे, लक्ष्मण ने कहा कि तुम सोच न करो बल्कि अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के वास्ते मुझको मार डालो, रामने मुनियों से सलाह करी, वशिष्ठजी ने कहा कि बेशक लक्ष्मण का परित्याग करो, तब लक्ष्मण ने नदी किनारे जाकर अपना सांस रोक लिया, देवों ने फूल बरसाये और इन्द्र महाराज लक्ष्मण को उस ही शरीर सहित स्वर्ग में लेगये।

पद्मपुराण का कथन है कि एक दिन इन्द्र अपनी सभामें बैठा हुआ कहने लगा कि मैं कब मनुष्य होकर दीक्षा लू, एक देवने कहा कि राम भी स्वर्ग में ऐसा ही कहा करता था परन्तु अब मनुष्य होकर सब भूल गया है, इन्द्र ने कहा कि राम और लक्ष्मण में आपस में बहुत अनुराग है उस वास्ते राम दीक्षा नहीं ले सकता है, इसपर स्वर्ग के दो देव राम लक्ष्मण के अनुराग की परीक्षा लेने को आये और राम के महल में जाकर अपनी माया से स्त्रियों के रोने का शब्द कराया और ऐसी विक्रिया करी जिससे मन्त्री आदिक सबने ही लक्ष्मणसे राम का मरजाना वर्णन किया, इसके सुनते ही लक्ष्मण के प्राण निकल गये, उन दोनों देवों ने लक्ष्मण के ज़िन्दा करने की बहुत कोशिश की परन्तु कुछ न होसका, वह बहुत पछताते हुए स्वर्ग को वापिस चले गये।

लक्ष्मण के मरने पर राम ने बड़ा विलाप किया और यह ही मानता रहा कि लक्ष्मण मरा नहीं है बल्कि बेहोश होगया है, सबने राम को समझाया मगर राम को कुछ भी असर न हुआ, राम लक्ष्मण की लाश को छः महीने तक कांधे पर रक्खे हुए फिरता रहा और दग्ध न करने दिया, राम को इस प्रकार विह्वल देखकर आसपास के राजा चढ़ आये, राम के सेनापति और जटायु के जीव जो उस समय स्वर्ग के देव थे अयोध्या आये, जटायु का जीव तो शत्रुओं की तरफ गया और कामदेव का रूप बनाकर उनको मोहित किया और इधर अयोध्या में अगणित सुभट दिखाये जो किसी से भी जीते न जावें, वैरी की सेना यह बात देखकर घबराई और भाग गई, फिर इन दोनों देवों ने राम के सामने बड़े २ अद्भुत काम किये जिससे राम को सुध आवे, आखिर बड़ी मुश्किल से राम को समझ आई और लक्ष्मण के शरीर का दाह कराया फिर राम मुनि होगया, राम के दीक्षा लेने पर देवों ने पञ्चाश्चर्य्य किये, १६ हजार राजा मुनि हुए, २७ हज़ार रानिया आर्यिका हुई, एक राजा के यहां राम का आहार हुआ उसके यहां भी पञ्चाश्चर्य्य हुए और उसका भोजन अटूट होगया।

महापुराण का कथन है कि लक्ष्मण को स्वप्न आया जिसका फल यह था कि वह बीमार होगा, चुनांचि वह बीमार हुआ और मर गया, उसके मरने पर राम को बहुत दुख होना और बड़ी मुश्किल से साता लेकर दाह संस्कार करना तो महापुराण में लिखा है परन्तु यह नहीं लिखा है कि छः महीने तक वह लाश को कन्धे पर लिये फिरा, महापुराण में यह भी लिखा है कि लक्ष्मण मरकर चौथे नरक गया, महापुराण के अनुसार राम के साथ पांच सौ राजाओं और राम के १८० बेटों ने दीक्षा ली और उसी समय सीता और लक्ष्मण की रानियों आदिक ने दीक्षा ली।

नोट।

शोक है कि महाबुद्धिमान और महापराक्रमी राम को इस कथन में ऐसा महामूर्ख और महानिर्बल हृदय वाला सिद्ध किया है कि ऐसा तो इस निकृष्ट कलिकालमें भी कोई मूर्खसे मूर्ख भी नहीं हो सकता है, इस कथनसे सतयुगके एक तद्भव मोक्षगामी को बदनाम करने और लोगों को संसार के मोह का पाठ पढ़ाने के सिवाय और कोई भी फल नहीं निकलता है चुनांचि इससे बात२में लोगोंको यह बहाना मिल रहा है और उनके मोही हृदय से भी यह ही बात निकलती है कि जब राम जैसे महाबली और चरम शरीरी भी ऐसे मोही होगये हैं कि भाई के मृतक शरीर को छः महीने तक कन्धे पर लिये २ फिरे और दग्ध नहीं करने दिया तो हम जैसे निर्बलों का तो कहना ही क्या है।

परन्तु हमारी समझमें तो छः महीने तक लक्ष्मण की लाश को कन्धे पर लिये फिरने का यह कथन ही असम्भव है और नारायण बलभद्र का मखौल उड़ाने के वास्ते ख्वामख्वाह ही ऐसा कथन किया गया है क्योंकि मृतक शरीर तो दो ही दिन में ऐसा सड़ जाता है कि पास भी खड़ा नहीं हुआ जा सकता, फिर छः महीने तक उसको कन्धे पर लिये २ फिरना तो कैसे हो सकता है, कथाग्रन्थों के पढ़ने से साफ़ मालूम होता है कि यह बात ग्रन्थकार के इख्तियार में है कि वह जब चाहें किसी की प्रशंसा आकाश तक कर दें और जब चाहें उसकी बुराई पाताल तक पहुंचा दें, यह ही बात इस कथन में हुई है, चुनांचि अभी तो राम को ऐसा महामूर्ख बना रखा था कि भाई की लाश को छः महीने तक कांधे पर धरे २ फिरा, और फिर उसके मुनि होते ही उसकी इतनी प्रशंसा करनी शुरू कर दी है कि देवों ने भी पञ्चाश्चर्य्य किये और जिसके यहां राम का प्रथम आहार हुआ उसके यहां भी पञ्चाश्चर्य्य हुए और उसके यहां का भोजन भी अटूट होगया।

भोजन किस सामिग्री से बनता है, वह सामिग्री कैसे बनती है और कहां से प्राप्ति होती है, जब हम प्रकृति के इन नियमों पर ध्यान देंगे तो हमको तुरन्त मालूम हो जावेगा कि भोजन का अटूट होना अर्थात् दो चार वा दस बीस मनुष्यों के खाने योग्य बनाये हुए भोजन का इतना बढ जाना कि चाहे लाख आदमी भी खालें तब भी भोजन खतम न हो यह बात बिल्कुल ही असम्भव है और किसी तरह भी नहीं बन सकती है, हाँ यदि वस्तु स्वभाव को न माना जावे तब तो सब ही कुछ सत्य और सम्भव है।

इन कथामें इन्द्रके कहने का विश्वास करके अवधिज्ञानी देवों का राम लक्ष्मण के स्नेह की परीक्षा लेने आना और राम का मरना दिखाकर केवल लक्ष्मण को ही नहीं बल्कि राम की रानियों, मन्त्रियों और सब ही नगर निवासियों को जो राम से स्नेह रखते होंगे दुखी करके महान् पाप का भागी होना भी एक बच्चों का सा खेल ही मालूम होता है और इसमें कुछ भी वास्तविकता नज़र नहीं आती है, इस ही प्रकार राम के अति विह्वल होजाने पर जब आसपास के राजा लोग चढ आये तब स्वर्ग के दो देवों का आना वैरियों को भगाना भी विश्वास के योग्य नहीं मालूम होता है क्योंकि अपने पूर्वजन्म के सम्बन्धियों और स्नेहियों की लौकिक सहायता के वास्ते यदि स्वर्ग के देव आसका करते तो मनुष्यों के यहां घर २ देवों की ही सहायता दीख पडा करती और यह मध्यलोक ही स्वर्ग होजाता, क्योंकि देवों की आयु सागरों की होती है और प्रायः प्रत्येक मनुष्य के पूर्वजों में सैकडों, हजारों, लाखों पीढी में कोई न कोई तो स्वर्ग गया ही होगा और अब तक स्वर्ग में विद्यमान भी होगा जो अपनी सन्तान की सहायता के वास्ते यहा आ सकता हो, मालूम होता है कि कथा-ग्रन्थों के ऐसे ही ऐसे कथनों से कुल देवताओं की पूजा और श्राद्ध आदि करने का प्रचार हुआ है और अनेक प्रकार का मिथ्यात्व फैला है।

महापुराण के कथन के अनुसार लक्ष्मण का नर्क जाना भी आश्चर्यकारी है और सबसे ज्यादा आश्चर्यकारी बात यह है कि जैनग्रन्थों में सब ही नारायणों का नरक जाना लिखा है परन्तु किस २ पाप के कारण वह नर्क गये यह बात इन पुराणों में बड़े विस्तार के साथ खोलनी चाहिये थी क्योंकि यह ही इन ग्रन्थों के पढ़ने का फायदा है परन्तु शोक है कि यह ही जरूरी बात इन ग्रन्थों में नहीं मिलती हैं।

सीता के जीव का राम का तप डिगाने की कोशिश करना और राम की मुक्ति।

रामायण का कथन है कि लक्ष्मण के मरने पर राम वन को चले, अनेक लोग

साथ चले स्त्रियां भी चलीं, सरयू नदी के किनारे पहुंचे, ब्रह्माजी करोड़ों विमान लेकर आये, आकाशसे फूलोंकी वर्षा हुई, बाजे बजे अप्सराऐं नाचीं और रामचन्द्रजी अपने भाइयों सहित विष्णु तेज में समा गये, वानर लोग अपने देवरूप में चले गये।

पद्मपुराण का कथन है कि सीता महातप करके और संसार से सब प्रकार का मोह छोड़कर और स्त्री पर्याय को छेदकर सोलहवं स्वर्ग का प्रतीन्द्र होगया था, वहां उसने अपने अवधिज्ञान से जाना कि रामचन्द्रजी अपने महानतप और आत्मिक ध्यान से अपने कर्मों का नाश कर रहे हैं, यह जानकर सीताके जीव ने विचार किया कि इनको अपनी देवमाया से मोह पैदा कराना चाहिये जिससे यह मोक्ष में न जाकर स्वर्ग में ही आवें और फिर हम दोनों मिलकर रहें, ऐसा विचारकर सीताके जीव ने अपनी देवमाया से उस वनमें जहां रामचन्द्र तप कर रहे थे वसन्तऋतु रची, वृक्षों पर खूब ही फूल खिलाये और खूब सुहावना समय बनाया, फिर सीता का रूप बनाकर राम के पास आकर बहुत २ प्रीति जिताई और राम को काम उत्पन्न कराने की सब प्रकार कोशिश करी और भी हजारों सुन्दर कन्या बनाई और यह कहकर राम को लुभाना चाहा कि यह सब कन्यायें तुमसे विवाह कराना चाहती हैं, परन्तु राम पर कुछ भी असर न हुआ, आखिर राम को केवलज्ञान प्राप्त हुआ और वह मोक्ष गये।

पद्मपुराण का यह कथन बिलकुल ही असम्भव मालूम होता है और ग्रन्थके अन्त में भी कामरस पैदा करके इस ग्रन्थ को महाकाव्य बनाने के वास्ते ही यह कथन किया गया मालूम होता है क्योंकि जिस सीता ने संसार से मुंह मोड़कर और सर्व प्रकार का मोह तोड़कर ऐसा भारी तप किया था जिसके द्वारा उसकी स्त्री पर्याय भी जाती रही और उसको सोलहवें स्वर्ग के प्रतिइन्द्र का पद मिला वह महा धर्मात्मा सीता कदाचित् भी यह नहीं कर सकती थी कि राम को मोक्ष जाने से रोकने के लिये उनके तप को भ्रष्ट करने की कोशिश करे और हजारों सुन्दर स्त्रियां दिखाकर उनको काम उत्पन्न करावें, हां यदि यह माना जावे कि स्वर्ग में जाने से और वहां लाखों सुन्दर २ देवाङ्गनाओं के साथ आठ पहर कामभोग में ही रत रहने से स्वर्ग के देव अपने पूर्व जन्म के तप और ध्यान, वैराग्य को बिलकुल ही भूल जाते हैं और दूसरों को भी कामभोग में ही लगाने का पाठ सीख लेते हैं तब तो शायद यह बात ठीक भी बैठ जावे, परन्तु ऐसी दशा में जैन ग्रन्थकार सब ही परम वैरागियों और मुनियों को मोक्ष में जाने से पहिले एकबार स्वर्ग में ही क्यों भेजते हैं जहां लाखों, करोड़ों, अर्बों, खर्बों वर्ष तक भोगों में ही डूबा रहना पड़े और आत्मध्यान छोड़कर महामोह और कामवासना का ही पाठ सीखना पड़े।

रावण का आगामी को तीर्थंकर होना।

पद्मपुराण का कथन है कि रावण ने जो यह प्रतिज्ञा लियाही कि परस्त्री को जबरदस्ती सेवन न करूंगा सो वह रावण कई भव धरकर आगे को तीर्थंकर होगा।

नोट।

पद्मपुराण के इस अन्तिम कथन को पढ़कर बहुत ही आश्चर्य होता है क्योंकि स्वयम् पद्मपुराण के कथन के अनुसार ही रावण ने श्रीकेवली भगवान के सामने प्रतिज्ञा लेते वक्त यह विचार किया था कि ऐसी कोई स्त्री ही नहीं हो सकती है जो मुझसे राजी न हो अर्थात् परस्त्रियों से भोग करने का साक्षात् विचार उसको इस प्रतिज्ञा के करते समय भी था और उसको निश्चय था कि इस प्रतिज्ञा के करने से परस्त्री सेवन में किसी प्रकार की भी कोई बाधा मुझको न होगी, इसके सिवाय उसकी यह प्रतिज्ञा और प्रकार भी ऐसी अद्भुत् थी कि सीता से भोग करने के वास्ते उसको जबरदस्ती हर लेजाने से और लङ्का में ले जाकर अपने साथ भोग के लिये राजी करने के वास्ते उसको सब तरह से फुसलाने और महा भयानक डरावे दिखाने पर भी उसकी यह प्रतिज्ञा भङ्ग न हुई, यहां तक कि सीता को जान से मार डालने आदि का डरावा देना भी जबरदस्ती में शामिल न हुआ, उसने अपनी रानी मन्दोदरी को यह निश्चय कराकर कि यदि सीता उससे राजी न हुई तो वह अपने प्राण खोदेगा और मर जावेगा, अपनी १८ हजार रानियों सहित सीता के पास भेजा कि वह सीता को समझा बुझाकर व्यभिचार कराने के वास्ते राजी करें और उन रानियों ने रावण की आज्ञानुसार ऐसे महापाप की कोशिश की भी अर्थात् उन्होंने सीता को समझाया भी जिससे वह सब रानियां कृतकारित अनुमोदना के सिद्धान्त के अनुसार कुशीलरूपी महापाप की दोषी भी होगई और रावण ने सीता को जबरदस्ती अपने यहा रखने और किसी न किसी तरह राजी कर लेने के अभिप्राय से राम से महायुद्ध भी किया जिसमें लाखों करोड़ों मनुष्यों की हिंसा हुई तो भी पद्मपुराण के कथन के अनुसार सीता के साथ जबरदस्ती भोग करने और अपनी अद्भुत् प्रतिज्ञा को निभाने के कारण रावण ने ऐसा महान् पुण्य कमाया जिससे वह आगामी को तीन लोक का नाथ श्रीतीर्थंकर भगवान होगा।

शोक है कि पद्मपुराण के इस कथन को हमारी तुच्छ बुद्धि किसी तरह भी मानने के लिये तय्यार नहीं है बल्कि हम इससे जैनधर्म को बट्टा लगना समझते हैं।

ग्रन्थ के पढ़ने सुनने का फल।

सबसे अन्त में रामायण में लिखा है कि राम का यह चरित्र आयु को बढ़ाने वाला और सौभाग्य का देने वाला है इस वास्ते इसको पूरी श्रद्धा से पढ़ना चाहिये, इस रामायण के एक पाद का पढ़ने वाला भी यदि उसके पुत्र न हो तो पुत्र को प्राप्त करता है और निर्धन हो तो धनवान होजाता है और अज्ञानकृत उसके पाप भी छूट जाते हैं, जो मनुष्य अज्ञान से प्रति दिन भी पाप करता है परन्तु इस रामायण का एक श्लोक भी एकचित्त होकर पढ़ लेता है वह सब पापों से छूट जाता है, इस रामायण के पढ़ने से परलोक मे भी सब सुख मिलते हैं, रामायण के पढ़ने वाले को कभी किसी प्रकार का भी क्लेश नही होता है।

पद्मपुराण में रामायण के इस कथन के मुकाबिले में यह लिखा है कि जो राम की कथा का अभ्यास करे उसके पुण्य की वृद्धि हो, वैरी तलवार हाथ में लिये मारने को आया हो वह भी शान्त होजावे, इस ग्रन्थ के सुनने से धर्म के अर्थी इष्ट धर्म को पावें, यश का अर्थी यश को पावे, जिसका राज्य भ्रष्ट होगया हो वह राज्य पावे इसमें सन्देह नहीं, इष्ट संयोग का अर्थी इष्ट संयोग पावे, धन का अर्थी धन पावे, जीत का अर्थी जीत पावे, स्त्री का अर्थी सुन्दर स्त्री पावे, लाभ का अर्थी लाभ पावे, सुख का अर्थी सुख पावे और किसी का कोई प्यारा परदेश गया हो और उसके आने की सोच हो तो वह सुखसे घर आवे, जो मनमें अभिलाषा हो वह ही पूरी हो सब व्याधि जाती रहें, गांव का देव, नगर का देव, जल का देव राजी होजावे और नवग्रह की बाधा न होवे, क्रूरग्रह सौम्य होजावें और ऐसे पाप जो ख्याल में भी न आवें वह दूर होजावें और सब प्रकार का अकल्याण रामकथा से दूर होवे और जितने मनोर्थ हैं वह सब रामकथा के प्रसाद से पूरे हों।

नोट।

पद्मपुराण के इस अन्तिम कथन पर हम कुछ नोट लिखना नहीं चाहते हैं, पाठक स्वयम् ही इस बात पर विचार करलें कि यह कथन रामायण की रीस से लिखा गया है वा सचमुच यह रामकथा ऐसा ही महामन्त्र है जैसा कि पद्मपुराण के इन अन्तिम वाक्यों मे बताया गया है।

——:समाप्तः——